जैन-सिद्धान्त-भवन-ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एव हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियो की विस्तृत सूची)

भाग-२

प्रस्तवन

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एव जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

सपादन

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान, आरा (बिहार)

सकलन

शशीभूषण त्रिपाठी, M A (सस्कृत)

कविराज दिवाकर ठाकुर, G.A M S (आयुर्वेद)

गु'तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन

भगवान महावीर मार्ग, आरा-८०२३०१

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग–२)

प्रथम सस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)–८०२३०१

मुद्रक

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss Published by Sri D K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.

First Edition - 1987 Price Rs. 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-2

Introduction .
Dr. Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation ·
Shashi Bhushan Tripathi, M.A.(San.)
Kaviraj Diwakar Thakur, G. A. M S. (Aurveda)
Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna

February 29, 1988
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पचवर्षीय योजना के रूप मे इसके छ भाग प्रकाशित करने मे सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धान्त भवन, आरा के ग्रन्थागार मे सग्रहीत सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, कन्नड एव हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाडुलिपियो के आकार, पृष्ठ सख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रथो का सग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थो को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धात भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे २५३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी सयोग जुडते गए जिससे मै यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने मे सफल हुआ हूँ। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमे उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओ की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे है।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं सस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एव आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एव निदेशक सग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी सबधित

अधिकारियो के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन मे उनका सहयोग देश की सास्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य मे भी हमे प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एव जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आगल भाषा मे लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एव कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसस्थान, आरा ने आवश्यकता पडने पर हमे इस प्रकाशन के सम्बन्ध मे बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोही जाने माने विद्वानो का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का सपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे सस्थान मे मानद शोधाकारी के रूप मे भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनो खण्डो के सकलन के सपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा मे एक हजार ग्रथो की ग्यारह कालमो मे विस्तृत सूची तथा प्राकृत एव सस्कृत आदि भाषाओ मे परिषिप्ट के रूप मे सभी ग्रथो के आरम्भ की तथा अत के पदो का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अत मे 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारो एव टीकाकारो की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम सख्या का सकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थो का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक सभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगो से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

अजय कुमार जैन
मत्री
श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,
आरा

ABBREVIATION

V S	—	Vikrama Samvata
D.	—	Devanagari
Stk	—	Sanskrit
Pkt	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhramsa
C	—	Complete
Inc	—	Incomplete

Catg of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg by Lewis Rice M. R A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg of Skt & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by. Rai Bahadur Hiralal B A Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल ।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोष —डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना ।

(३) जै० ग्र० प्र० स० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति सग्रह—प० जुगलकिशोर मुख्तार ।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—बा० पन्नालाल अग्रवाल ।

(६) प्र० स० — प्रशस्ति सग्रह —डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल ।

(७) भ० स० — भट्टारक सम्प्रदाय —विद्याधर जोहरापुरकर ।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भडारो की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान) ।

समर्पण

देवाश्रम परिवार मे

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए है।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा —*सुबोधकुमार जैन*

१४-३-८७

INTRODUCTION
(VOL—I)

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvali* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b* Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1 Serial number, 2 Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4 Name of the author, 5. Name of the commentator. 6 Material, 7 Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10 Condition and age, 11. Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS For instance thirteen MSS of *Drvyasaṁgraha* have been recorded (S Nos 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi version in poetry by some unknown

writer and is incomplete Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas Ms No 223 dated 1721 v s , is with Sanskrit commentary in Prose Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda These details could be seen at a glance as they are presented scientifically

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads . --

1	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3	Nyāyaśāstra	454 to 480
4	Vyākarana	481 to 492
5	Kośa	493 to 501
6	Rasa chanda, Alankāra & Kāvya	502 to 531
7	Jyotiṣa	532 to 550
8	Mantra Karmakānda	551 to 588
9	Āyurveda	589 to 600
10	Stotra	601 to 800
11	Pūjā, Pātha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512)

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgari* script The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below —

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmrtam* (511 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalanka (457) These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī* *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti* Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms The difference of alphabets in different languages is obvious Thus the reference of parential Ms is of great importance (373)

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana Arrah itself MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṁghs, Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas,* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study—*svādhyāya,* and getting the work prepared for his son or relative etc Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas,* or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS This reference is very important from the point of the extent of the Text Many times the author himself indicates the *granthaparimāna.* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each) The *Āptamīmāṁsā Bhāṣya* of Akalanka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahaśrī.* Both works are the commentaries on the *Āptamīmāṁsā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy—aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasaṁkhyānaih.*"

Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvira were reduced to writing counting was done in the form of *Padas* For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas.*

" *āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi* "

(Dhavalā p 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS The remuneration of writing was decided per hundred words For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka. and paper MSS Northern India However the copying work was done on the [illegible]e Ms was not lent by the owner or otherwise was not trans- [illegible]arliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Baṣadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālaya* A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof Heraman Jacobi of Germany, Prof Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915 Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal

The other activity of the publication of *Bibliothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Saṁgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Puruṣārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgari* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*. *Jinavānī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras* During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D) and Aurangzeb (1651-1669 A D) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandāras* As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras* One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties This resulted into two unwanted developments viz 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhandāgama* is now well known It is only one example

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention It is quite a different type of reference work relating to MSS Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntiya Tādapatriya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipnr also deserve mention L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dilli Jina-Grantha-Ratnāvāli* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight His associates also deserve applause for their due assistance I also thank my esteem friend Dr Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jaināgam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान मे इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एव विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बडा सगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थो का सग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान मे श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एव अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यही ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्‌घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वही कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के सवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरो एव गांवो मे सभाओ का आयोजन करके जैन सस्कृति की सुरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावो और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानो पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थी। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० मे ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धात भन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोडीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस मे बडे पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओ का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न सग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने बाबू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एव भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दी।

सन् १६१६ मे स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मत्री निर्वाचित हुए। मत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १६२४ मई मे जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष मे भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रथो का सग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को बाहर के ग्रन्थागारो से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने सग्रह मे रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १६४६ मे बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मत्री चुने गये। ग्यारह वर्षो तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १६५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मत्री पद का भार दिया गया. जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन, भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड गये है, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धात भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १६१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका मे जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एव पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते है। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अक जून अर दिसम्बर मे प्रकट होते है।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमे प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओ पर शोधार्थी कार्य कर रहे है। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पडी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दास जैन कालेज (मगध वि वि.) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे है तथा अनेक पी एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके है।

इस संस्था द्वारा अबतक अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इस संस्था के हस्तलिखित ग्रन्थो के सूचीकरण कार्य मे यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रथावली, का द्वितीय भाग है। इसमे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एव हिन्दी भाषाओ के १०२३ ग्रंथो की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रंथ को प्रथम भाग की तरह दो खंडो मे विभक्त किया गया है। प्रथम खंड मे पाण्डुलिपियो का विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है। दूसरे खण्ड मे परिशिष्ट शीर्षक मे ग्रन्थो के प्रारम्भिक अंश, अन्तिम अंश तथा प्रशस्तियाँ दी गई है। सूची मे आधुनिक पद्धति से ग्रन्थो का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों मे प्रस्तुत है—

(१) क्रम संख्या। (२) ग्रन्थ संख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताडपत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकार सें मी -मे, पत्रसंख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति सख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई हैं।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप मे विषय वार निम्नलिखित शीर्षको के अन्तर्गत विभक्त किया गया है—

(१) पुराण-चरित-कथा।

(२) धर्म दर्शन-आचार।

(३) रस छन्द, अलकार काव्य,।

(४) मंत्र-कर्मकाण्ड,।

(५) आयुर्वेद।

(६) स्तोत्र, (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है, जिनका विषय निर्धारण बिना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नही हो सकता है, उन ग्रन्थो को भी इन्ही शीर्षको के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ६६८ मे १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते है क्योंकि वास्तव मे यह प्राय व्रत-कथाएँ है। ऐसी कथाओ मे पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगो के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एव सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची मे तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुमूल्यक है। क्रम सख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एव पूजा-विधान के ही ग्रथ है। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थो का एक साथ सग्रह होना, अपने आपमे महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक, वैद्यमनोत्सव, योगचिन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रथो की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी है।

अन्य ग्रथागारो मे उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियो के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये है। इसके साथ जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग —१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियो के खोजने मे सहयोगी होगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारो, मदिरो तथा सस्थानो मे हस्तलिखित ग्रन्थो की भरमार है। जो अभी तक अप्रकाशित पड़े हुए है। उन्हे प्रकाश मे लाने की दिशा मे जो प्रयत्न हो रहे है, वे पर्याप्त नही है। विद्वानो, अनुसन्धाताओ, तथा सम्बद्ध सस्थाओ को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने मे डा० गोकुलचद्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियो का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य मे भी सबका निर्देशन एव सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रथावली के सम्पादन, सयोजन मे जो त्रुटियाँ हुई है, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान
आरा (बिहार)

INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī*, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prākrit, Apabhraṁśa and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah*. It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume. In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāṇa-Carita-Kathā, Dharma-Darśana Ācāra etc. This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* (nos 998 to 1026) are the part of *Vrata* or *Pūjā-Vidhāna* and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance. By publication of this volume they have became accessable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions. Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume.

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakāṇḍa* (rituals) have not been given in Jaina religion. A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs- *Stotras-Stuti-Pūjā Pāṭha. Pratiṣṭhā* etc. and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that *Bhakti and Karmakāṇḍa* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kriyākāṇḍa* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasaṁgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text

Some important Prakrit and Apabhraṁśa MSS like Samaya sāra (1165–1168, Pravacanasāra (1158–1160), Satpāhuda (1172–1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i e *Āyurveda* have been mentioned some of which like Aṣṭāṅgahṛdaya of Vāgbhata (1344), Śārangadhara-saṁhitā (1356) o Śāradātilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention

A good number of MSS is related to stotra literature Some of them are close to *tantra* It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīkalpa*, *Jvālāmālinīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue

—Dr Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,
JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. If any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jnānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānhikā Kathā	Jnānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	,, ,,	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāi ,,	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra ,,	—	—
1006	Nga/40/1	,, ,	—	—
1007	Nga/41/Ga	,, ,,	—	—
1008	Nga/47/4/48	,, ,	—	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	17 5×13 5 7 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 3 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 11 16 18	C	Old	
P	D; H Poetry	14 2×9 0 22 9 22	C	Old	
P	D, H. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Good	
P.	D, H, Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pancamī Kaṭhā	Jnānasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	,, ,, ,,	—	—
1012	Ta/12/1	Bhaviṣyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdaśi Kathā	Jnānasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccārinī Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣnī Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	,, ,, ,,	Bhairondāsa	—
1019	Nga/41/ Cha	,, ,, ,,	Jnānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	,, ,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. poetry	23 0×16 7 8 12 29	C	Good	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	O d	
P.	D, H Poetry	24 2×16 0 68 10 30	C	Good 1948 V S	
P	D, H. Poet ry	14 2×9 0 31 9 22	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 11 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	2o 3×17 5 38.14.21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 8 16.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	14 5×11 0 8 13 16	C	Old	
P.	D, H, Poetry	17 5×13 5 7.14 18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākṣaṇī-vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	,, , ,, ,,	—	—
1023	Ta/27/1	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśamī Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata ,,	—	—
1027	Ja/53	Hari-vaṁsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	,, ,, ,,	—	—
1029	Jha/10/3	,, ,, ,,	—	—
1030	Ja/59	Jaṁbū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāna Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvīra-Purāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	13 0×10 3 5 9 10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available
P	D, H Poetry	19 7×16 5 48 14 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 14 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	24 5×10 5 5 8 28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost
P	D, H Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H Poetry	27 9×17 3 149 14 40	C	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	21 5×14 4 41 15 38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed
P	D, H Prose	26 8×10 5 8 12 37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P	D, H Poetry	29 4×14 1 22 13 38	C	Good 1933 V S	Rajyakumāra canda seems to be copiar
P.	D, H Poetry	19 0×17 0 5 15.22	C	Old	
P.	D, H Poetry	30 2×15 0 85.12 49	Inc		Opening pages are missing

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nāthā-Vivāha	Vinadilāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskānkşita-guna Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣtami ,,	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirdoşa-saptami ,,	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48,15/8	Pancami ,,	Surendra-Bhūsana	—
1038	Ja/11	Parśva-purāna	Lālā Candulāla	—
1039	Ja/10	,, ,,	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	,, ,	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	,,	—
1043	Nga/44/16/2	,, ,, ,,	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	22 0×13 0 6 15 13	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	P, H Poetry	17 5×13 5 10 14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	28.0×13 0 144 13 27	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0×14 0 11 12 28	Inc	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	17.5×13 5 5 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	13.0×10 2 11 9 10	Inc	Old	
P	D; H Poetry	32.3×19 0 4 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	,, ,, ,,	Bhanukirti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohini Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	,, ,,	—	—
1050	Nga/41/tha	Rohini-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Rota-tija ,,	Dyānata rāya	—
1052	Ta/42/56	,, ,,	—	—
1053	Nga/46/9/1	,, ,,	—	—
1054	Nga/46/9/2	,, ,,	—	—
1055	Nga/41	Salūnā ,,	Vinodilāla	—
1056	Nga/46/3	Śila-Kathā	Malla-sena ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	19 0×14 9 8 11 15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 3×17 5 33 14 21	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 9 14 15	C	Good	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 9 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	22 3×13 0 9 8 23	C	Good	
P	D, H Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Prose	18 8×17 6 2 17 23	C		
P	D, H Poetry	18 8×17 6 3 14 17	C		
P	D, H, Poetry	14 5×11 0 19 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	25 6×16 6 27 13 36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta,28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śilavati ,,	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakārana Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	,, ,,	,,	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣodaśa-kārana ,,	,,	—
1062	Ta/42/48	Ṣravana-dwādasí ,,	,,	—
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	,, ,,	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśami Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	,, ,, ,,	—	—
1067	Nga/47/4/78	,, ,, ,,	—	—
1068	Nga/41	Sugandhadaśami ,,	Jnānasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	19 8×17 2 45 14 23	C	Good	
P	D, Skt Prose	14 2×9 0 50 9 22	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 2×15.0 4 16 15	C	Old	
P.	D; H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D; H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Prose	24 7×11 2 40 13 37	C	Good	
P,	D, H Poetry	24 5×11 3 38 15 35	C	Old	
P	D, H. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 4 14 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C		
P	D, H. Poetry	5×11 0 5.13.16	C		

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vira Jinañda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣnu Kumāra ,,	Vinodilāla	—
1072	Ta/11/1	Arihant -Kevali	Rama-gopālā	—
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Arādhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Artha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guna-bhadra	—
1077	Ja/38	Banārasi-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	,, ,,	—	—
1080	Ta/6/18	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt prose	14 2×9 0 32 9 22	C	Old	
P	D; H Poetry	15 2×12 8 3 11 15	C	Old	
P	D; H Poetry	19 0×14 9 19 15 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	14 5×11 7 29 9 15	C	Good 1917 V S.	
P	D; Pkt. Poetry	22 2×14 7 8 18 15	C	Old	
P	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P	D, H Prose	33 4×18 9 411 13 33	C	Good	The opening pages are damaged.
P.	D, Skt Prose	19 o×14 5 37 15 13	C	Old 1928 V S.	
P	D, H. Poetry	22 0×13 1 107.12.31	C	Old	
P.	D, H Poetry	20.6×18 0 2.16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	16 5×16 0 2 12 19	C	Old	
P	D, H, Poetry	22 2×14.7 1.20 17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthankaranāmāvali	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	—
1083	Nga/45/7	„ „	„	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	„ „	—	—
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	„ „ „	—	—
1089	Ja/51/21	Catvāri-dandaka	—	—
1090	Ta/14/42	Caubisa „ „	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/1	„ „	„	—
1092	Ja/23/1	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 5×8 5 3 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	25 0×12 0 170 11 34	C	Good	
P	D, H Poetry	26 8×13 9 168 11 33	C	Old 1967 V S.	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 30 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2×12 8 3 13 18	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	24 7×11 3 72 13 38	C	Old	
P	D, H Prose	22 0×13 5 63 12 27	C	Old	
P	D; H Prose	15 0×11 3 8 10 19	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 6 12 20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11 5×10 0 10 10 14	C	Good	
P.	D, H Prose	22.4×14.2 18.17.18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja/45/2	Caubisa ṭhānā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Saṅgraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	,, ,,	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāya	—
1099	Ja/16/6	,, ,,	,,	—
1100	Nga/37/4	Dāna-śila-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	15 0×11 3 5 10 20	C	Old	
P	D; H. Poetry	21 2×13 6 148 11 33	C	Old	
P.	D, H Poetry	29 7×14 0 83 11 44	C	Good 1893 V S	
P.	D; H Poetry	20 8×14 2 157 16 17	C	Good	
P	D; Pkt. Prose/ Poetry	23 4×10 3 42 13 40	C	Old 1735 V S.	
P	D, H Poetry	18 3×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	23 3×19 0 10 15 18	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 3×11 5 13 9 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 14 9 26	C	Old	
P.	D, H. Prose	21 2×13 6 2 11 30	C	Old	
P.	D, H. Poetry	12 9×27 4 230 9 19	C	Old	
P.	D; H Prose/ Poetry	22 0×14.4 110 20 14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasāra	—	—
1106	Nga/44/13/4	Dharmāṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-parīkṣā	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	,, ,, granthā	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Şiromaṇidāsa	—
1112	Ta/61/14	Dravya-Sangraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	,, ,,	,,	—
1114	Ta/37	,, ,,	—	—
1115	Ta/4/1	,, ,,	Nemicanda	—
1116	Ta/6/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16 5 60 15.21	C	Good	
P	D; H. Poetry	13.5×8.5 4 6.13		Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	C	Good	
P.	D, H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H Poetry	26.6×14.0 206 9 24	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11 5 10 16 15	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×14.3 75.13 22	C	Good 1832 V S	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 10.23 15	C	Old	
P	D; H. Poetry	19 0×14.8 5 9 26	C	Old	
P	D,H /Skt. Poetry	16 0×12 0 41.10 16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening
P	D,H /Pkt. Prose	23 2×19.5 20 13 32	C	Old 1871 V. S	
P.	D,Pkt./H. Poetry/ Prose	22 2×14.7 49 18-20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṁgraha	Nemicandra	—
1118	Nga/16/2	" "	"	—
1119	Ta//14/33	Dvādasānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gati-Lakṣhna	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē ath anga	—	—
1124	Nga/28/1	Hanavanta anuprēkṣā	Pandita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatrí trikāla-sandhyā	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guna-sampatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāsi-kṣamā-vaní	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt / H Prose/ Poetry	22.4×14 2 19 17 15	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 6.11 21	C	Good	
P.	D; H Poetry	15.2×12 8 4 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 2 13.35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15.7×9.0 2 9 22	C	Good	
P	D; H Prose	36 5×18 7 454 11 38	C	Good	
P.	D, Pkt / H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P,	D; Pkt Poetry	14 6×14 1 7 14 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 5×13 2 0 10 13	Inc	Old	
P	D, Skt. Poetry	30 2×20 0 3 37 33	C	Old	
P	D, H. Poetry	11.5×10 0 4 10 14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 3.16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacisi	Banarasidāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānâmava-Vacanika	Śubhacandra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakrti-granthā	Nemicandra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratikeyānu preksā	Kârtikeya	—
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	,, ,,	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyâ-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Lilāvati-prakirnaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khandana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	14 2×9 0 3.9 22	C	Old	
P.	D,Skt./H Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13 0×15 0 18.11 21	C	Good	
P	D; H Poetry	15 5×9.5 10 10 19	C	Old	
P	D, Pkt. Poetry	25 6×15 0 38 15 21	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 34	C	Good	It is also named Arhat pravacana.
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 2 12 36	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt / Pkt. Poetry	15 7×9 0 2 9 22	C	Good	
P	D, Skt Pros / Poetry	19 3×13.0 167.17.16	C	Old	
P	D, H Poetry	23 9×10 8 113 9.32	C	Good	
P.	D,H /Pkt Prose/ Poetry	32 1×15.0 224.12 50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paidí	Banārasidāsa	—
1142	Ta/14/36	,, ,, ,,	,,	—
1143	Ta/6/13	Mrtyu-mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya-cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	,, ,,	,,	—
1148	Ja/41/2	,, ,, Vacanikā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	,, ,, ,,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nirvāna-kānda	—	—
1151	Nga/20/4	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Vimśatikā	—	—

(Dharma-Darśana Ācāra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	11 5×10 0 7.10 14	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12 8 5.11 15	C	Old	
P	D; Pkt / Skt Poetry	22 2×14 7 3 20 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	13 0×15 0 23 11 21	C	Good	Opening two pages are missing.
P.	D, H. Poetry	11 0×11 0 6 12 17	C	Old	
P	D; Skt. Prose	21 5×14 4 12 19 13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati
P.	D, Skt. Prose	13 1×15 0 13 11 21	C	Good	
P.	D, H, poetry	21 2×13 6 17 11 34	C	Old	
P	D, H Poetry	13 4×17 6 26 11 19	C	Good 1962	
P.	D; Pkt Poetry	25 6×15 0 3 15 21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25 6×15 0 3 14 18	C	Good	
P.	D, Pkt. Poetry	22 2×14.7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmṣṭhi	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	„ „	„	—
1156	Ja/6/3	Parikṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/^6/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti-mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	„	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalaṅka-swāmi	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-punya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Punya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyyktva Koumudi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11 3 9.10 20	C	Good	
P.	D, Apb Poetry	22 2×14 7 25 19 13	C	Old	
P	D, Apb. Poetry	13 0×15 0 29.11 21	C	Good	It is also called paramappayāsu
P.	D; H. Prose	30.2×15 0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H Prose	20.3×15 8 57 17 19	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	29 8×14 4 27 14 35	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	26.6×10.5 14 14 39	Inc	Old	
P	D, H Prose/ Poetry	26 8×10 5 28.12 47	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	145 ×11 7 6 11 18	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 9 16 18	C	Old	
P.	D; H Poetry	20 6×18 0 1.16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	24 2×16 0 44.10 30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	,, nāṭaka	—	—
1167	Nga/42/1	,, ,,	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	,, ,,	,,	—
1169	Nga/16/8	Samavaśaraṇa	—	—
1170	Nga/16/7	Samud-ghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saṭdarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuḍa	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	,,	,,	—
1174	Nga/47/4/55	Saṭleśyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9 0 3 9.22	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	21.0×14 5 81 13 31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344 6.16	C	Old 1884 V. S.	
P.	D, H. Poetry	15.0×14.0 128.13.19	C	Good 1840 V. S.	
P.	D; H. Poetry	13 0×15 0 40 11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 0×15 0 3 11 21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	14.5×11 7 2 11 20	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	22 2×14 7 35 19 15	C	Old	
P.	D, Pkt Poetry	13 0×15 0 36.11 21	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20.6×18 0 2.16 18	C	Old	
P.	D, Skt, Poetry	15·2×12 8 2 12.13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12 8 25.11 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyika	—	—
1178	Ja/51/20	„	—	—
1179	Nga/19	„	—	—
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	—	—
1181	Ja/45/4	Sātatattva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja/65/3	Sindūra-Prakarana (Sūktimuktavali)	Somaprabhācārya	Harṣakirti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakarana		—
1185	Nga/31/2/6	„ „	Somaprabhācārya	Harṣakirti
1186	Nga/47/4/76	Śila-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumāni-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3×19 0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 8×9 0 2 9 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 3×17 5 3 14 21	C	Old	
P.	D; Skt Prose	15 0×11 3 7.10 20	C	Old	
P.	D; H Prose	32 1×16 0 26 11 47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10 0 51.10.14	C	Good	
P,	D; Skt Poetry	19 0×14 5 19 15.13	C	Old	Pandıta Paramānanda seems to be copıer.
P	D; H. Poetry	12 3×16.0 21 15 16	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×14.4 151.12 48	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	15.2×12.8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramana	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Sandhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	,, ,, ,,	—	—
1192	Nga/47/4/60	,, Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śrī-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	,, ,, ,,	—	—
1195	Ja/6/2	Sudrṣti Tarangini	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmi	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	,, ,,	Umā Swāmi	—
1200	Nga/47/4/38	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Pkt Poetry	32.3×19 0 4 33 21	C	Good	
P.	D, Skt. Prose	15 7×9 2 8 7 18	Inc	Old	
P.	D,Skt. Poetry	16 5×13 2 6.12 16	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	P, H Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	19 5×12 5 5 9 25	C	Old	
P	D; H Poetry	30 2×15 0 43 15 38	Inc	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 4 21 21	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3×20.2 10 23 17	Inc	Old	
P.	D, Skt Prose	22 5×13 0 24 18 13	C	Old	
P	D, Skt. Prose	20 6×18 0 13 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Prose	13 5×8 5 38 6 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	,, ,,	,,	—
1203	Ta/42/17	,, ,,	,,	—
1204	Nga/38/6	,, ,,	,,	—
1205	Ja/23,2	,, ,,	,,	—
1206	Ta/6/6	,, ,,	,,	—
1207	Ja/27/3	,, ,,	,,	—
1208	Nga/25/6	,, ,,	,,	—
1209	Nga/20/1	,, ,,	,,	—
1210	Nga/17/2/1	,, ,,	,,	—
1211	Nga/20/1/2	,, ,,	,,	—
1212	Ja/33/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	15 5×11 6 23 8 20	C	Old	
P	D, Skt. Prose	15 2×12 8 19 11.15	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	32 3×19 0 4 33 39	C	Good	
P	D, Skt Prose	15 8×9 0 4 9 22	C	Good	
P	D, H Prose/ Poetry	22 4×14.2 57 19 15	C	Old	
P	D, Skt. Prose	22 2×14 7 9 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	21 5×14 4 56 17 13	Inc	Old	
P	D, Skt. Prose	28 4×17 0 9 24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25 6×15.0 13 15 21	C	Good	
P.	D,Skt /H Prose	25 0×17 0 45 20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	29 0×17 8 11.21 17	C	Good	
P.	D, S. Prose	19 7×13 0 10.18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmi	—
1214	Ja/27	,, ,,	,,	—
1215	Nga/31/2/2	,, ,,	,,	—
1216	Nga/29/3	,, ,,	,,	—
1217	Ja/2	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12	,,	—	—
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturviṁśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarnācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Prose	19 0×14 9 18 11.15	C	Old	
P.	D Skt. Prose	20.2×14 5 14.15 18	C	Good 1955 V S	
P	D,, Skt Prose	12 3×16 6 3 17 16	C	Good	
P.	D,H /Skt. Prose	13 2×21 0 71.16 13	C	Good	
P.	D, H. Prose	32 2×15 3 272.12 56	Inc	Good	
P	D, H. Prose/ Poetry	25 3×15 0 175 16 18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P.	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 2 26 25	Inc	Old	
P.	D, H poetry	17 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15.5×9.5 28 9 16	C	Old	It has no heading or opening
P	D, H. Prose	31 0×16.2 295 11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P	D, H Prose	33 4×18 9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogi-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battisi	Bhagavatidāsa	—
1228	Nga/47/4/52	,, Vavani	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāi-Rāsā	Vinayakirti	—
1231	Ta/14/32	,, ,,	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodilāla	—
1233	Nga/47/4/50	,, ,,	—	—
1234	Ja/40/2	Candra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacisi	,,	—

6	7	8	9	10		11
P.	D, H Prose	21 5×14.4 50 22 16	C	Old		
P	D, H Poetry	12 3×16 6 5 13 14	C	Good		
P	D, H Poetry	19 5×12.5 10 8 21	C	Good		
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 4 16 18	C	Old		
P	D, Skt Poetry	23 8×18 2 10 18 21	Inc	Old		
P	D; H Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old		
P	D, H Poetry	15 2×12 8 4 13 18	C	Old		
P	D, H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good		
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old		
P	D, H Poetry	22 0×13 5 16 13 34	C	Old		
P	D, H Poetry	27 0×17 0 12 13 28	C	Old		
P.	D; H. Poetry	27.0×17 0 4 23 28	C	Good		

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyânatarāya	—
1238	Ja/35/7	,, ,, ,,	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thânaCaubisi	Dyânatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gana	—	—
1241	Ja/16/3	,, ,,	—	—
1242	Ta/6/17	Dohâ	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvali	—	—
1244	Ja/27/2	,,	—	—
1245	Ja/28	,,	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwipancâśa tikâ	Banarsidāsa	—
1247	Nga/44/11	Futakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	23.3×19 0 6 15.18	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18.3×11 5 7 16 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17 0 4 23.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 2×11 5 10 16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23.3×19 0 9.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14 7 7.18.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22 0×15 0 4.18.15	C	Old	
P	D, H Poetry	21 5×14.4 16.18.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	21 0×14 7 4.18 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	15 3×12.4 13 25 20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	13 0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakari	Bhūdharadāsa	—
1251	Ta/11/34	Jogī-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	,,	—	—
1254	Ta/40/3	,,	Trilokacanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kripana-Pacisí	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacísi	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandadāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Candrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt. Skt Poetry	15 5×12.0 22 10.19	Inc	Good	
P.	D, H. Poetry	22.5×15 0 2.12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	15 2×12 8 4 14 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15 0 2 12 31	C	Good	
P.	P; H Poetry	22 5×15 0 2.12 31	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 0×13 5 2 12.31	C	Old	
P.	D, H. Poetry	14 5×11.0 7.13 16	C	Old	
P.	D, H. Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 7×11.2 26.17 16	C	Old 1806 V. S.	It is also called Mānamanjarī
P.	D, H Poetry	11.5×10 0 5 10.14	C	Good	
P	D, H. Poetry	18 2×13 5 168.14 16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14 5×11 0 6.13.16	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodilāla	—
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	—
1264	Ta/3/47	,, ,,	,,	—
1265	Ja/35	,, ,,	,,	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasi	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakari	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4/51	Rājula Pacisī	—	—
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodilāla	—
1271	Nga/44/9/2	,, ,,	,,	—
1272	Nga/44/Pa	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	18 5×13 1 15 13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 0×22 0 6 16 12	C	Old	
P.	D; H Poetry	23.8×19 0 5 15 18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 2×11 5 6 16 14	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	22 5×15.0 2 12 31	C	Old	
P,	D, H Poetry	30 0×15 8 16 10 37	C	Old	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	18.5×13 0 6.13 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11 0×10 5 11 12 12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14 5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacisi	—	—
1274	Nga/44/19/2	Ristā	—	—
1275	Nga/47/4/81	,,	—	—
1276	Ja/65/8	,,	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛndāvana	—
1279	Nga/45/5	Samkitadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	,, ,, ,,	—	—
1282	Nga/45/6	,, ,, ,,	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	19.5×12 5 13.10 19	C	Old	
P	D, H Poetry	19.5×12 5 2 9 5	C	Old	
P	D, H. Poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old 1853 V S.	
P.	D; H Poetry	11 5×10 0 12 10 14	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 0×13 5 6 12 35	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.3×16.4 131 14 16	C	Old 1953 V S.	
P	D, H Poetry	23 5×9 0 31.20 58	C	Old 1702 V S	
P.	D, H. Poetry	22 3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P	D; H Poetry	24 0×12 2 11 9 25	C	Good	
P	D, H Poetry	23 7×15 0 103 9 23	Inc	Old	
P	D; H. Poetry	19 3×10.6 72.10.28	C	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23 1×15.1 70 18 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kāraṇa-rāsā	Sakalakīrti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pancamī-rāsā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Srī-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvalī	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubalı	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakarī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacīsī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra-mantra	Mānatuṅga	—
1293	Nga/26/3	,, ,,	,,	—
1294	Nga//26/9	Caubısa tīrthankara mantra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatrı mantra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghantā-karna-mantra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	20.6×18 0 3 10.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	23.1×15.1 2 14.14	Inc	Good	
P	D, Skt. Poetry	15 0×13 0 178 6 14	C	Old	
P	D; H Poetry	20.6×18 0 7.16.18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	22.2×14.7 14.19 16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27 0×17 0 4 23 28	C	Good	
P.	D, H./ Skt. Prose/ Poetry	29 0×17 0 20.24.17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D, H./ Skt Prose/ Poetry	20.0×16 4 49.13 22	C	Good	It has fourty eight mantra charts.
P	D,H /Skt Poetry	29.0×17.0 6 24 17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32.3×20.1 3 13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghaṇṭā-karna-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatri	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yantra	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kānda-mantrā	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmi-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Mantra	—	—
1306	Ta/11/4	,,	—	—
1307	Nga/43/2	,, Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Mantra-Yantra	Rāmacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	17 3×13 0 2 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	25 0×15 0 7 25 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 3 2 20 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 3 1 21 20	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; H Poetry	16 5×13 2 2 12 16	C̄	Old	
P	D, Skt poetry/ Prose	15 7×9 2 10 7 18	C	Old	It is so demage that it cannot read and write.
P	D,H Skt Poetry	29 0×17 0 2 24 17	C	Good	
P	D; Skt Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	It has mantra charts also
P	D, Skt. Prose	14 5×11 7 9 11 22	C	Good	
P.	D, Skt, Prose	16.4×13 4 10 13 16	Inc	Old	
P.	D, Skt. Prose	16 5×13 2 1.11.1 5	C	Old	

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-mantrā	Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṇḍaka	—	—
1311	Nga/43/4/2	„ Kalpa	Malliṣena	—
1312	Nga/43/6/2	„ „	—	—
1313	Ta/42/85	„ Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	„ „	—	—
1315	Nga/48/11/2	„ „	—	—
1316	Nga/26/12	„ „	—	—
1317	Nga/48/6/2	„ „	Rāmacandra	—
1318	Ta/30/2	„ Mantra	—	—
1319	Nga/43/6/12	„ „	—	—
1320	Ta/42/83	„ Paṭala	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16 3×14 0 11 10 20	C	Old	
P.	D, Skt Prose	17 3×13 0 7 13 12	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	16 5×13 2 2 12 17	C	Old	
P,	D,H /Skt. Prose	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	15 7×9.2 6 7 18	C	Old	
P	D;H /Skt Poetry	20 1×15 6 3 13 20	C	Old	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pañdraha-yañtra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanātha-stotra-mantra	—	—
1323	Nga/43/6/4	,, ,,	—	—
1324	Nga/26/3	,, ,,	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	—
1326	Nga/13/6	Sakali-karana vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāñtinātha-mantra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mañtrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	,, ,,	—	—
1331	Nga/38/14	,, ,,	—	—
1332	Nga/26/4	,, stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	15 5×9 5 8 10 25	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 2 24 16	C	Good	
P.	D, Skt Prose	17 3×13 0 3 13 12	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	29 0×17 0 3 14 16	C	Good	
P	P, Skt Prose	16 0×10 3 37 7 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	24 4×18 7 5 21.17	C	Good	
P	D, H. Prose	25 0×10 0 17 15 42	C	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	17 3×13.0 3 13 12	C	Old	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	16 5×16 0 2 12 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 00 6 9 22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry/ Prose	29 0×17 0 2 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kārana-mantra	—	—
1334	Ta/3/42	Sūtaka vidhi	—	—
1335	Ta/4/11	Tantra mant ā Samgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaśikarana-adhikārā	—	—
1338	Ta/39/20	Vaśyādhikāra	—	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana ,,	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	—	—
1342	Ta/2/2	Yantra-mantra-samgraha	—	—
1343	Ta/2/3	,, ,, ,,	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣṭānga hrdaya	Vāgbhaṭṭa	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 5×12 5 2 7 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Old	
P.	D; Skt Prose	11 5×15 5 161 21 16	Inc	Old	
P	D,H /Skt Prose	29 0×17 0 13 24 17	C	Good	
P	D, Skt Prose	20 0×12 0 2 17 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 16 1	C	Old	
P	D, Skt Poetry Prose	15 5×11 6 2 10 21	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 2 12 12	C	Old	
P	D, Skt Prose	13 3×10 2 21 8 14	Inc	Old	1 to 3 and 6 or 7 pages are missing
P	D, H Prose	20 5×17 1 139 25 22	C	Old	The mantras & tantras charts are availeble in the mss.
P	D; H Prose	16 5×21 0 52 17 23	C	Old	There are so many yantra & mantrā charts in the mss.
P	D; Skt Poetry/ Prose	28.6×18 5 183.22 24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	,, sāra	—	—
1347	Ta/4,2	Jwara-hara-yantra	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karana chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda-nighanṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nādi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Panca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-mangala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka satika	—	—
1356	Ta/2/1/2	Sārangadhara Samhitā	Sārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose/ Poetry	27 0×11 9 120 13 49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P	D, H Prose/ Poetry	19 5×14 7 59 14 29	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 3×13 0 2 14.17	C	Good	
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	19 3×13 0 18 19 19	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	19 3×13 0 183 14 17	C	Good 1912 V S	
P	D, H. Prose	19 7×13 0 16 15 11	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	28 6×18 5 64 22 16	C	Old	
P,	D,Skt /H Prose Poetry	13 5×11 5 25 15 15	C	Old	
P	D, H Poetry/ Prose	26 0×16 3 158 21 14	C	Good 1906 V S	
P	D,Skt /H Prose	15 8×13 3 74 13 18	C	Good	
P	D, Skt / H Poetry	15 8×13 3 163 13 18	C	Good 1676 V S	
P.	D; Skt Poetry	28 6×18 5 61 23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣana	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	„ manotsava	Banśidhara Miśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmani	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlāla	—
1363	Nga/47/4/58	„ ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	„ stotrā	-	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devi stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Aṅka-garbha-ṣadāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	24 0×16 0 11 34 20	C	Old 1794 V S	
P	D, Skt Poetry	15 8×13 3 81 13.18	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 0×16 0 134 22 22	C	Old 1794 V S	
P	D, H Prose	20 5×17.5 98 23 22	C	Old	
P	P, Skt / Pkt Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	19 0×14 8 1 9 26	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Prose	32 3×20 0 1 13 35	C	Good 1959 V. S.	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	—	—
1370	Ta/18/10	,,	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	,,	—	—
1372	Nga/44/17	,, Saṁgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvali	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	,,	,,	—
1377	Nga/12/3	,,	,,	—
1378	Nga/16/9	,,	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṁgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatunga	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D H Poetry	11 0×4 0 2 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 2 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, H Poetry	20.0×16.0 4 13 21	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 19 20	C	Old	
P	D; H Poetry	22.2×14 7 2 20 17	C	Old	
P	D, H poetry	25 0×22 0 445 15 24	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 0×26.0 25 14 26	C	Good	
P.	D, H. Poetry	27 4×22 0 42 22 26	C	Old	
P.	D, H Poetry	13 0×15 0 5 16.21	C	Good	
P.	D, H, Poetry	20 5×12 7 12 16 16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5 21 18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—
1382	Nga/28/2	,, ,,	,,	—
1383	Nga/38/1	,, ,,	,,	—
1384	Ta/3/10	,, ,,	,,	—
1385	Ta/42/63	,, ,,	,,	—
1386	Ta/4/2	,, ,,	,,	—
1387	Nga/46/12/2	,, ,,	,,	—
1388	Nga/45/2	,, ,,	,,	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	,,	—
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	,,	—
1391	Ta/9/5	,, ,,	,,	Sivacandra
1392	Ta/14/26	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	29 0×17 0 5 21.16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 6×14 1 6 13 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 8 ×9 0 7 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	22.5×15 0 5 12 18	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 7 10 21	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 5×13 0 7 18 13	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	25 2×12 1 34 9 34	C	Good 1849 V S	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×12 5 10 12.12	C	Old	
P	D, Skt, Poetry/ Prose	19.0×14 5 15 19 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 8 11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20,5	Bhaktāmara stotra	Mānatungā	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,	—	—
1395	Ta/18/13	,, ,,	—	—
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	,, Stotra	,,	—
1398	Ta/6,3	,, ,,	,,	—
1399	Ja/35/4	,, ,,	,,	—
1400	Nga/20/6	,, ,,	,,	—
1401	Nga/25/1	,, ,,	,,	—
1402	Ja/52	,, Vacanikā	Mānatuṅga	—
1403	Nga/47	,, Stotra Vacanikā	Mānatuṅga	—
1404	Nga/48/6/7	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	25 6×15.0 7 14.16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18.0 6 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	11 0×11 0 9 12 17	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×16 1 6 12.25	C	Old	
P.	D, H Poetry	14 5×11 0 12 8 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 2×14 7 5 19 20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 3×11·5 8 16 15	C	Good	
P;	D, H Poetry	25 6×15 0 7 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry/	28 4×17.0 4 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	27 5×12 5 29 11 38	C	Good	
P	D; H Poetry	20 1×16 3 47.10 27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15 7×9 2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṭikā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānatanga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti saṁgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	,,	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturaviṁśati stotrā	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubīsī	-	—
1413	Ta/4/6	,, ,,	Bhūpalakavi	—
1414	Ta/42/67	,, ,,	,,	—
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	—
1416	Nga/26/1/6	,, caubīsī stotra	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 1×15.6 7 13.20	C	Good	
P	D,H /Skt. Poetry	13.5×8.5 18 6.13	C	Good	
P	D; Skt. Pkt Poetry	15 2×12 8 51 11 15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	24 2×18 7 1.21 23	C	Good	
P.	P; Skt Poetry	32 3×19.0 1.33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	10 3×9 5 6 7.8	C	Good	
P	D, Skt Prose	19 0×14 5 11 20 19	C	Old 1927 V S.	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 5 17.18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2×19.5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15 7×9 0 6 9 22	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra	—	—
1418	Nga/47/4/12	,, caulısi bhāṣā	—	—
1419	Nga/47/4/57	Bısa-vıraha-māna-ārati	—	—
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣana	—	—
1421	Ta/42/87	Caıtyālaya stotrā	—	—
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwari ,,	—	—
1423	Nga/43/1	,, ,,	—	—
1424	Nga/43/3/5	Candra-prabha ,,	—	—
1425	Nga/48/6/5	,, ,,	—	—
1426	Ta/42/98	Cārıtra bhaktı	—	—
1427	Nga/48/8/2	Caturvımśati stotra	—	—
1428	Nga/43/6/8	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28 4×17 0 2 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 3 17.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18 0 2 16 18	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1 33 37	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 1 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	14 9×11 2 4 8 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	17 0×13.0 3 9 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15.7×9 2 4 7 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	9 6×6 0 6 4.8	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17.3×13.0 2 13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturvimśati Stotra	—	
1430	Nga/44/10/2	,, Jina Stotra	—	
1431	Ta/18/9	Caubisa tirthankara pada	—	
1432	Ta/42/69	Cintāmani Stotra	—	
1433	Ja/61	,, Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	
1434	Nga/44/10/25	,, ,, ,,	—	
1435	Nga/47/4/66	Caubisa Jina Ārti	Bhairondāsa	
1436	Nga/47/4/74	,, ,, ,,	—	
1437	Ja/23/3	,, Dandaka Vinati	Daulatarâma	
1438	Nga/47/4/32	Darśana Jnāna Caritra Ārati	Dyānatarāya	
1439	Ta/6/5	Darşana-Stuti	—	
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	17 0×13 0 3 9 21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5×13 1 1 11 28	C	Good	
P	D, H Poetry	11 0×11 0 11 12 16	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	22 0×13 0 2 13 11	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18 5×13 1 4 12 22	C	Old	
P	D, H poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	22 4×14 2 6 18 15	C	Old	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, H, Poetry	22 2×14 7 2 21 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1441	Ta/42/89	Deva-stavana	—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	" "	"	—
1444	Ta/42/66	" "	"	—
1445	Ta/4/5	" "	"	—
1446	Nga/44,10/10	" "	"	—
1447	Nga/47/4/10	" "	"	—
1448	Nga/44/15	" "	—	—
1449	Nga/48/21/3	" "	"	—
1450	Ta/9/7	" "	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	" "	"	—
1452	Nga/25/2	" "	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 5 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 2 33 37	C	Good	
P	P, Skt. Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 4 17 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 6×9 2 19 7 19	Inc	Old	It has no opening and closing.
P	D, Skt Poetry	16 5×12.5 7 12 12	C	Old	
P.	D, Skt Prose	19 0×14 5 12 19 19	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17.0 4 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṅtâ-Karna ,,	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdharadāsa	—
1457	Ta/14/31	,,	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Gunāvali	—	—
1460	Ta/9/4	Gunâṣṭaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Samgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	9 6×6 0 4 4 8	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 2×12 8 4 12 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D; H Poetry	25 0×11 0 18 15 39	C	Old	
P,	D, H Poetry	19 0×14 5 5 14 17	C	Old	
P	D, H Poetry/	11 0×17 5 183 9 23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 3 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	22 0×13 0 2.14 32	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19 0	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	,, ,,	—	—
1467	Ta/42/70	Jinaral sā Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	,, ,,	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	,, ,,	—	—
1474	Nga/43/6/3	,, ,,	—	—
1475	Nga/48/2	,, ,,	—	—
1476	Nga/48/6/8	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	11.0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	40 0×11 4 1.52 16	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; H Poetry	32 2×20 2 90 13 37	C	Good 1957 V S	Copied by Bhagawānadatta.
P	D; Skt Poetry	22 5×15 0 1 12 36	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 5×15 0 3.12 31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22 5×15.0 2 12.36	C	Good	
P,	D,H Skt Poetry	29 0×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	17 0×13 0 4 9 21	Inc	Old	
P	D; Skt Prose	17.3×13 0 2 12 11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6 10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15 7×9 2 4 7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālinī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	,, ,,	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāna-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	,, ,, ,,	,,	—
1481	Nga/48/21/2	,, ,, ,,	,,	—
1482	Ta/4/3	,, ,, ,,	,,	—
1483	Ta/42/64	,, ,, ,,	,,	—
1484	Nga/38/2	,, ,, ,,	,,	—
1485	Ta/9/6	,, ,, ,,	,,	Pandit Śivacandra
1486	Nga/44/10/1	Kalyānamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	,, ,,	,,	—
1488	Nga/25/3	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Prose	14 3×11 2 8 7 18	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 5×12 5 10 12 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 2×19 5 7 11 20	C	Old	
P	D; Skt poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 7×9 0 8 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	19 0×14 5 16 20 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	18 5×13 0 5 11 28	C	Good	
P.	D, H, Poetry	11 0×11 0 8 12 17		Old	
P.	D, H Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	„ „	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	„ „	—	—
1493	Nga/48/4	„ „	—	—
1494	Ta/42/103	„ „	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranâma	—	—
1496	Nga/47/4/5	„ „ „	—	—
1497	Ta/18/8	„ „ „	—	—
1498	Nga/41/Na	„ „ „	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmī Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	„ „ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20.6×18 0 5 16 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	13.5×8 5 12.6 13	C	Old	
P.	D, Skt. Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	P; Skt Poetry	16.4×10 0 3.7 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 5 21 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11,0 5 12 13	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	14 5×11 0 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	24 3×18 0 2 21 20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 1 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmi-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Ārati	—	—
1503	Ta/30/8	Maṅdaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Mangala Ārati	Dyānatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Manibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42,77	Maṅgalāṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Mangala-jina-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Muniśwara Vinati	Bhūdharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śrīpāla	—
1510	Nga/47/4/4	„	„	—
1511	Ta/42/102	Nandiśwara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	„ „	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	29 0×17 7 1 24 16	C	Good	
P	D, H Poetry	21 0×16 0 3 13 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 0 2 13 20	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt H Prose Poetry	17 0×13 0 5 13 11	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 0×12 0 1 24 18	Inc	Old	
P,	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	29 0×17 8 3 21 17	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×19.0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Pkt Poetry/ Prose	20 2×15 8 8.10 27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinatí	Gunasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyana-lakṣmi-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	,, ,,	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/43/6/9	,, Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Neminātha Ārati	Bhairondāsa	—
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jinadāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāna Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	,, Kānda	Bhagavatīdāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	22 2×14 7 4 18 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	13 8×12 0 29 10 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; H Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P	D, Skt Prose	17 3×13 0 3 13 13	C	Old	
P	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, H Poetry	15 7×9 0 7 9 22	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	22.2×14 7 3 18 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvâna-Kānda	Bhagavatidāsa	—
1526	Nga/47/4/35	,, ,,	,,	—
1527	Nga/47/5/11	,, ,,	,,	—
1528	Ja/35/3	,, ,,	,,	—
1529	Nga/25/7	,, ,,	,,	—
1530	Nga/26/1/11	, ,,	,,	—
1531	Ta/6/21	,, ,,	—	—
1532	Nga/48/26/6	,, ,,	—	—
1533	Nga/26/1/10	,, ,,	—	—
1534	Nga/33/5	,, ,,	—	—
1535	Nga/47,4/34	,, ,,	—	—
1536	Ta/47/5/10	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	19 5×12 5 5 10 27	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	16 5×16 0 4 12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	18 2×11 5 3 16 15	C	Good	
P.	D, H. Poetry	28 4×17 0 2 24.17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 2 26 26	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 2×14 7 3 18 21	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	16 5×13 5 3 8 24	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	29 0×17 8 2 23 16	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 7×15.7 3 18 15	C	Good	
P	D, Pkt, Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	

1	2	3	4	5
1537	Ta/41/20	Nirvāna Kānda	—	—
1538	Ta/3/35	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1539	Nga/44/13/1	,, ,,	—	—
1540	Nga/26/1/12	Omkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	,,	—	—
1543	Ta/18/15	,,	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	,,	—	—
1545	Ta/30/3	,,	—	—
1546	Ta/28/2	,,	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	,,	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H. Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 4.6 13	C	Good	Starting three pages are missing.
P.	D, Skt Poetry	29 0×17 8 2 23 17	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18.0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	16 5×16 0 1 12 19	C	Old	
P	D; H Poetry	11 0×11 0 4 12 17	C	Old	
P,	D, H. Poetry	15 2×12 8 2 12 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Old	
P	D; H Poetry	19 8×17 2 1 14 18	C	Good 1948 V S	
P	D, H Poetry	19.7×16 5 2 14 21	C	Good 1948 V S	Copied by Amícanda
P.	D; H. Poetry	13 5×8 5 3.6.13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	,,	—	—
1551	Nga/44/19/7	,,	—	—
1552	Nga/37/2	,,	—	—
1553	Ta/3/84	,,	—	—
1554	Ja/65/6	,,	Jagarâma	—
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	—
1556	Ja/65	,,	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	,,	—	—
1558	Nga/37/12	,,	Vrndāvana	—
1559	Ja/29	,,	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	16 8×12 8 1 11 12	C	Old	
P	D, H Poetry	13 5×12 0 2 8 12	C	Good	
P.	D, H Poetry	19 5×12 5 3 9 23	Inc	Old	
P.	D; H Poetry	17 4×11 0 5 7 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	22 5×15.0 6 12 31	C	Good	
P	D, H Poetry	11 5×10 0 53 10 14	C	Good	
P	D, H poetry	22 0×13 0 8 15 13	C	Old	
P.	D, H Poetry	11 5×10 0 59 10 14	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 5×10 0 4 10 14	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 0×13 0 4 14 13	C	Old	
P.	D; H Poetry	21.1×14 0 3 15 15	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	14 8×14.8 82 13 15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṁgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holí	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvati aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	,, ,,	—	—
1568	Ta/39/5	,, ,,	—	—
1569	Ta/42/82	,, ,,	—	—
1570	Ta/30/5	,, ,,	—	—
1571	Ja/51/17	,, ,,	—	—
1572	Nga/25/15	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 0×15 3 12 11 14	Inc	Old	Closing is missing.
P	D, H Poetry	22 8×18 2 31 16 13	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D; H Poetry	28 4×17 0 0 24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13 0 4 15 13	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 3×13 0 10 13 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	16 5×13 2 8 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 5 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	28 4×17 0 22 24 17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmâvati stotra	—	—
1574	Ja/51/12	,, sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	,, ,,	—	—
1576	Nga/46/13	,, ,,	—	—
1577	Ta/42/36	,, ,,	—	—
1578	Ta/39/15	,, ,,	Sevārâma	—
1579	Nga/44/12/2	,, vinati	—	—
1580	Nga/48/1/4	,, ,,	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandipanca-vimśatikā	Padmanandi	—
1582	Nga/43/3/3	Pānco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	,, ,,	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhi stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×20 1 7 13 35	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	16 5×13 2 14.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13 0×11 6 1 7 10	Inc	Old	Only first page is available.
P	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 0×12 0 14 22 17	C	Old 1827 V. S	
P.	D, Skt / H Poetry	32 3×20 2 3 23 17	C	Old	
P	D; H Poetry	14 0×11 7 8 10 15	C	Old	
P.	D, H. Prose	11 0×10 2 12 11 9	Inc	Good	
P	D, Skt. Poetry	17 0×13 0 5 9 19	C	Old	
P.	D, Skt Prose	15 5×9 5 13 8 17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 5×13 1 2.13.22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	,, ,,	—	—
1587	Ta/42/86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42/74	,, ,,	—	—
1589	Nga/48/6/6	,, ,,	—	—
1590	Nga/43/3/4	,, ,,	—	—
1591	Nga/30/2/3	,, ,,	—	—
1592	Nga/41/2/8	,, ,,	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	,, stuti	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	,, stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāṭhāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	22.2×14.7 2 18 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18 5×13 1 3.13 ?2	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 7×9 2 3 7 18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D, Skt Poetry	17 0×13 0 2 9 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	19 0×14 8 3 9 20	C	Old	
P,	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 3 9 17	C	Good	
P	D, H Poetry	?2 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D; Skt Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 3 13.19	C	Old	
P.	D,H /Skt. Poetry	20 1×15 6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

1	2	3	4	5
1597	Nga/47/4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyaṅgirā-siddhi-mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	Ṛṣi-mandala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	,, ,,	—	—
1601	Nga/47/4/17	,, ,,	—	—
1602	Nga/26/10	,, ,,	—	—
1603	Nga/13/5	,, ,,	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasidāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	,, ,, ,,	,,	—
1607	Ta/19/2	,, ,, ,,	,,	—
1608	Ta/14/25	,, ,, stavana	Āśādhara sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 9×18 5 24 7 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	12 3×16 6 7 16 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 7 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	15 4×12 3 26 13 15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P	D, H Poetry	12 3×16 6 4 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 6 23 17	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	10 3×9 5 54 7 9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging
P.	D, Skt Poetry	15 2×12 8 14 11 15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	,, ,, ,,	—	—
1611	Ta/29	,, ,,	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Saṅdhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati	—	—
1617	Ja/29/1	Śanti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	11 0×11 0 26 10 10	Inc	Old 1842 V S	
P	D, H Poetry	12 3×16 6 9 16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D, H Prose	19 5×15 0 50 12 19	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 4 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 1 5 35	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 0×12 0 3 21 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 0×10 2 11 6 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 2 12 14	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 35	C	Good	
P	D. Skt. Poetry	18 5×13.1 5 13 22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	„ stotra	—	—
1623	Nga/48/9	„ „	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42/96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18/17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śrīpāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Śrīpāla Vinati	Srīpālarājā	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 7×11 7 6 14 12	C	Old	
P	D, H Poetry	13 7×9 7 3 11 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	11 0×11 0 13 9 8	C	Good	
P	D, H poetry	14 5×11 0 5 9 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	9 8×15 7 5 13 11	C	Good	
P.	D, Skt / Pkt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	23 3×19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 2 16.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	19 5×15 0 5 15 20	C	Good 1965 V S	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhâta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nâme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	—	—
1636	Ta/42/10	,, ,,	—	—
1637	Ta/3/30	,, ,,	—	—
1638	Ta/14/23	,, ,	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	,,	—	—
1641	Nga/37/11	,,	Vrndavana	—
1642	Ja/45/5	,,	Bhūdharadâsa	—
1643	Ta/3/40	,,	—	—
1644	Ta/42/29	,,	Jnánaságara	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	P, Skt Poetry	22 5×15 0 3 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 20 11 15	C	Old	
P.	D, H Poetry	21 1×14 0 16 13 13	C	Good	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 3 24 17	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×13.0 5 15 14	C	Old	
P	D, H Poetry	15 0×11 3 3 10 23	C	Old	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	—	—
1646	Ta/30/6	,,	Harṣakīrti	—
1647	Nga/48/23/5	,,	—	—
1648	Nga/44/19/3	,,	—	—
1649	Nga/44/12/3	,,	—	—
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmi	—	—
1653	Nga/44/10/9	Viṣāpahāra stotra	Dhananjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	,, ,,	,,	—
1655	Nga/26/1/5	,, ,,	,,	—
1656	Nga/48/21/4	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	11 7×14 0 5 10.15	C	Old	
P	D, H Poetry	20 1×15 6 2 13 20	C	Good	
P	D, H Poetry	16 8×12 8 3 11 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	19 5×12 5 3 10 19	C	Old	
P	D; H Poetry	32 3×20 4 4 23 17	C	Old	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D, H. Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Good	
P,	D, H Poetry	22 5×15.0 2 12 31	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 8×9 0 6 9 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 0×17 8 4 21.17	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16.5×12 5 8 12 12	C	Old	

1	2	3	4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	,, ,,	,,	—
1659	Ta/42/65	,, ,,	,,	—
1660	Nga/47/4/9	,, ,,	,,	—
1661	Nga/44/10/3	,, ,,	—	—
1662	Nga/47/4/14	,, ,,	—	—
1663	Nga/44/12/4	,, ,,	—	—
1664	Nga/44/13/2	,, ,,	—	—
1665	Nga/25/4	,, ,,	—	—
1666	Ja/35/5	,, ,,	—	—
1667	Ja/16/4	,, ,,	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vrhat-sahastra-nāma	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	19 0×14 5 13 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	23 2×19 5 6 11 20	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D; Skt Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D; H Poetry	12 5×13 1 4.12 23	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18.0 5 16.18	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×20 2 4 23 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×8 5 13 6 13	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 3×11 5 5 16 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23 3×19 0 4 15 18	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20.6×18 0 13 16.14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vrhat-svayambhū	Samanta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	,, ,, stotra	,,	—
1671	Nga/26/1/9	,, ,, ,,		—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	,, ,,	—	—
1676	Nga/41/dha	Ādityawāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākrtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	,, ,, Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt / H. Poetry/ Prose	20.8×16.3 18 15 18	C	Old	
P.	D, Skt / H Poetry/ Prose	17 6×13 0 22 12 21	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 0×17 8 13 23 17	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt Poetry	32.3×19 0 1 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 0×14 8 1 9 26	Inc	Old	It has no clc
P	D, Skt Poetry	16.5×16 0 4 12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13 16	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	14 5×11 0 2 13 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	27 8×17 6 15 10 31	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	20 0×12 0 1 24 18	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	22 5×15 0 1 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30.3×17 5 2 16 16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vidhi	—	—
1683	Ja/51/22	" " "	—	—
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakṣinī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabijakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭānhikā-pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	" "	—	—
1688	Ta/42/26	" "	—	—
1689	Nga/47/8/15	" "	—	—
1690	Ta/3/33	" "	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Athāī-pūjā	"	—
1692	Nga/27/5	Bāhubali-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P.	D, H. Poetry	18 5×13 1 4 13 32	Inc	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	20 0×12 2 4.19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 12 12 18	C	Old	
P.	D, Skt / Pkt Poetry	15 5×12 6 11 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 8×16 3 22 15 17	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12 31	C	Old	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 8 16 18	C	Old	
P	D, H Poetry	18 5×30.5 6 21.20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisâ-Tirthankara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjâ	—	—
1697	Nga/48/12/2	,, ,, ,,	—	—
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	—	—
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	—	—
1700	Nga/47/4/21	,, ,, ,,	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjâ	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthankara-jakari	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthankara-Jayamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D H Poetry	20 8×16.3 4 16 21	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20 6×18 0 1 16 18	C	Old	
P	D, H, Poetry	22 0×13 1 9 12 27	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	22 5×15.0 4 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 5×12 0 4 8 12	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 2×12.8 3 13 16	C	Old	
P	D, Skt poetry	16 8×12 8 4 11 18	C	Old	
P.	D, H Poetry	20 6×18 0 5 16 17	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 4 9 17	C	Good	
P	D; H Poetry	30 3×17 5 2 16 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 1 16.18	C	Old	
P	D, H. Poetry	16.5×13 5 2 8 24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	,, ,, ,,	Ajitadāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	,, ,,	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	,, ,,	,,	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣini-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	,, mātrkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturaniviśati-tirthankara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	,, ,, ,,	—	—
1714	Nga/33/2	,, ,, ,,	—	—
1715	Ja/34/4	,, ,, ,,	—	—
1716	Nga/47/7	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	16 5×16 0 5.12 19	C	Old	
P.	D, H Poetry	25 0×15 0 3 19 21	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 2×12.8 9 12 16	C	Old	
P.	P; Skt Poetry	20.6×18 0 0 16.18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20.0×12 2 4.20 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 4.20.20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 4 20 20	C	Good	
P	D,H /Skt Poetry	23 4×15.0 21 19 14	C	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P	D, H Poetry	22 5×13 4 4 16 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0×14 9 3 15 20	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	18.0×14 1 100 13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturavinśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/na	Caubisa-tirthankara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	,, ,, ,,	—	—
1720	Ja/55	,, ,, ,,	—	—
1721	Ta/13	,, ,, ,,	Caudharī Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubiśi pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturavinśati tirthankara pada	—	—
1724	Ta/5/4	Cintāmani-pūjā	Śambhūnātha	—
1725	Ta/24/6	,, pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	,, ,, ,,	—	—
1727	Ta/39/1	,, ,, ,,	—	—
1728	Ta/42/38	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D;H /Pkt Poetry	15.2×12 8 3 11 18	C	Old	
P	D, H Poetry	14 5×11 0 5 13 16	C	Old	
P.	D, H Poetry	40 9×15 8 2 40 15	C	-	
P.	D; H Poetry	35 0×18 0 71 11.30	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 0×13 3 113 10 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	19 0×17.8 4 13.20	C	Good	
P.	D, H Poetry	15 7×9 0 3 9 22	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	25 0×15 0 10 24 16	C	Good 1793 V S.	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 16 37 33	C	Old 1819 V, S	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 6 16 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 2 2 19 20	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintâmani Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pātha	—	—
1731	Nga/44,13/8	,, ,,	—	—
1732	Ta/35/1	,, ,,	—	—
1733	Ta/42/61	,, pūjâ	—	—
1734	Ta/42/13	,, ,,	—	—
1735	Nga/47/4/28	,, ,,	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣani ,,	Dyânatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	,, ,,	,,	—
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadâsa	—
1739	Ta/14//8	,, ,,	—	—
1740	Ta/42/59	,, ,,	Dyānatarâya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D,Pkt / H./Skt. Prose	20 0×12.0 1 23.19	C	1825 V. S	
P.	D, Skt Poetry	16 5×13 5 2 8 24	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	13 5×8.5 4 6 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	15.5×12 6 2 10 16	C	Old	
P	D, H. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32.3×00 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 7 12 31	C	Good	
P.	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 15 16 18	C	Old	
P	D, Skt / H. Poetry/ Prose	18 5×31 1 4 13 22	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	15 2×12 8 16 12 12	C	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lâkṣaní-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	,, ,, ,,	—	—
1743	Ta/38/1	,, ,, jayamâlā	—	—
1744	Ta/24/2	,, ,, Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālârcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājâdhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	,, ,,	—	—
1748	Nga/14/4	,, ,,	—	—
1749	Ja/45	,, ,,	—	—
1750	Nga/27/2	,, ,,	—	—
1751	Nga/26/2/13	,, ,,	—	—
1752	Nga/41/2/1	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	15 5×12 6 3 10 15	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	14 5×12 5 15 8 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	30 2×20 0 5 37 33	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	20 0×12 2 3 19 20	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	28 4×17 0 6 24 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×26 0 13 14 25	C	Good	
P	D, H / Skt Poetry/ Prose	15 0×11 3 36 11 33	C	Old	
P	D, Skt Poetry	26 0×17 7 8 20 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 3×17 5 2 19 13	Inc	Good	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry	14.5×0.11 17.9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	,,	—	—
1755	Nga/47/4/18	,,	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	,,	—	—
1757	Ta/14/4	,,	—	—
1758	Ta/16,1	,,	—	—
1759	Ta/18/2	,,	—	—
1760	Nga/48/19	,,	—	—
1761	Nga/48/23/1	,,	—	—
1762	Ta/35/2	,,	—	—
1763	Nga/44/10/16	,,	—	—
1764	Nga/48/12/1	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	22 5×15 0 5 12 36	C	Good	
P.	D, Pkt / Skt Poetry/ Prose	20 5×16 0 9 15 17	Inc	Old	
P	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 12 16 18	C	Old	
P.	D; H / Skt Poetry/ Prose	20 0×16 0 26 14 19	C	Old	
P.	D, Pkt / Skt. Poetry	15 2×12 8 10 12 16	Inc	Old	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	15 5×9.5 11 6.18	Inc	Old	
P	D, Pkt / Skt Poetry	11 0×11 0 13 13 19	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	16 1×10 1 8 8 26	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	16 7×1 9 12 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	15 5×12 6 7 10 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13.22	C	Old	
P.	D, Pkt Poetry	13 5×12 0 17 8 13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidhi	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharanendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	,, ,,	—	—
1770	Ja/51/11	,, ,,	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyānaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Giranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	,, ,,	—	—
1774	Nga/47/8/11	,, ,,	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/14 7	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt / Skt Poetry	32 3×19 0 3 30 37	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 0×15 0 1 27 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	13 7×12 0 89 10 13	C	Old	
P.	P, Skt Poetry	20 0×12 2 4 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1 13.35	C	Good	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Old	
P.	D, H Poetry	20 8×16 4 10 15 21	C	Good	
P	D, H Poetry	16 2×9.5 8 6 21	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 6 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 32	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 8×26 0 7 14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	—
1778	Nga/47/9/42	,, ,,	—	—
1779	Ta/14/39	,, ,,	—	—
1780	Ta/42/8	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	,, ,,	—	—
1782	Ta/18/6	,, ,,	—	—
1783	Nga/26/2/5	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	,, ,,	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D;Pkt /H. Poetry	14 5×11 0 6.9 17	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20.6×18 0 4 16.18	C	Old	
P.	D; Skt / Pkt Poetry	15 2×12 8 3 14 19	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt Poetry	11 0×11 0 4 13 19	C	Old	
P	D; Skt Poetry	30 3×17 5 3 16 16	C	Good	
P,	D, H. Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	14 0×11 7 12 10 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	30 2×20 0 1 37 33	C	Old	
P.	D; Skt Poetry/ Prose	25 0×15.0 68 21 17	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	28.4×17 0 2 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guna-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāni-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swami-pūjā	—	—
1792	Ja/63	,, ,,	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	,, ,,	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	,, ,,	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālini-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	,, ,,	—	—
1799	Nga/47/8/17	,, ,,	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Po ry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	22 5×15 0 6 12 31	C	Good	
P.	D, H. Poetry	20 8×16 3 8 15.17	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	16.7×12.8 11 8.22	C	Good	
P	D; Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12 8 7 12 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	25.0×15 0 5 20 21	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	17 3×13 0 7 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	20 8×16 3 2 15 17	Inc	Old	
P	D; H / Skt Poetry	32 3×19 0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhişeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikuṇḍa-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	,, ,,	—	—
1804	Ta/42/22	,, ,,	—	—
1805	Nga/44/10/18	,, pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	,, ,, ,,	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	,, " ,,	—	—
1808	Ta/24/1	Kanjikā-vratodyāpana	Paṅdita Naṅdarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kşmā-vanī ,,	—	—
1811	Ta/30/9	Kşetrapāla ,,	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	,, ,,	Subhacaṅdra	—

(Pūjā-Pātha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry	16 5×13 5 5 8 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 2 13 17	C	Old	Opening pages are missin .
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Good	
P	D; Skt Poetry	15 2×12.8 4 12 15	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 3×17 5 5 16 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 2×20 0 2 37 33	C	Old	
P	D, Skt Poetry	20 8× 0 0 23 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 1×15 6 26 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 0 33 37	C	Good	

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt Poetry	20 0×12 0 4 19 20	Inc	Old	
P	D, Skt. Poetry	20 1×15 6 3 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 6 33 37	C	Good	
P.	D,Skt /H, Poetry	17.3×13 0 3 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	14 5×11 0 15 13 16	C	Old	
P	D; Skt Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D, Skt poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	20 5×15 9 7 13 19	C	Good 1928 V S	
P	D, H Poetry	20 5×15 9 12 13 29	C	Good	
P	D, H Poetry	21 1×14 0 1 12 13	C	Old	
P	D; H Poetry	16 5×13.5 5 8 24	C	Good	
P.	D, Skt Prose	32.3×19.0 1 33 37	C -	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paidi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandiśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	,, ,,	—	—
1828	Nga/44/10/23	,, dvipa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	,, ,,	—	—
1831	Nga/36/1	,, ,,	—	—
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	,, ,,	—	—
1834	Ta/39/11	,, ,	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-trimśat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×00 0 4 16 16	C	Good	
P.	D, H Poetry	13 2×21 0 34 17.11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	14 6×14 1 23 12 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P.	D; H Poetry	20 8×16 3 28 16 21	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	26 0×16 7 20 19 16	C	Good 1913 V S.	
P	D,Skt /H Poetry	13 6×17 8 32 9 26	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	It contains chart of nine grahas
P	D;Skt /H Poetry	23 2×15 0 24 16 15	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	20 0×12 0 3 19 20	C	Old	
P	D, Skt, Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	10 9×9 6 25.7 13	Inc	Old	Page no. one to thirty seven are missing.

1	2	3	4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminâtha Jayamālā	—	—
1838	Ta/14/37	Nhavana-pūjā	—	—
1839	Ta/42/11	,, ,,	—	—
1840	Nga/47/4/37	,, kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvâna pūjā jayamâlâ	—	—
1842	Nga/44/9/1	,, ,,	—	—
1843	Nga/47/4/33	,, ,,	—	—
1844	Nga/33/4	,, ,,	—	—
1845	Ta/42/21	,, ,,	—	—
1846	Nga/44/10/27	,, ,,	Bhagavatidâsa	—
1847	Ta/14/30	,, ,,	—	—
1848	Nga/47/5/5	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	19 5×12 5 2 10 19	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15 2×12 8 9 12 18	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	P, Pkt. Poetry	16.5×16 0 3 12 19	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	11 0×10 5 8 11 12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing
P	D, Pkt / Skt Poetry	20 6×18 0 4 16 18	C	Old	
P	D; H. Poetry	22 7×15 7 2 18 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19.0 1 33 37	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	18 5×13 1 4 13 22	C	Old	
P	D, Skt / Pkt. Poetry	15 2×12 8 5 12 17	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	16 5×16 0 3 12 19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvâna-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvâna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	,, ,, ,,	—	—
1852	Ta/3/34	,, kalyânaka ,,	—	—
1853	Ta/3/37	,, ,,	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lâvanī	—	—
1856	Ta/39/4	Padmâvatī-pūja-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	,, ,,	Cārūkīrti	—
1858	Ta/42/35	,, ,,	—	—
1859	Ta/42/37	,, ..	—	—
1860	Ta/39/14	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32.3×19 0 2 33 33	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 7 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 2 15 18	C	Old	
P	D,H /Skt Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22 5×15 0 1 12 31	C	Old	
P	D,Skt /H. Poetry	17 8×13 7 24 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 8×13 0 4 14 12	C	Old	
P,	D, Skt Poetry	20 0×12 2 2 19 20	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 0×12 0 8 20 16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmâvatī-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	,, ,,	—	—
1863	Ja/51/9	,, vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayatī-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Panca kalyānka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Pañca-kalyānaka-pātha	Rūpacanda	—
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	,,	—
1868	Nga/14/2	,, ,, Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4/82	,, ,, ,,	—	—
1870	Nga/26/2/1	,, ,, dohā	—	—
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Panca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	17.3×13 0 5 13 13	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	14 5×11.0 4 13 16	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	32 3×20 1 5 13 35	C	Good	
P	D; H. Poetry	16 0×9 5 6.7 25	C	Good	
P	D, H Poetry	19 7×15 8 44 17 16	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×18 0 8 18 21	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3×19 0 3 30 37	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 8×26 0 24 14 25	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 6×18 0 28 16 21	C	Old	
P	D, H Poetry	30 3×17 5 21 16 16	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	25 0×15 0 17.28 21	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.8×16 3 4.16 21	C	Old	

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Panca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Panca-mangala-pātha	—	—
1875	Nga/25/13	,, ,, ,,	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	,, ,,	,,	—
1877	Ja/26/1	,, meru pūjā	—	—
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	,, ,,	,,	—
1880	Nga/44/10/21	,, ,,	—	—
1881	Ta/42/25	,, ,,	Bhūdhardāsa	—
1882	Nga/47/8/14	,, ,,	—	—
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Panca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 2 13 35	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	11 0×11 0 9 13 19	C	Old	
P	D, H Poetry	28 4×17 0 4 24 17	C	Good	
P	D, H, Poetry	14 5×11 0 14 8 19	C	Good	
P	D, H Poetry	22 0×15 0 22 18 14	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	22 5×15 0 4 12 31	C	Good	
P	D, H poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 2 13 22	C	Old	
P	D,Skt /H Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 13 15.17	C	Old	
P	D; H Poetry	32 3×19 0 0.33 37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32 3×20 1 1 13 35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeṣṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	,, ,, Pāṭha	—	—
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūṣana	—
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,	—	—
1889	Nga/33/3	,, ,, ,,	—	—
1890	Nga/14/1	,, ,, ,,	Yaśonandi	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	,, Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	,, ,,	—	—
1894	Ja/51/10	,, ,,	—	—
1895	Ja/51/5	,, ,,	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt Poetry	22 5×15 0 2 12 33	C	Good	
P	D, H Poetry	19 7×15 8 4 17 16	Inc	Good	
P	D; Skt. Poetry	25 0×15 0 15 23 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 5×15 9 8 13 19	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	23 5×14 5 18 16 11	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	20 8×26 0 39 14 25	C	Good	
P	D, H Poetry	12 0×18 3 4 17 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	13 7×12 0 14 10 14	C	Old	1 to 11 pages are missing.
P	D, H Poetry	16 5×16 0 5 12 19	C	Old	
p.	D, Skt Poetry	32 3×20 1 4 13 35	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	32 3×20 1 3 13 35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 2 16 18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratışṭhā-tılaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhâtmya	Vınodılala	—
1899	Nga/44/2	„ Saṁgraha	—	—
1900	Ja/19	„ „	—	—
1901	Ja/29/5	„ Vıdhâna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vâcana	—	—
1903	Ja/51/2	„ „	—	—
1904	Nga/48/19	„ „	—	—
1905	Nga/43/6/14	„ „	—	—
1906	Ta/3/1	„ „	—	—
1907	Nga/46/11/1	„ „	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpānjalı Pūjā	Lalıtakirtı	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	32 3×19 0 15 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 2 12 31	C	Good	
P.	D, H Poetry	18 5×13 5 102 13 26	Inc	Old	The Mss. is not in order.
P.	D, H Poetry	23 7×15 0 27 20 17	C	Good	
P	D; H. Poetry	21 1×14 0 119 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	36 0×19 0 5 12 44	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	32 3×20 1 4 13 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 8×14.0 16 10 15	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	17 3×13 0 5 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 0×10 9 16 8 18	C	Good 1866 V S.	
P	D, Skt Prose	36 4×19 0 1 12 39	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15 5 3 12 26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyānatarāya	—
1910	Ta/42/62	,, ,,	,,	—
1911	Ta/42/12	,, ,,	—	—
1912	Ta/3/31	,, ,,	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	,, ,,	—	—
1914	Nga/47/4/27	,, ,,	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	,, Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	,, Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	,, ,,	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛṣi-maṅḍala Pūjā	—	—

1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ṛṣi-mandala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	,, ,,	—	—
1923	Nga/13/1/2	,, ,,	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma ,,	Sikhara-Canda	—
1925	Ja/51/1	Sakali-Karana	—	—
1926	Ta/16/2	,, ,, Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	,, ,, ,,	—	—
1928	Nga/44/6	,, ,, ,,	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-marana	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāthā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	,, Vacanikā	,,	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarna	—	—

1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasarana	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	,, ,, ,,	—	—
19,7	Ja/33/6	,, ,, ,,	—	—
1938	Ta/3/14	,, ,, ,, Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	,, ,, Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	,, ,, ,,	—	—
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntinātha-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	12 3×16 3 14 13 14	C	Good 1974 V S	
P.	D, Skt Poetry	20 0×12 0 2 24 18	C	Old 1819 V S.	
P	D, H. Poetry	32 3×19 0 3 33 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	23 9×13 3 9 18 12	C	Good	
P	D, H Poetry	19 0×14 9 24 12 17	C	Old 1920 V S	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 8 12 36	C	Good	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 16 15 17	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 21 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 5 13 22	C	Old	
P	D, H Poetry	20 8×16 3 4 15 18	C	Old	
P	D, H Poetry	28 8×15 0 9 22 20	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22 5×13 0 5.18 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāṭhā	—	—
1946	Ta/3/24	,, ,,	—	—
1947	Nga/48/23/4	,, ,,	—	—
1948	Ta/42/4	,, ,,	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	,,	—	—
1952	Nga/46/11/2	,,	—	—
1953	Ta/42/27	Saptarṣi-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	,, ,,	—	—
1955	Ta/41	,, ,,	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt Poetry	20 6×18 0 3 16 18	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	22 5×15 0 1 12 00	C	—	
P	D, Skt Poetry	16 8×12 8 3 11 12	C	Old	
P.	D, Skt, Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17.3×13 0 7 13 13	C	Old	
P	D, Skt Poetry/ Prose	16 3×14 0 3 11 20	Inc	Old	Last page is missing
P	D, Skt poetry/ Prose	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	36 4×19 0 2 12 39	C	Good	
P	D. Skt. Poetry	32 3×19.0 3 3[illegible] 37	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	15 2×12.8 3 12 18	C	Old	
P.	D. Skt. Poetry	12 5×8.6 5 9 19	Inc	Old	
P.	D.Skt H Poetry	[illegible]0 3×17 5 4 16 16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	,, ,,	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	,, ,,	—	—
1960	Nga/47/4/36	,, ,,	—	—
1961	Ta/14/29	,, ,,	—	—
1962	Nga/14/8	,, ,,	—	—
1963	Ta/3/20	,, Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣana	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	,, ,,	—	—
1967	Ta/35/3	,, ,,	—	—
1968	Ta/14/6	,, ,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	20 0×12 0 2 24 17	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	14 5×11 0 7 9 17	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	20 6×18 0 5 16 18	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15 2×12 8 5 12 13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	20 8×26 0 4 14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 5×15 0 2 12 33	C	Good	
P,	D; Skt Poetry	20 8×16 3 16 16.15	C	Old	
P	D; Skt Poetry	20 8×26 0 6.14 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 5×13 1 7 13 22	C	Old	
P	D; Skt Poetry	15.5×12.6 5.10 16	C	—	
P.	D, Skt. Poetry	15 2×12 8 6 12.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	,, ,,	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	,, ,,	—	—
1972	Ta/3/26	,, ,,	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	,, ,,	—	—
1774	Nga/48,18/2	,, ,,	—	—
1975	Nga/48/12/3	,, ,,	—	—
1976	Ta/42/6	,, ,,	—	—
1977	Nga/26/2/9	,, ,,	—	—
1978	Ja/29/3	,, ,,	—	—
1979	Ja/51/6	,, ,,	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D Skt. Poetry	11 0×11 0 4 13 19	C	Old	
P.	D,Skt /H Poetry	20 6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 0 7 9.17	C	Good	
P.	D, H Poetry	22 5×15 0 7 12 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 8×12 8 6 11 12	C	Old	
P	D; Skt Poetry	16 0×10 1 5 9 21	C	Old	
P	D; Skt Poetry	13.5×12 0 6 8.12	C	Good	
P	D, Skt Poetry	32 3×19 0 1 33 37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	30 3×17 5 3 16 16	C	Good	
P	D, H. Poetry	21.1×14 0 3 12 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 3×20 1 1.13 35	C	Good	
P.	D, H. Poetry	22 5×15 5 2 12 [illegible]	C	Good	

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakra-pūjā	—	—
1982	Ta/20/2	,, ,,	—	—
1983	Nga/27/4	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—
1984	Ta/42/43	,, ,, ,,	—	—
1985	Nga/44/14	Śikhara-vilāsa-pūjā	—	—
1986	Nga/28/3	Sila-vattisi	—	—
1987	Nga/47/6	Sinhasana-pratiṣṭhā	—	—
1988	Nga/41/tha	Śitalanātha-pūjā	—	—
1989	Ta/20/3	Snāna-pūjā-vidhi	—	—
1990	Nga/14/9	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1991	Ta/35/4	,, ,, ,,	—	—
1992	Ta/38/3	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D; H. Poetry	18 6×11 4 113 22.22	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H Poetry	10.9×9 6 40.8 11	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D; Skt. H	18 5×30 6 6 21 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D, H Poetry/ Prose	15 5×9 5 9 8 26	Inc	Old 1942 V. S	Opening tweenty pages are missing.
P	D, App. Poetry	14 6×14 1 7 13 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18 7×14 5 20 14 16	C	Old 1955 V S.	
P.	D, H Poetry	14 5×11 0 6 13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10.0×00 0 26.8 12	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	20 8×26.0 5 14 5	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	15.5×12 6 4.10.15	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kārana-pūjā	—	—
1994	Nga/44/10/13	,, ,, ,,	—	—
1995	Nga/47,4/22	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
1996	Ta/3/28	,, ,, ,,	—	—
1997	Ta/42/7	Ṣodaśa-kārana ,,	—	—
1998	Ta/39/17	Solaha-kārana ,,	—	—
1999	Ta/42/58	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2000	Nga/29/1	,, ,, ,,	—	—
2001	Ja/44	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā	—	—
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā	—	—
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pātha	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	15 2×12 8 4 12.16	C	Old	
P.	D, Skt. Poetry	18 5×13 1 6 13 22	C	Good	
P	D, H Poetry	20.6×18 0 5.16 18	C	Old	
P.	D,Skt /H. Poetry	22 5×15 0 5 12 31	C	—	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 0×12 0 3 21 18	Inc	Old	
P.	D, H Poetry	32 3×19 0 2 33 37	C	Good	
P	D, H Poetry	12 0 19 7 33 15 15	C	Good	
P	D, H. Poetry	18 0×11 5 4 7 18	C	Good 1965 V S	
P	D, H. Poetry	16 5×16 0 6 12 19	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	22 0×15 0 2 12 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	[illegible] [illegible]	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vrndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāthā	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthankara pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D. H Poetry	25.0×15.0 4 19 21	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P	D, H Poetry	29.8×15.5 111 14 31	Inc	Old	Closing para is missing.
P	D, H Poetry	20.8×16.3 7 15 18	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25.0×15.0 5 28 25	C	Good	
P	D; Skt Poetry	25.0×15.0 29 25 16	C	Good	
P.	D, Skt. poetry	25.0×15.0 5 28.20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page
P.	D. Skt Poetry	16.5×16.0 6 12.19	C	Old	
P.	D.H /Skt Poetry	23.3×19.0 64 18 23	C	Good 1952 V. S.	Published.
P	D, H. Poetry	22.6×13.8 100 12 [illegible]6	C	Good 1893 V. S	Copied by [illegible] Sharma
P.	D, Skt. Poetry	30.2×20.0 16 [illegible].33	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	[illegible] [illegible]	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26,2/10	Vidyamāna bisa-Tirthankara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	„ „ pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	„ „ „	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt / Pkt Poetry	30 3×17,5 5,16 16	C	Good	
P.	D: H Poetry	29.0×17.0 49 21 16	C	Good 1929 V. S	
P.	D, Skt Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D: H. Poetry	14 5×11.7 12 11 22	C	Good	

१००२. अष्टान्हिका कथा

Opening : श्री जिन सारद गणधरपाय, ... – ।
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाषूं आगमनें अनुसार ॥१॥

Closing : ए व्रत जै नरनारी करैं, ते भवसागर से तरे ।
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहै इह सार॥५३।

Colophon : इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१००३. अष्टान्हिका कथा

Opening : यादव वसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार ।
कहो अष्टान्हिका सार ॥१॥

Closing : तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरषनिधि शिखामण सारी ।
भणो सुणो नरनारी ॥१६॥

Colophon : इति नदीश्वर व्रत कथा सपूर्णम् ।

१००४. अठाईकथा

Opening : पचपरमेष्टी चरन कूं धारौ निस दिन ध्यान ।
सो मेरी रक्षा करो जातैं होय कल्यान ॥

Closing : श्रावग धर्म सुजान, वतन लालपुर जानियो
भैंरौ कही वखान, भव्य जन सुनियैं चित्त दे ॥७६॥

Colophon : इति श्री भैंरौं जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

१००५. आदित्यवार-कथा

Opening : रिसहणाह प्रणमौं जिनंद जा प्रसाद मन होय आनद,
प्रणमौं अजित प्रणामैं पाप दुख दालिद भव हरैं सताप ॥

Closing : कर्म्म खिप्यो कारण मत भई तव यह धर्मकथा मन ठई ।
मनधर भाव सुनैं जो कोय सो नर स्वर्ग देवता होय ॥

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing . कमक्षय कारण इह मनि भई तत या धर्म्म कथा अरनई ।
मूर्ति धरि भाव सुणै जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा सपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमौ भव्यपयौज दिनेस ॥

Closing यह व्रत जो नरनारी करै, सो वहु नहि दुरगति परै ।
भाव सहित सुरनरसुख लहै, वार वार जिन जी यो कहै ॥२५

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, क्र० १००७ ।

Closing : देखें, क्र० १००७ ।

Colophon : इति श्री रवि कथा जी लघु तमाप्तम् ।

१००९. आदित्यवार-कथा

Opening : प्रथम सुमिरि जिन चौवीस, चौदह सै त्रेपन जु मुनीस ।
सुमिरौ सारद भक्ति अनत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महत॥१॥

Closing : रविव्रत तेज प्रताप भई लछिमी फिरी आई
कृपा करि धरनेंद्र और पद्मावती माई ।

जहाँ... ...तहाँ रिद्धि सब छोर जू पाई
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई।
पढे सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,
तिनको धरनेंद्र पद्मावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon : इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम् ।

१०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस पागी।
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वहै प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास।
ताम शिष्य बोलै चग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रग ॥

Colophon : इति आकाश पचमी कथा

१०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening श्री जिनसासन पय अनुसरुं गणधर निज वदिन वहु।
साध सत प्रणमू पाय, जे हुयी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing : देखें—क्र० १०१०।

Colophon इति श्री आकाश पचमी व्रतकथा समाप्तम् ।

१०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening : स्वामी चद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण धरि मस्तक हाथ।
लाछन दस्यौ चद्रमा जासु काया धवल अधिक प्रगासु ॥१॥

Closing : यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मगल भई।
पढें सुनें जो करे बखाण, सो पावे सिवपुरि पद थाण ॥
॥११६॥

Colophon : इति श्री श्रुतपचमी कथा भवसुदत्त चरित्र सपूणम् । सवत् १८४८ वर्षे मिति पौस वदि ६ श्री पार्श्वचद्र सूरि गछी श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमल्लेन श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुरमासकृतम् ।

१०१३. चंदकथा

Opening : सिद्धि सुबुद्धि दातार तुव गौरीनदकुमार ।
चद्रकथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ॥

Closing : उबुध्ररेषा अचपला जोग, तीजो और परमला भोग ।
... ... आपणो राज ॥

Colophon : इति चदकथा सपूर्णम् ।

१०१४. चतुर्दशीकथा

Opening : देखे क्र० ६६८ ।

Closing : देखें— क्र० ६६८ । ।

Colophon : श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening : विक्रमादित्योरूप परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।
वादयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ॥

Closing : चतुर्वचना महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीय भोगानुभवन कुर्वन् शर्म्मणाकाल महाश्रेयो युक्तो अभूत् ।

Colophon . इति चउबोली कथा सपूर्णम् ।

१०१६. दानकथा

Opening : देव नमौ अरहत सदा अरु सिद्ध ममूहन कौ चितलाई,
सूरि अचारज कौ प्रमौ, प्रणामौ जु उपाध्याय के नित पाई ।

साधुनमौं निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,
नि पच गुरु एत मैं सुनमू इनकै सुमरैं भवताप नसाई
॥१॥

Closing : दान कथा पूरण भई, पढै सुनै सब कोय।
दुख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख होय ॥७६॥

Colophon : इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत सपूर्णम्।
देखे—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २६।

१०१७. दशलाक्षणी कथा

Opening : धर्म जु दश लाछन कहै तिनको करूं वखान।
जो जिय निहचै चित्त धरैं ताकौ होय कल्यान ॥१॥

Closing : इह विध व्रत नर जो करैं, पावैं शिव पद थान।
बूढै दुख ससार के, भैरौ कहै बखान।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।

१०१८. दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाथ प्रणमू सदा गुरु गनधर के पाय।
तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ॥१॥

Closing : सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखमार।
शुक्ल तिथ त्रययोदशी सुभ रविवार विचार ॥६१॥
भूला चूका होय जो लीजौ सुकवि सुधार।
मोह दोस दीजौ नही करी जु भव हितकार ॥६२॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८।

१०१९. दशलाक्षणी-कथा

Opening : प्रथम नमन जिनवरनैं करूं, सादर गणधर पद अनुसरूं।
दशलाक्षिण व्रतकथा विचार, भाषू जिन आगम अनुसार।१॥

Closing : भट्टारक श्री भूषणधीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म सानसागर सुविचार ।।५५।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening : देखें— क्र० १०१६ ।

Closing : देखें—क्र० १०१६ ।

Colophon : इति श्रीदसलाक्षणी व्रत कथा सपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : देखे—क्र० १०१६ ।

Closing : देखें—क्र० १०१६ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : — ....
पचामृत अभिषेक उदार ।
जिन चौविस सतरमो भडार,
अष्ट विध पूजा करो परकार ।।१७ ।

Closing : देखें—क्र० १०१६ ।

Clolophon : इति श्री दसलाक्षीणी व्रत-कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening : नमों देव अरहत पद, नमों सारदामाय ।
नमौ गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मगल दाय ।।

Closing : दरमन कर पूरन भयो मनोवति कौ सुखदाय ।
तास कथा फल पायकै शुभ गति लई सिवदाय ।।५७०।।

Colophon. इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।

विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है। लगता है कि पद इसी से सयुक्त है अत. इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

१०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अयोध्यानगरे राजासिंहसेनो राज्य करोति ।
तन्मंत्रीबुद्धसेनो धर्म्मन्पाय मत्र करोति ।
राजा दुराचारासत्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधात ।

Closing : ... ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।
सदैव धर्मबुद्धि' करणीया । सर्वलोकस्वायमुपदेश. ।

Colophon. इति धर्मपाययुक्तयो. कथा सपूर्णम् ।

१०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पच परम गुरु वदन करू, ताकरि मम अव सब हरू ।

Closing श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार ।
भाषासार बनायके सुखत खुशियाल अपार ।।१४३।।

Colophon इति सपूर्णम् । सवत् १६४८ भादवा सुदी २ लिखाइत षेमराज जी लिखित मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मदिर मध्ये ।

१०२६. दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमों श्रीवीरजिनद वदों सदगुरु पद अरविंद ।
जासु प्रसाद कहू सुभकथा, गोतम गणधर भाषी यथा ॥

Closing श्रेणक आगल गोतम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम ।
ए दुधारस व्रतनी कथा चद भनै मै भाषी तथा ।।४३।।

Colophon : इति दुधारस जी की कथा समाप्तम् ।

१०२७. हरिवशपुराण

Opening : सिद्ध सपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्त दर्शनज्ञान चरित्रप्रतिपादनम् ॥

Closing : सकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ॥
द्वीज सुहपावै लहो त सुह पावेहि तुह्य हु जनए ॥

Colophon : इतिश्री हरीवस पुराण की भाषा चौपाई बध सपूर्णम् ।
देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४६ ।

१०२८. हरिवशपुराण

Opening : देखें, क्र० १०२७ ।

Closing · ······· और अरिष्ठा पाचवाँ नरक उस विषे इद्रन की भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धो की कोस ४ । और प्रकीर्णको की कोस सात ७॥ २१॥

Colophon अनुपलब्ध

१०२९. हरिवंशपुराण

Opening महावीर बहुश्रुत विराजै श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करैं और वा मडप के समाप चार मडप ·· ·· ।

Closing · · देवते मनुष्य होय निरजन पद पावैगी सातवी पटरानी गौरी ··· ·· ।

Colophon · अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening श्री अरिहत नमो सदा, अरी न आवै पास ।
अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ॥

Closing : उपर रचा मुखराज ते, श्री सीमधर देव ।
भाव भगति चित लायके सब जन करते सेव ।५२३।।

Colophon . इति जबूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचद आरामपुर नगरे स्वगृह सवत् १९३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्या ७ तिथौ रविवासरे निजपठनार्थं पुन. भव्यजीव पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१०३१. लब्धिविधानकथा

Opening प्रथम नमौ श्री जिनवर पाय दूजै प्रणमौ सारदमाय ।
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाषू जिन आगम छै यथा ।१।।

Closing श्री भूषण गणनायक वीर ‥ ‥ होमी सीव ।।५६

Colophon : इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२. महावीर-पुराण

Opening · इण विधि कहिनी जबु कुमार सुनि सो कहसी निरधार ।
मागी के षिजतू इकनारी मरनू चाहिलयौ ततकार ।२१।

Closing : यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,
राखौ भवि उरके विषै सुरग मुक्ति पदपाय ।।६३।।

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठिलक्षणमहापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतानुसारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषाया श्रीवर्द्धमानपुराण परिसमाप्तम् । इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्वत् १८६९ शाके १७३४ मासोत्तमेमासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे पुस्तकमिद पूर्णम् । रघुनाथ सर्मेणे लेखि पट्टनपुरगायघाट मध्ये निवसति । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।

१०३३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचौ है,
गावत मगलाचार वधु कुल मे सवके जो उछाह मचौ है,

तेल चढावन को जुबती अपने-अपने कर थाल सचो है,
नेग करैं सब व्याहुन को ग्रर मंडप चित्र विचित्र खिचो
है ।१।।

Closing :
नेम कुमार ने जो गली थो दिन छपन लो छदमस्त रहो है,
केवल ज्ञान भएँव प्रभु को तब आठवी भूत महानुमहो है,
सात सैं वर्ष विहार कीदो उपदेश,ते धर्म महानुमहो है,
निर्वाण गये मुनि पाज सैं छपन लाल विनोदिने संग
गही है ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जी काव्योहुला सपूर्णम् ।

१०३४. नि.कांक्षित-गुण कथा

Opening :
प्रनमूं आदि जिनेन्द्र को फुन गुरु गौतमराय ।
सारदमाय प्रसादतैं करू कथा मन लाय ।।१।।

Closing :
नि कांक्षित गुन की कथा भैं है कही वखान ।
जो निहचैं कर पाल है, पावैं शिव पद थान ।।

Colophon : इति नि कांक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६।।

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening : देखे, क्र० १०३६ ।

Closing :
कार्टोमघ कलावरचंद, श्री भूषण गुरु परमानन्द ।
तस पद पंकज मंधु करतार, ज्ञानसमुद्र कथा कहै
विचार ।।६३।।

Colophon : इति निशल्याष्टमी कथा ।

विशेष— इसमे निर्दुख सप्तमी कथा भी है ।

१०३६ निर्दोषसप्तमी कथा

Opening
श्री जिनचरण कमल अनुसरू, सारद निज गुरु मनमेधरू ।
निरदोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिनह गम छे यथा ।१।।

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते नर भवसागर उत्तरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इमि कहै॥४१।

Colophon : इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८ ।

१०३७. पंचमी कथा

Opening : वंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।
भव सागर तारण तरण, शरण हरण पर पीर ॥१॥

Closing : हस्तिकंतिपुर में यह रची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।
यह विधि व्रतपाले जो कोई, सो नरनारी अमर
पद होई ॥८०॥

Colophon : इति पचमी कथा समाप्ता ।

१०३८ पार्श्वपुराण

Opening : मोहं महातमं दलन दिन तप लक्ष्मी भरतार,
ते पारस परमेम हों उ सुमति दातार ।१॥

Closing : सवत् सत्रह सै समै और नवासी लीय ।
सुदि अषाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ॥

Colophon इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के वास्ते लेखक लाला चदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोनो के रोज पूरा हुआ ।
देखें जै० सि० भ० ग्र० क्र० ६१ ।

१०३९ पार्श्वपुराण

Opening बीज सरिव फलभोगवै जो किसान जगमाहि ।
त्यो चक्री नृप सुख करै धर्म विसारै नाहि ॥

Closing : सोलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।
भिन्न असो लहौ तीर्थङ्कर पद हेत ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०४०. रत्नत्रयकथा

Opening : श्री जिन चरण कमल नमूं, सारद प्रणमी अघ निगमूं,
गौतम केरा प्रणमू पाय, जेहथी बहुविधि मगल थाय ।।१।।

Closing : यामै मणि माणिक्य भडार पद-पद मंगल जयजयकार ।
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलै सुविचार ।।४५।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० १०३।२

१०४१. रत्नत्रयकथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।

Closing : देखें, क्र० १०४० ।

Colophon : इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखे, क्र० १०४० ।

Closing : देखे, क्र० १०४० ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रसकथा संपूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४० ।

Closing : कुजवरनि से ~ · होए।
अंत दुनीया ले नर सोऐ।
पुण्या तणो भेच भडार
पर भव पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

Colophon : नहीं हैं।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदायक पार्स जिनेंण, प्रणमों भव्य पंयोज दिनेश।
सुमरो सारद पद अरविंद, दिनकर वत प्रगटो सानद ।१।

Closing : करम रेख कारणें मति भइ, तंव इहु धर्म कथा अरु ठइ।
मंनि धरि भाव सुणें जो कोंइ, सो नर स्वर्ग देवता
होइ ॥१४८॥

Colophon : इति रविव्रत कथा।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I. क्र० १०५।

१०४५. रविव्रतकथा

Opening : देखें, क्र० १०४४।

Closing : यह व्रत जो नरनारी भाँनु कीरति मुनिवर यों
कहै ॥२४॥

Colophon इति रजिव्रत कथा सपूर्णम्।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening · चोवीसंतीर्थंकर जी कू नमस्कार कर मैं रोटतीज कथा
व्रत कहिए है। इह ज्वूद्वीप है तामैं भरत क्षेत्र है तामैं आर्य खण्ड
है, धन्यापुरी नामाँ नगरी बसै है।

Closing देखें, क्र० १०४५।

१०४९. रोहिणी-कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज भवदधि तरण जिहाज जग ।
भव्य नहै गुण साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing : रोहिणि व्रत पाल जो कोई, सो नर नारी अमर पद होई ।
मन वच काय शुध जो धरै क्रमते मुक्ति वधु सुख भरै ॥

Colophon : इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

१०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज कौं वदो मन वच काय ।
ता प्रसाद भाषा करौ सुनौ भविक चित लाइ ॥

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी सोय।
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ॥७६॥

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम्।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०

१०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौवीसो जिन को नमौ श्री गुरु चरण प्रभाव ॥
रोटतीज व्रत की कथा कहौ सहित चित चाव ॥

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ॥

Colophon ; इति सम्म्पूर्णम्।

१०५२. रोटतीज-कथा

Opening - इह जबू द्वीप हैं तामैं भरत क्षेत्र है, तामैं आर्य खड है, धन्यपुरी नाम नगरी वसै है।

Closing और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करै भलि गति पावै।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा।

१०५३. रोटतीज-कथा

Opening : देखे, क्र० १०५२।

Closing : खेदे, त्र० १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखें, क्र० १०५२।

Closing : देखें, क्र० १०५२।

Colophon : इति रोहनीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सलूनाकथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,
प्रथम महाव्रत धर्म सुनाहि मनाईए ।
प्रथम महामुनि सेव सुधर्म धुरधरी,
प्रथमधर्म प्रकाशन प्रथम ती र्थ करो ॥

Closing : मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनै जो कोय ।
कथा उपजै नित्त में दिन मगल होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री विनोदीलालकृत श्री सलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. शीलकथा

Opening : पार्श्वनाथ परमातमा वदो जिनपद राइ ।
सोही धर्मचाल न करो कहो कथा मनलाइ ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढे सुनै नित जोई ।
दुख दरिद्र नासै सवै तुरत महा सुख होई ॥५६॥

Colophon : इति श्री सील कथा भारमलकृत संपूर्णम् ।

१०५७. शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमौं श्री जिनदेव ~ जिनराज अनूप ।१।

Closing : जो दखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।
पवित अरथ विचारिकै पढियो शुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon · इति सील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—यह भी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है । अत: इसका भी लेखक भारामल्ल ही होना चाहिए । दोनो ग्रन्थो को

पढने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८।

१०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीवितादप्यधिकत्वेन पालितो नियमोऽपुनर्भवाय भवेत्।

Closing : ततोऽनर्थमूल त विप्र शीलवती सत्कृत्य बहुमानास्पद-कृतवान्।

Colophon इति शीलवती कथा सपूर्णम्।

१०५९. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसी नमू, सारद प्रणमि अधनिगमू।
निज गुरु केरा प्रणमू पाय, सकल सत प्रणमी सुखदाय।१।

Closing : यामे सकल भोग सयोग, टलै आपदा रोग वियोग।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानसागर कहै सार।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम्।

१०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखे, क्र० १०५९।

Closing : देखे, क्र० १०५९।

Colophon : इति सोलहकारण कथा सपूर्णम्।

१०६०. शोडशकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९।

Closing : देखें, क्र० १०५९।

Colophon : इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथम नमूं श्री जिनवर पाय, प्रणमू गणधर सारद माय ।
सद् गुरु पद पंकज मन धरुं, सार कथा वारसनी करू ।।१।।

Closing : रोग सोग संतापह टलै, मनवांछित फल पूरण मिलै।
श्री भूषण सुत दाए लहै, ब्रह्मज्ञानसागर हम कहै ।।

Colophon : इति श्रवणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्र च सद्गुरुं निजमानसे ।
श्रीपालचरित वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ।।

Closing : जीवराजेन रचित श्रीपालचरित शुभम् ।
प्रीतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादत ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यवद्धे चतुर्थ प्रस्तावः । शुभं भूयात् ।
स० १९०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मगलवारे लिपी
कृतेय ऽ तिः श्री दि० मपुर मध्ये चउम्मासीस्थिता. ।

१०६४ श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीयै हिय मे ध्यान ।
केवल ग्यान प्रकाश कर दूर हरण अग्यान ।।१।।

Closing : कहै जिनै हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा शुंणिज्यो रे ।
गुण पंचासे ढाले गुणिज्यो निज पति कठिण लु णिज्यो रे ।।

Colophon : इति श्रीपाल महाराजा चौपई समाप्तम् ।

१०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धरु सद गुरु नैं निति वंदम करू ।
साधु सत पद वदो सदा, कथा कहू दशमीनी मुदा ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, तें भवसागर वेगैं तरे ।
छाडैं पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरैं ॥

Colophon : इति सुगध दशमी कथा ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

१०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening : सुगंध दशमी व्रत सुनि कथा, वर्द्धमान प्रकाशी यथा ।
पूरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम ॥१॥

Closing : हेमराज वीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही ।
मनवचकाय सुनैं जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३८॥

Colophon : इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता ।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखै, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगंधदशमी कथा जी समाप्तम् ।

१०६८ सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखे, क्र० १०६५ ।

Closing : देखे, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगंध दशमी कथा समाप्तम् ।

१०६९. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसांबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियस्तस्यपुत्र-
द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्देवसेनः ।

Closing : सूरसेनोपितया सहससारिक सुखमनुभूय
प्राति स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥
आदायालोचितदु खकर्म्मा · ··· आससाद् ॥

Colophon : इति मित्रे स्वरूपसूरसेन कथा सपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening : वीर जिनंद समोस राजी वद मेघकुमार,
सुण देसण वइरागीउ जी इह ससार असार रि माई उन
मति देह मुझ आज ॥१॥

Closing : तप तन सो सीतहागइ जी
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी
ते पामसि भव पार हु स्वामी अम्ह० ॥

Colophon : इति वीर जिणद समाप्त ।

१०७१ विष्णुकुमारकथा

Opening : देखें— क्र० १०५५ ।

Closing : विष्णु कुमार मुनिद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।
भव्य जैन भाव सो कही विनोदीलाल मुनि उपसर्ग निवा-
रनी कथा सुनो ।
जो कोई करूना उपजै चित मे दिन दिन मगल होय ।

Colophon : इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।
देखे, जै० सि भ० ग्र० I, क्र० १५१ ।

१०७२. अरिहंतकेवली

Opening : श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वर्द्धमान महोत्सवम् ॥१॥

Closing : वैरिणा वैरमुक्तश्च मित्रबाधवहेतवे ।
धर्मवृद्धिर्भवेस्तुभ्य-सर्वथानात्रसशय ॥३।

Colophon : इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।
इति अरहत केवली सपूर्णम् । सवत् १६१७ मिति चैत्रकृष्ण १० । बुधवासरे लिप्पीकृत ब्राह्मण रामगोपाल वासी मौजपुर कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभ भूयात् ।

१०७३. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमद्ध सिद्ध सुरसेण वदियं ।
सिरसा णमिऊण महावीर वोच्छ आराधनासार

Closing : अमुणियतच्चेण इमं भणिय ज पि देवसेणेण ।
सोह त चमुतिदा अग्घिऊ जइ पवयण विरुद्ध ॥

Colophon : इति आराधनासारसमाप्त: ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० १६५ ।

१०७४. आराधना प्रतिबोध

Opening : श्री जिनवर वाणी नमेवि गुरुनिर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि ।
कहुं आराधना सुविचार सक्षेपिसारो उद्धार ॥१॥

Closing : जे सुणें नरनारी जे जाइ भवनेपार ।
श्री दिगम्बर इति कह्यो विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

Colophon : इति आराधनाप्रतिबोध सपूर्णः ।

१०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening : बहुरि ज्ञानकू अल्पाक्षर करि प्रधान
कहया तोहू, अल्पाक्षर तै पूज्यपणा प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing : चरतो भव्यनि उर विषै स्याद्वाद उज्जास।
यातै निज परतत्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त।
शुभ भवतु। कल्याणमस्तु।

१०७६ आत्मानुशासन

Opening : वीर प्रगम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतिताऽखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रवर्ष आत्मानुशासनमह प्रवर प्रवक्ष्ये ॥

Closing : श्री नाभेयोजिनोभूयाद् भूयसे श्रेय सेसवः।
जगद्ज्ञान जलेयस्यद ध्याति कमलाकृति ॥

Colophon : इनि श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशामन काव्य प्रवध सपूर्णम्।
लिखित पडित परमानेदेन टकौत नामनगरे, सवत् १९२८ का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्या गुरुवासरे उपाध्याय विद्ध वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं परमानद शुभभूयात्। श्रीरस्तु।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १७२।

१०७७ बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहसनाम सिन्दूर प्रकरधाम वावनी सवैया वेद निरनै पचासिका।
त्रेसठि सिला का मारग ना करम की प्रकृति कल्यानै मदिर
मो[?]दन मुक्तावलि[?]

पैंडीकर्म्म छतीसी पिव्वइ ध्यान वतीसी आध्यात्म वतीसी
पचीसीग्यान रासिका ।
सिव की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म कागति
षोडस निवासिका । १॥

Closing , सत्रह में एकोतरे समै चैत सितपाख ।
दुतिया सो पूरन भई यह वनारसी भाप ॥

Colopohn : इति वनारसी विलास सपूर्णम् । शुभंभूयात् संवत् १८६०
माघीसमे मात्तभाद्रमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे ।
पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मणे लेखि । पट्टनपुर मध्ये आलमगज
निवास । पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छसै
(३६००) लिखि आरे मे बाबू परमेष्ठी सहाय का ।

१०७८. बारह भावना

Opening : पच परम पद वद हूँ, मन वच सीसनिवाय ।
भावै वारह भावना, निज आतम लव लाय ।।

Closing भूला चूका होय जो, भव्य जन लेह सुधार ।
मोह दोस दीजै नही, भैरो कहैं बिचार ।।
श्री जिन धरम न विसारियै ॥

Colophon · इति श्री वारह भावना जी समाप्तम् ।

१०७९ बारह भावना

Opening : राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार ।
मरना सबको एकदिन अपनी अपनी वार ॥१॥

Closing जांचे सुरतरु देय सुख चिंतन चिंता रैन ।
विन जाचे विन चिंतये धर्म सकल सुख देन ॥

Colophon इति बारह भावना सम्पूर्णम् ।

१०८०. बारह भावना

Opening : आदिदेव जिनपें नमो, वदो गुरु के पय ।
बरनौ बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥

Closing : जहाँ सवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ वध ।
इतनी कला विवेक की और वात सवध ॥१५॥

Colophon : इति ।

१०८१. वीस तीर्थंकर नामावली

अक्षरमात्र पदस्वरहीन व्यजनसधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

Closing : नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-वीर्य जी ॥२०॥

Colophon : इति श्री वीसतीर्थ कर के नाम सपूरण ।

विशेष— इसी मे भविष्यत चौवीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत वहुरि श्री सिद्ध नमिज्जै ।
आचारिज उवज्झाय तासु पदवदन किज्जै ।
साधु सकल गुणवंत सतमुद्रा लखि ददो ।
श्रावक प्रतिमा धरन चरन नमि पाप निकदो ।
सम्यत्कवत स्वसुभावधर जीव जगत महिहो ।
जित तित नित त्रिकाल वदत भविक भाव सहित सिर नाईनित ॥१॥

Closing : वहुत वात कहियै कहायनी यहै जीव त्रिभुवन को धनी ।
प्रगट होइ जब केवल ग्यान शुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon : इति श्री भैयाभगौतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । मासा-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम् । लिख्यत काशीमध्ये राजमंदिरमीतला घाट देवि क दरवाजा । लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण । पुस्तक लाला शकरलाल जी लिखाईत पठनार्थं उपकारार्थं श्री भगवान समर्पणमस्तु । ग्रथ सख्या ४८०० ।

मगल लेखकाना च पाठकानां च मगलम् ।
मगल सर्वलोकाना भूमिपतिर्मंगलम् ॥
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १८६ ।

१०८३. ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क्र० १०८२ ।
Closing : देखें, क्र० १०८२ ।
Colophon : इति श्री भैयाभगौती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम् । श्री संवत् १८६७ । शाके १७३२ मासोना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ । १५ । भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई । लिख्यत गौड ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमदिर सीतलाघाट । पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थं परोपकारार्थम् ।
यादृष पुस्तक ' न दीयते ॥१॥
लेखिनी पुस्तिका ·· ·· मवंता ॥२॥
जले रक्ष थले · — पुस्तकं ॥४॥
ग्रथ सख्या ४८०० चारहजारआठ सौ
पत्र संख्या–१६८ ॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
मगल लेखकाना च पाठकानां च मगलम् ।
मगल सर्वलोकानां भूमिभूपतिर्मंगलम् ।

१०८४. चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनामि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing : णवकोडि — ... अकिट्टिमा वंदे ॥

Colophon : इति चैत्य वंदना ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२७ ।
(२) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमह तत् चैत्यानि वंदे ॥

Closing : जन्म-जन्म-कृतं पाप जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥१२॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

Opening : स्मारं स्मारं स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगत्तम् ।
कारं कारं क्षमाभोजे गौरव प्रणिंति पुनः ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयाया· व्याख्यानं वीक्ष्यप्राक्तनम् ।
अलेखि सुगम कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥

Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । ग्रथाग्रमनुमानतः श्लोका सप्ततिः
॥६०॥

विशेष—इसमें चतुर्मास के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीवाली-व्याख्या, सौभाग्य पचमी व्याख्या, ज्ञानपंचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष— दशमी व्याख्या, मेरु तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening : गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिनाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम ३ मापक चौदह स्थानक जीवम जाननाम्।

Closing : जैथा पाषाणतैं सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण नि: कलक शोभै त्यों अपनी अनत शक्ति करि विराजमान केवलग्यान ॥२॥ केवल दर्शन ॥२॥ अनत वीर्य ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥ चैतन्य भानु ॥५॥ ... परमात्मा कहीये।

Colophon : यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप सक्षेप मात्र वर्णन जिनवानी अनुसार कथन कर पूरन किया।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० १०४।

१०८८ चौदह गुणस्थान

Opening : तिसे मुक्ति के स्थान जाने को इह चौदह सीढी है सो प्रथम मिथ्याते गुन स्थान ही मे यह जीव अनादिकाल से पडा आया है तहाँ कछु भी इसको अपना भला बुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सो मिथ्यात का पाँच प्रकार का भेद है—

Closing : जन्म मर्न इत्यादिक ससार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर को प्राप्त हुआ।

Colophon : इति श्री चौदहगुणस्थान की चरचा सम्पूर्णम्। समाप्तम्। शुभमस्तु।

Closing : … — … तेजकाय वायुकाय विर्षेभी उपजे है ऐसे चौवीस दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार … आदि ग्रन्थनि ते सोधि करि लेवे ।

Colophon. अनुपलब्ध ।

१०९३. चौबीसठाणा

Opening : गइइंदिय च काए जोए वेए कषायणागेय ।
सयमदसणलेस्सा भव्विया समत्तसण्णिआहारे ॥१॥

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।
वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।
पंक्षी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon : इति श्री चौवीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दोहा— करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।
लिख्यौ जाति अति कवित्त तैं सब जानत आसानें ॥
शुभभवतु ।

१०९४ चर्चा-संग्रह

Opening धर्म्माधुरंधर आदि जिन, आदि धर्म्म करतार ।
जमू देवअघरण तैं सर्व विधि मंगलसार ॥१॥

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अप्छरा नृत्य करैं ऐसें सर्व मिलि सताईस कोड होय छै ऐसा जानना ।

Colophon : इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६२ ।

१०६५. चर्चासमाधान

Opening : जयोवीरजिन चद्रमा उदैअपूरव जासु ।
कलिजुग कान्दि पाप मे कीनो तिमिर विनास ॥१॥

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।
यहु सब्व मगलकरण प्रियकारणि कुमारि ॥१६॥

Colophon : इति चरचा समाधान ग्रथ भूधरदास कृत समाप्त ॥ सवत् १८६३ । माघ शुक्ल ११ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० क्र० १९६ ।

१०६६. चरचानमाधान

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखे, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इद पुस्तक लेखनीयम् ।

१०६७. देशास्कंध

Opening : नम: सर्वज्ञया तेण कालेणं तेण समएण समणे भगवान महावीरे ।
... . — - ... ।

Closing : वम्सावा सम्पादृया सवियाण कप्पई निगन्थाण
वा ... .. तथ्थेववायंणवेत्तय ॥

Colophon : इच्चेय संगच्छरिय थेरकप्प अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता वीरित्ता किहित्ता आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गथा तेणेव भवग्गहेणेणं सअत्थ सङभय सवागरण ... ...
इत्ति वेमि पज्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासु असकधस्स अट्ठम-

ज्झयण ग्रथाग्रं श्लोक १२१६ सवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाह्या श्रीमत् वृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचद्रसूरिणादाना शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज द्रंगे श्री।

१०६८. दोनवावनी

Opening : वंदो अरि जिनद व्रत तीरथ परगारयौ।
णमो श्रेयंस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यो ॥

Closing : रतनत्रै आभरन विराजै वीरनद गुरु गुन समुदाय।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय।
तव श्री पद्मनंदने कीनै दान प्रकाश काव्य सुखदाय।
पद्मनंद कनाड दानवावनी द्यानत राय ॥

Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम्।

१०६६. दोनवावनी

Opening : देखें, क्र० १०६८।
Closing देखे, क्र० १०६८।
Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम्।

११००. दा-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमी यामी सुगुरु पसाय।
दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद ॥१॥

Closing : दान शील तप भावना रचौं संवाद भणतां गुणंता भावसुरे।
रीद्धि समृद्धि सुप्रमादीरे धर्म हीयेधरो ॥१॥

Colophon : इति श्री दान शीलतप भावना सम्पूर्णम्।

११०१. देवागम

Opening : देवागमनभोयान चामरादिविभूतय ।
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : जयति जगति ' ' ··· समुपासते ॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्रपरमार्हताचार्यविरचित देवागमसूत्र सपूर्णम् ।

दोहा : श्री देवागम ग्रथ को पौष कृष्ण नव जान ।
··· ··· ···· एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देस मझार ॥२॥
सो जयवतो नित रहो जब लग सूरजचद,
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकद ॥३॥
शुभ भूयात् । शुभम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४५४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

Opening श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर सम्प्रदाय में केतेक वर्ष अगनि के पाठी रहे ।

Closing संप्रदाय में जथावत आचार का तो अभाव ही है जो कही होय तो दूर क्षेत्र मे होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो भगनी के महात्म तैं वर्तै है ।

Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रंथ

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथित वर धरम सरण जयवत ॥

Closing : स्याद्वाद् आम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष ।
त्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विजय ध्याम निर्धार ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्न सपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : .... दोऊनिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : ... .. एकेन्द्रिय तो सर्वत्र है ही, अर कर्मभूम ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनन्तर अविनासी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिकू प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाव की उपमाकूं धरे उदय होणहार भगवान रूप सूर्य ताकि अभिलाषा करता निरंतर निरषता सतापरमउदयरूप अतुलधैर्य को धारताभया ।

Colophon : श्री श्री श्री ।

११०६. धर्माष्टक

Opening : मैं देव निति अरिहंत चाहूँ सिद्ध कौं सुमरण करौं ।
मैं सुर गुरु मुनीं तीन पदमय साध पद हिरदै धरौ ।।१।।

Closing : यह भावना उत्तम सदा भानु तुम सुनो जिनराज जी,
तुम कृपानाथ अनाथ द्यानत दया करनी न्याव जी ।
दुष्ट कर्म विनास ज्ञान प्रकास मोकूं कीजिए,
करि सुगति गमन समाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये ।।८।।

Colophon : इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

११०७. धर्मपरोक्षा

Opening · पणमूं अरहत देवगुरु निरगथ दयाधरम ।
भवदधितारन अवर सकल मिथ्यात मणि ।।

Closing : भनत गुनत यह भाधरि अहनिमि होइ आनन्द ।
धरममुण्यातै उपजै यामै परमाणन्द ।।७५।।

Colophon · इति श्री धर्म्मपरीक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ सवत् १८७१ । शाके १७३६ पौष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तकमिद सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening मगल लोकोत्तम नमो श्री जिन सिद्ध महत ।
साधु केवली कथितवर धरम सरण जयवत ।।१।।

Closing । श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ केवलि प्रभु के परम अवगाढ ।
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ।।

Colophon · नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening · देखे—क्र० ११०८ ।

Closing · धर्मरत्न की ज्योति फैलो चहु दिस
जग तम शिव मारग उद्योत जयवतो वर्तो सदा ।।

Colophon । नहीं है ।

१११०. धर्मरहस्य

Opening : पचनि मे कहिये परमेश्वर पचहु अक्षर नामदिये ते।
उ नमकार सवै सिव ऊपर पचनि ते-उतपत किये ते।
लोक अलोक त्रिकाल मे नाहि कोई तीन की समदेप हिये ते ।१।

Closing : धर्म पचास कवित्तउ भंज्जत भगत विराग स्वज्ञान कथा है।
आपनि औरनि को हितकार पढो वरमार सुभाव तथा है।
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आप विषैरत होय वारधि शब्द मथा है।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त बावन सम्पूर्णम्।

११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ...
... ... सुमिरत जाके पाप नसाय ।।१०।।

Closing : गुन थोर ... . बल वीर ।।१०१।।

Clolophon : इति श्री धर्मसार भट्टारक श्री सकलवीरत उपदेशक पंडित सीरोमण दास विरचिते श्री पंचकल्यानक महिमा सपूरन लिखत धरमसनेही नै। इति श्री धरमसार ग्रथ सपूर्णः। सवत् १८३२। शाके १६९७ मीति वैसाष शुदि सोमवासरे सपूर्ण.।

१११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीव दव्व जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठ।
देविंदविंदवंद वंदे तं सव्वदा सिरसा ।।

Closing : दव्वसगहमिण मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा।
सोधयतु तणु सुत्तधरेण णेमिचदमुणिणा भणिय ज ।।६०।।

Colophon : इति श्री नेमिचदविरचित द्रव्यसग्रह समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २१३ ।

१११३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क्र० १११२ ।
Closing : देखे—क्र० १११२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय इति श्री द्रव्यसग्रह जी समाप्तम् ।

१११४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वर प्राणपरित्यागो न वर मानखडनम् ।
प्राणक्षये क्षण दुख मानखडे दिने दिने ॥६॥
Closing : देखे—क्र० १११२ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय. । इति द्रव्यसग्रह समाप्त

१११५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।
Closing : सवत् सत्रेह सौ इकतीस । माघ सुदी दसमी शुभ दीन ॥
मगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसग्रह प्रति करु प्रणाम ॥
Colophon : इति श्री द्रव्यसग्रह कवित्तबध सपूर्णम् । सवत् १८७१ पौष शुक्ल एकादस शनिवार को लिखा ।

१११६. द्रव्यसग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

Closing : .... विरूद्ध भावटाली करी साचो सूत्र भाव कस्यो छइ जिणइ ॥

Colophon : इति धर्माधर्मी पव्वतनु वालावोधे द्रव्यसग्रह सूत्र समाप्तम् ।

१११७. द्रव्यसग्रह

Opening : तहाँ प्रथम या ग्रथ की पीठिका अैमे जो या ग्रथ मे तीन अधिकार है तहाँ पहिला तो षट्द्रव्यपचास्तिकाय की प्ररूपणा का अधिकार है तहाँ आदिगाथा तो मगल अर्थ है तहाँ एक गाथा उक्तं च सव इद्र के सख्या का हैं। ।

Closing : मगल श्री अरहत वर, मगल सिधि सुसूरि ॥
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सव दूरि ॥१॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसग्रह ग्रथ समाप्ता. ।

१११८. द्रव्यसग्रह

Opening : देखे, क्र० १११२ ।
Closing : देखे, क्र० १११२ ।
Colophon : इतिद्रव्यसग्रहसूत्र समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिणवर भासि .. ... सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥
Closing : .... रयणत्तय गुणु ॥
Colophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening : ॐ नि सगोह जिनानां सदनमनुपम त्रीपरीतैतिभक्त्या,
स्थित्वागत्वानिषिद्य चरणपरिणतोत्त सनैर्हस्तयुग्मम् ।

भाले संस्थाप्यवध्या मम दुरितहर कीतिय. शक्रवद्यम्,
निदादूर सदाप्त क्षयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ।।

Closing : पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाभिनालोभिना,
रागद्वेषमलीमशेपमनसादु खकर्म्मय निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेद्रभगवत् श्रीपामूलेंधुना,
निदादूरमह जजामि सतत निवृ त्तये कर्मणाम् ।।

Colophon : इति ईर्यापथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्वर्गच्युत्तानामीहजीवलोके चत्वारिनित्यमुदय वमति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवार्च्चन सद्गुरु सेवन च ।।

Closing : बह्वाशी नैव सतुष्टो, मायालुप्तप्रपचक: ।
मूढस्य पलालशृचैव तिर्यग्योन्या गतोनर. ।।

Colophon : इति गतिलक्षण समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदो ज्ञानानंदकर नेमिचंद गुनकद ।
माधव वंदित विमलपद पुण्य पतोनिधिनंद ।।१।।

Closing : अपर्याप्त मैं मिश्रगुणस्थान नाही तातै कृष्ण लश्या का मिश्र
गुणस्थान विषै देव विना तीन गति है-इत्यादिक यथा सभव
अर्थ जानिर्यत्रनिकरि कहिए है, अर्थ सोजानना · ·· ।

Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयनाम पचसग्रह ग्रन्थ की जीव-
तत्व प्रदीप का नाम सस्कृत टीका कै अनुसारि सम्यग्ज्ञान
चद्रिका नामा भाषा टीका ·· — · ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० २४४ ।

११२३ ग्यान के आठ अग

Opening : विंजन अथसममंह । — ' वसुअगयं ।।

Closing : ऐसे ग्यान के आठ अग हैं सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य हैं।

Colophon : इति ग्यान के अष्टअग सम्पूर्णम् ।

११२४. हणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजीय जीव वणस्सई कालू पुग्गभाच्चेव ।
सव्वमलोगाग्गास छच्चेव अणतया भणिया ॥

Closing : इयचारियाइ सुणेवि — ... — ... ...
.... — राहवेण सइत्तुंअडालेहिं ॥

Colophon : इति हणवंत अणुप्रेक्षा. समाप्तम् । पंडित वछराजू लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमं ।
प्रातरेवं समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥१॥

Closing : — संध्योपासनं ॥८॥ चेति सप्तकर्म्मणि क्रमेण कुर्य्यादिं॰ नित्यदाह नमो हैते भगवते संसार सागरनिगानानाय अर्हं जलनिर्वपामि स्वाहा ।१॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ।

११२६ जिनगुणसम्पत्ति

Opening : संस्तुवे सर्वदा देवं गौर्वीशां गोपतिं परम् ।
दर्शनादर्प्पन पश्यन् त्रैलोक्यं द्विगुणायते ॥१॥

Closing : इति व्रतमहिमान विदितपुराण मकिलिख्य भो विबुधजनां. ।
कुरुत सलीलं व्रतमतिरम्य शिवसौख्य यदि प्राप्नुमनाः ॥७॥

Colophon : इति जिनगुणसम्पत्ति विधान समाप्त. । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।
शुभमस्तु ।

११२७. जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ।।

Closing : अद्भुत अतिसै तुम धरे वीतराग निज लीन ।
पूजक सहजै उच्चह्वै निंदक सहजै हीन ।।७।।

Colophon. इति जिनमहिमा सपूर्ण ।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

Opening . हिवराणी पद्मावती जीवराश षिमावै ... ।
... ... – जे मैं नीक विराधिया ।।

Closing : रामवयराडी जे सुनै ... ... तत्तकाल ।।३२।।

Colophon : इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२६. ग्यानपचीसी

Opening : सुरनरतिर्यग्योनि मैं निरहै निगोदिभवत ।
महामोह की नीद मै सोए काल अनत ।।१।।

Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।
आप समझावै आप कू जपै कर्म के हेति ।२५।।

Colophon : इति श्री ज्ञान पचीसीसपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

Opening : पिंडस्थ पदस्थ च रूपस्थ रूपवर्जितम् ।
चतुर्द्धाध्यानमाम्नात भव्यराजीवभास्करै. ।।१।।

Closing : अक्षर पदकू अर्थ रूप ले ध्यान मैं,
जैं ध्यावै उम_मत्र रूप एकता नमैं,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज नैं।
जे या मैं ह्व लीन लहै निज काज मैं ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषै पदस्थध्यान का प्रकरण समाप्त भया। श्रीरस्तु।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening : पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविहूसण महावीरं
सम्मत्तरयणणिलय पयडिसमुकित्तण वोच्छं ८६ ॥१॥

Closing : पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुक्खमग्गविग्घयरो।
अज्जेइ अंतराय ण लहइ ज इच्छिय जेण ॥

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्म्मप्रकृतिग्रथः समाप्तः।

देखें, जि० र० को०, पृ० ७२।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरजन परम गुरु परम पुरुष परधान।
वन्दौ परम समाधिमय भयभंजन भगवान ॥१॥

Closing : यह परमारथ पंथ गुन, अगम अनंत बखान।
कहत बनारसी दास इम जथा सकत परवान ॥३२॥

Colophon : इति ध्याने बतीसो संपूर्णम्।

११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : तिहुवणतिलयं देव वंदित्ता तिहुअणिदपरिपुज्जम्।
वोच्छं अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ॥

Closing : मुनि श्रावक के भेदतैं, धरमदोय परकार।
ताको सुमि चिन्तो सतत, गहि पावो भवपार ॥

Colophon : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७ संवत् १९३८ वार मंगल।
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening : दृष्टं येन चराचरं केवलज्ञान चक्षुषा।
प्रणमामि महावीरं वदे कार्ता प्रवक्षते ॥१॥

Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवाः ।१३। पचविधनिर्ग्रंथा. ॥१४॥ त्रिविधा सिद्धा ।१५॥ द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ॥१६॥ अष्टौरेसिद्ध-गुणाः ॥१७। द्विविधा सिद्धा. ॥१८॥ वैराग्य चेति ॥१९॥

Colophon इति लघुतत्वार्थं सम्पूर्णम्।
विशेष — इसके पहले हेत्र मे ही लिखा है कि भव 'अर्हत्प्रवचन' कहेगे। अतः इसका नाम भी यही होना चाहिए।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० २८०।

११३५. लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने।
नम श्रीवर्द्धमानाय वर्द्धमानजिनेसिने ॥१॥

Closing : एवं सामायिक सम्यक् सामायिक खडित ॥
वर्तनामुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयतेर्मनः ॥१४॥

Colophon . इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम्।

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवचो भक्तया सिद्धान्प्रणमत. सदा।
मिद्धकार्य शिव प्राप्त: सिद्धि ददतु नोऽव्ययम् ॥१॥

Closing : देखें, क्र० ११३५।

Colophon : इति लघु सामयिकम्।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६।

११३७. लश्या स्वरूप

Opening : आर्तरौद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जित·।
निर्दयोवैरसयुक्त ·· कृष्णलेश्याधिकोनर ॥१॥

Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुहुए तिग्यि गई।
पीताए मानुसो होई, पो माए देव गइ सुक्काए पावई सासयं ठाणं

Colophon : इति लेश्यास्वरूपं सम्पूर्णम्।

११३८. लीलावती प्रकीर्णक

Opening : प्रीतिं भक्तजनस्य यो जनयते विघ्न निविघ्नंस्मृर्तस्तंवृंदारकवृंदं वंदितपदं नत्वामतंगाननम्।
पाटीं सदगणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिपदास्फुटा संक्षिप्ताक्षरकोमला-मलपदैर्लालित्यलीलावती ॥१॥

Closing : ··· ··· एक का बोलबाला रहा रहन दे और सोलह रहन दे ऐसा अंक राखै और मिटाय डालै। अब एकका भाग सोलह मै देइ पाये सोलह दश अंक के सोलह दाडियं पाये।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितायां गणित -- लीलावत्यां प्रकीर्णकानि समाप्ता।

११३९. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रनम सुमरि अरहंत को सिद्धन को धरिध्यान ।
सरस्वती सीस नमाइकैं, वंदौ गुरु जु ग्यान ।।

Closing : पत्र अनूपम रच्यो यह ईं प्रथिनि की सारिथ ।
पृरिग ग्रथि पढ़हु भवि अधिक जतन सो राखि ।।

Colophon : इति मिथ्यात्व षण्डन सम्पूर्णम् । शुभ सवत् १८७९ मीति चैत्र सुदि ।६। रविवासरे उपदेश भट्टमपद्मसागर जी लिखित अनश्रावक आगरा नगर ।
श्रीरस्तु ।

विशेष— इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है ।
देखें, जै० लि० भ० प्र० I, क्र० २८५ ।

११४०. मोक्ष मार्ग

Opening : मंगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भए अरहंतादि महान् ।।

Closing : जैसे बादरे कै भी सूक्ष्म पदार्दि अग होहिं । परन्तु जैसे मनु क्षेते मि न होहे । तैसे मिथ्या दृष्टिन कै भी व्यवहार रूप निसकितादि अग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्यक्कै होइ तैसे न हो है ।

Colophon : नहीं है ।

११४१. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : इक्क समे रुचिवंत जो गुरु अष्टैहै सुनमल्ल ।
जो तुम अदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ।।१।।

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनको यह उपदेश ।
कहत बनारसीदासयो मूढ न समुझैलेस ॥२२॥

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्णः ।

११४३. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गेप्रवृत्यस्य वीतरागो ददातु मैं ।
समाधिवोधिपार्थेय यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ॥

Closing : स्वर्गादैश्र्यविचित्रनिर्म्मलकुले संस्मर्यमानाजनैः,
भूत्वा मुक्तिविधायिनों वहुविधिं वाक्षानुरूप फलैम् ।
भुक्त्वा भोगमहर्न्निशं परकृत स्थित्वा क्षणमडले,
पात्रावेशविवर्जनामिवमृत सतो लभतिस्तत ॥

Colophon : इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २७० ।

११४४. मुक्तिसूक्तावली

Opening : देवलोक ताको घर आंगन राजा ऋद्धि सेवंतसुपाय ।
ताके तन सौभागआदि गुन केलि विलास करि नित आय ॥
सो नर उतरन भवसागर निरमल होइ मोक्षपद पाय ।
द्रव भाव विधि सहित बनारसि जो जिनवर हरजिमन लाई
॥१॥

Closing : सोनहसै इगयालवै रितुप्रीतम येगाद्य ।
सोमवार एकादसी कर नक्षत्र मितपाद ॥१०४॥

Colophon : इति सुक्तिमुक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्रीः संवत् १६६८ वर्षे कार्तिकादिप्रतिपदाया शनिवासरे श्री
आगरानगरे लिखित निजमेन केनचित् । लेखक पाठकयो
शुभमस्तु । इति श्री ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार संवत् १६६१ है लेकिन
Colophon मे १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening : ब्राह्मी ॥१॥ चन्दनबालिका ।२। भगवती राजीमति ।३।
द्रुपदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। .. .. .. ।

Closing : अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल,
सवि पाप प्रणासै वासै मंगलमाल ।
इण सुमरण संकट दूरि टलइ ततकाल,
जपै जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ॥७॥

Colophon : इति श्री नवकार महात्म्यसिज्झाय समाप्तम् ।

विशेष — इसमें सोलह सतियो के नाम भी दिये गये हैं ।

११४६. नयचक्र

Opening : गुणानां विस्तरं वक्ष्ये .... — ।
नत्वावीरंजिनेश्वरम् .. — — — ।

Closing : तत्र सश्लेषरहित वस्तुसंबंधविषय· नयचरितासद्भूतव्यवहार
यथा देवदत्तस्य धनमिति श्लेषसहितवस्तुसंबंध .. यथा
जीवस्यशरीरमिति ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धतिः । श्री देवसेनपडितविरचिता नयचक्रपरिसमाप्ताः ।

११४७. नयचक्र

Opening : देखें, क्र० ११४६ ।

Closing : देखें, क्र० ११४६ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपडित विरचिता । इति श्री नयचक्र समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन । इति श्री ।

११४८ नयचक्र वचनिका

Opening : वदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

Closing : सत्रह् मै छत्तीस के सवत् फाल्गुन मास ।
उजली तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलास ॥

Colophon : इति श्री नारायणदास हेमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २९६ ।

११४९. नयचक्र वचनिका

Opening : देखें, क्र० ११४८ ।

Closing : देखें, क्र० ११४८ ।

Colophon : इति श्री नयचक्र पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत सामान्य वचनिका सपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचन का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वदि ६ । बुधवार । संवत् १९९२ मुः । चंदेरी ।

११५०. निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चपानवासमपुज्जजिणणाहो ।
उज्जत णेमिजिणो पावामणि णुत्तो महावीरो ॥१॥

Closing : जोइपठपतियाल णिव्वुई ककपीभावसुद्धीए ।
भुंजिनरसुरसुक्ख पठइ सो लहइ णिव्वाण ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् । शुभ ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहुँ काण्ड निर्वान की, भाषा विविध वनाय ॥१॥

Closing : सवत् सत्रह मैं एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री शुभ इति ।

११५२ पचविंसतिका

Opening : सव्वमलमायंउ मिद्ध सिद्धगति हरगिदनदपुज्ज ।
णेमि ससिगुरवीर पणमिय तिय सुद्धिभवमहण ।

Closing : मोहाकुमुइणि चद भवदुहसायरण जाण पत्तमिण ।
धम्म विलाससुहद भणिद जिणदासवम्हेण ॥२६॥

Colophon : इति धर्मव्यसतिका लिख्य सम्पूर्ण करी ।

११५३. पच परमेष्टी

Opening : इस जीव के ससार मे पाँच ही परमइष्ट है । तातै इनको पच परमेष्ठि कहिए । तिनका स्वरुप सामान्ययतै लिखिए । ।

Closing : वस्त्र का त्याग ।१। दतवन का त्याग । खड़े होय अहार ले ।१। लघु भोजन एक वेर ले । एव सप्त ए अठाईस गुन साधु महाराज जी का कहुया ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्चा स्वरूप सपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening : चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्य सिद्धात्मने नमः ।

Closing : परमपयगयाण भासओदिव्वकाउ,
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।
विसयसुहरयाण दुल्लहो जोहु लीए ।
जयउ सिवसरूवो केवलो कोप्टिवोहो ।।३४६।।

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश, समाप्त ।

११५५. परमात्मप्रकाश

Opening : देखें, क्र० ११५४ ।

Closing देखे, क्र० ११५४ ।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश समाप्त । ग्रन्थाग्रं ४५१ श्लोक अनुष्टुप श्री । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयो. शुभ भूयात् ।

११५६. परीक्षामुख वचनिका

Opening . श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।
शिवपथ वरतायो जगति, वदो मै तसु पाय ।।१।।

Closing : कोटि जीव तुल्य कौन गणना मे गणिये तौउ हमें इस ग्रंथ की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट विषेकिछुथा

११५८. प्रवचनसार

Opening : सर्वव्याप्यैकचिद्रूपस्वरूपाय परात्मने
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानंदात्मने नम ॥१॥

Closing : व्याख्येयं किल विश्वमात्मसहितं — एक पर चित् ॥

Colophon : इति तत्त्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुभ अस्तु । संवत् १६९२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे ५ शनीवासरे काष्टासंघे नदीतट भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति भट्टाराजकीर्त्ति तस्य शिष्य ब्रह्मधन जी स्वहस्तेनालिखितम । शुभ भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ३१२ ।

११५९. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५८ ।

Closing : देखें—क्र० ११५८ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वय सिद्ध करतार करै निज करम सरम ·· ···
· · ··· एक विध अजरअमर

Closing : ··· मूर्तिक पदार्थ को जानै है अति चचल है अनतज्ञान की महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह ···· ·· ।

Colophon : नही है ।

११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्र' प्रणम्याहमकलक: समन्तत. ।
प्रायश्चित प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing ; प्रायश्चित य. करोत्येश देव जाते दोषे तत्प्रशात्यर्थमार्यः रास्ट्रस्यासौ भूमि: यस्यात्यनोपि स्वस्ताचास्यावस्थित श तनोति ॥९०॥

Colophon : इति अकलकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थ संपूर्णम् ।
देखें--जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१ ।

११६२. पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening · वर्द्धमान जिनवर नमूं, मन वच सीस नवाय ।
फुन गुरु गोतम कौ नमू, जातै पातक जाय ।१॥

Closing · सत्रै सै इक्यानवै, पोष शुदी तिथ दूज ।
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन धानी कू पूज ॥
जे नर सुर घर गावही, तथा सुनै मन लाय ।
जिनवानी सरधा करै अंत सिद्धगत जाय ॥६॥

Colophon · इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहात्म्य

Opening : पूरव पुन्न कियौ जिन सोय, तेरा वस्तु जु प्रापत होय ।
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मैं उपजौ आय ॥१॥

Closing । शक्र समान तपस्या करै, दुष्ट शादमीसै तप करै,
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौ नमस्कार मम सोय ॥८॥

Colophon । इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम् ।

११६४. सम्यक्त्व कौमुदी

Opening । परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजान ।
नमी सिद्ध परत्मा जग परकासक भान ।

Closing : चद सुर पानी ···· ···· तब लग जैन प्रकाश ॥४६॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा सादा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदय भूप अर्हदास सवादिकसर्गं गमनचरनतनाम एकादश परिच्छेद । इति श्री सम्यक्त्व कौमदी सम्पूर्णम् । सवत् १८४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मगल श्रीपार्श्वचद्र सूरि गच्छे श्री १०८ श्री चद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत्तं ज्ञासिरदारमल्लेन श्री सफातपुर नगरमध्ये ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० J, क्र० ११४ ।

११६५. समयसार गाथा

Opening : वीतराग जिन नत्वा ज्ञानानंदैकसपद. ।
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यसज्ञिकाम् ॥१॥

Closing . सुद्धोसुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदो पुणजेहुअपरमे ठिदा भावे ॥१५॥

Colophon : इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लपन पगसिव मग
दरसी ।
निरखत नयन भविक जल वरखत हरषत अमित भाविक
जन दरसी ॥
मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत
सवदरसी ।
सजल जलद तन मुकुट सपत फन करम दलन जिन नमन
वनारसी ॥१॥

Closing : मर्मसार आतमदरव नाटक भाव अनत ।
सोहै आगम नाम मैं परमारथ विरतत ॥७२७॥

Colophon · इति श्री परमागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम् । श्रीरस्तु ।
कल्याणमस्तु । शुभभवतु ।
देखे, जै० सि० भ० ग्रे० I, क्र० ३४२ ।

११६७. समयसार नाटक

Opening : देखै, क्र० ११६६ ।
Closing · देखै, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्।
संवत् १८८८ भादो शुक्ल तेरस सोमवासरे जवाहरमल्ल स्वाध्याय हेतवे ।

११६८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।
रचन्द्र वसु सति अवधि आदत्र सित सनिवार ।
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यान विश्राम ।
पटत सुनत सुपग उपजै भावित आतमाराम ॥२॥
संवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखितं महुकमरामेण पठनार्थमात्मारामः । शुभभवतु ।

११६९. समवशरण

Opening : समोसरण मंडित नमों परमागम जिनरूप ।
सुरनरपति वंदित चरण, महिमा अगम अनूप ॥१॥

Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत ।
अहिनिसि मंगलकाजे पढत सुनत सब कहूकरी ॥३०॥

Colophon : इति श्री समोसरणभेद ।

११७०. समुद्घात

Opening : सोतसमुद्घातै कहै वेदना समुद्घातै ॥१॥ कषाय समुद्घात ॥२॥ मारणांतिक समुद्घात ॥३॥ वैक्रिय समुद्घात ॥४॥ तैजस समुद्घात ॥५॥ आहारक समुद्घात ॥६॥ केवलि समुद्घात॥७॥

Closing : अट्ठानीस योगन एकसौअट्ठाईस धनुष सण्ठ्योत्तर अगुल इतनी जबूद्वीपकी परिधि ।

Colophon : नही है ।

११७१. षट्दर्शन

Opening : शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।
मीमासकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

Closing : रायपवानी ६ पुनीनचावन १० लोचन वडत्रा ११ घरघरमी १२ कवित १३ राधा १४ वृषभनत्रातन १५ पेवनैवाई १६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७२. षट्पाहुड

Opening : काऊण णमोयार जिणवरवसहस्सवद्धमाणएस ।
दसणमग्गवा वोच्छामि जहा कम्म समासेण ॥

Closing : अरहतो सुद्धभत्ता .... पुणा केरिय अण ॥४८॥

Colophon इति श्री कुदकुदाचार्य विरचित शीलप्राभृतं समाप्तम् । सवत् १७६५ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे तिथौ द्वादशी १२ मानवार श्रीराम ।

११७३ षट्पाहुड

Opening : देखें, क्र० ११७२ ।

Closing : एव जिण पण्णत्त मोक्खस्स य पाहुड सुभत्तीए ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासय सुक्ख ॥

Colophon : इति श्री कुन्दकुदाचार्यविरचितं मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम् ।

११७४. षट्लेश्याभेद

Opening : कृष्ण नील कापोत ने पीत पदम शुक जान ।
शुभ अशुभ जु कर्म के ए षट् भेद बखान ॥

Closing यह षट् विध लेश्या कही सुनो भविक दे कान ।
अशुभ जान निर वारियै भैरो कही बखान ॥

Colophon : इति श्री षट् लेश्या आरती ।

११७५. सामायिक

Opening . देखें क्र० ११३६ ।

Closing . देखे, क्र० ११३६ ।

Colophon इति सम्पूर्णम् ।

११७६ सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भंते इरिया वहियाए विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे ।

Closing : गुरुव: पातु वो नित्य · मोक्षमार्गोपदेशका ।

Colophon : इति सामायिक समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६५ ।

११७७. सामायिक

Opening । देखे—क्र० ११७६ ।

Closing । देखे—क्र० ११७६ ।

Colophon · इति सामायिकम् ।

११७८. सामायिक

Opening : देखें, क्र० ११३६ ।

Closing : देखें—क्र० ११३६ ।

Colophon : इति लघु सामायिक सपूर्ण । आप्यं १०८ दीजे ।

११७९. सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्द्धूतकलिलात्मने ।
सालोकाना त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ।।१।।

Closing : अथय पौर्वाह्निकदेववदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावदनास्तवसमेतम् ।

Colophon : इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८० सामाचार

Opening : वदौ देव युगादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।
सुमरु देवी सारदा, रिद्ध सिद्ध वरदाय ।।१।।

Closing : मंगलं भगवान वीरो मगलं गौतमो गणी ।
मगल कु दकु दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मगलम ।।

Clolophon : इति सामाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

११८१. साततत्त्व

Opening : जीव ।१। अजीव ।२। आश्रव ।३। बंध ।४। संवर ।५।
निर्ज्जरा ।६। मोक्ष ।७। एहि सात तत्त्व है इनमे पुन्य और
पाप मिलिके नौ पदारथ कहिए हैं ।

Closing : इस पाप का सरूप विचार कर कै त्यागना जोग है। एही नौ पदारथ समान रूप कहा। विशेष .... निर्वर्त होय है ।१।।

Colophon : इति श्री सातत्तत्व नव पदार्थ की चरचा सक्षेप मात्र जनाया है सो सपूर्णम्। शुभ भवतु।

११८२. सिद्धान्तसार

Opening : तीन जगतपति जिनकौ धर्मराज के नायक शिवसुखदायक है। इस पचगुरु कौ प्रणाम करि कै आवै भवन उर्दधिकौ कथन सुनौ भाषु अवै ।।१।।

Closing : जे इह मध्य सुलोक विर्षे जिनराज के मंदिर है अघखण्डन।
श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोक्ष गये करिकर्म विखण्डन।
जेइ सर्बभकी अनजाणये सबकौ करि भूषित आनन।
तै इय सायक देहु मुझै करि जोरि करौ सबकौ नित वदन ।२५।।

Colophon : इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रथे भट्टारक श्री सकलकीर्ति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषाया मध्यलोक वर्णनोनाम दसमोध्यायाधिकार ।।१०।।

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरव विवोध।
.... बनारसि जोरि कर ।।

Closing : सोरह मै इक्यानिवै रितु ग्रीष्म वैशाष।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मितपाप ।।३।।
नामसुक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शतम्हि लोक परवान सब इति ग्रंथ विस्तार ।।४।।

Colophon : इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् । संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ वृहस्पतिवासरे लिखित यति लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधमदासजी ।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य है तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है ।

११८४. सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि ··· ··· ' पार्श्वप्रभो-पातु वः ।

Closing : कि जातं वहुभिः करोति हरिणी ···· यानिर्भया ॥

Colophon : इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पंडित परमानन्देनं मिति चैत्र कृष्णे पचम्या शुक्रवासरे रात्री श्री जिनचैत्यालये संवत्सर १९२८ का । शुभं भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२६ ।

११८५ सिंदूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening देखें, क्र० ११८३ ।

Closing देखें, क्र० ११८३ ।

Colophon : इति सिन्दूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६. शीलव्रत

Opening : समजुपीय चतुर — ··· ··· परनारिसौं ॥१॥

Closing : सीयल गुण कहणकौं ·· ···· वषाणं ॥

Colophon . इति श्री सील कडषा समाप्तम् ।

११८७. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलदान — — सहज सुभाय ॥१॥

Closing : ·· एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार । कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादि का वरमन संपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ संपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३८३ ।

११८८ श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणत. प्रलय प्रयाति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing : अक्खरपयत्थहीनं मत्ताहीन च जं मए भणियं ।
तं खमंउ ··· दुक्खक्खयं दितु ॥

Colophon : श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३७९ ।

११८९. श्रावक प्रतिष्ठाक्रमारोपण

Opening : देखे, क्र० ११८८ ।

Closing : देखे क्र० ११८८ ।

Colophon : इति श्रावकप्रतिक्रमारोपणम् ।

११९०. श्रावक व्रतसंध्या

Opening : अपवित्रः पवित्रो ······ ·· समुच्यते ॥

Closing : श्रीमत्सिद्धजिन प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।
वदे श्री जिनसेवक प्रतिदिन संध्या त्रिकाल कुरु ॥

Colophon . इति श्री सध्या सपूर्णम् ।

११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखे, क्र० ११६० ।

Closing : देखे, क्र० ११६० ।

Colophon इति जैनसध्या सपूर्णम् ।

११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening · वारा व्रत श्रावग तनै, तिनको करू बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ॥१॥

Closing : वरत जु बारै इम कहै, सुनो भविक दे कान ।
सो निहचै धर पालीयो भैरो कहै बखान ॥

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening . ॐ नम· सिद्ध मन धरसत, उदघाटै जुगपाट तुरंत ।
भ्रम वार भरम भजिगयो, पुन्यहि फलतै दरसनभयो ।

Closing : तीर्थङ्कर वदौ जिनदेव सीसनवाय करौपद सेव ।
शुद्धभाव जाके मन भयौ सम्यकदृष्टि मुकतहि गयौ ॥

Colophon . इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening . : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।
Colophon : इति श्रीपाल दरसन सम्पूर्णम् ।

११६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : तैसे जे मुनि सम्यक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म की जोरा वरी तैं मोह की प्रबलता करि सम्यक राजपद छूटि गया हो – • ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उहु प्रभाव समास के अन्तभेद में एक भेद और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो वहु अर्थाक्षर नाम ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के सक्षेप मैं भाग यह अक्षर ज्ञान है ।

Colophon : नहीं है ।

११६६. तत्वसार

Opening : झाणग्गिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसारं पवोच्छामि ॥

Closing : सोऊण तच्चसार रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासय सोक्ख ॥

Colophon : इति तत्त्वसार समाप्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I. क्र० ३९३ ।

११९७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्क – – सिर्व शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : तवयण वयधरण ... निवारेइ ।।

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

११९८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे – क्र० ११९७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सपूर्णम् ।

११९९ तत्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तार ... उमास्वामीमुनीश्वरम् ।।

Colophon : इति उमास्वामिकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

१२००. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing ... ...धर्मास्तिकायाभावात् ।।८।। क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनातरसंख्या ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ।

१२०१. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing : देखे, क्र० ११९९।

Colophon : इति श्री तत्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम्। सवत् १९२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष।४। चद्रवामरे लिखित नीलकठ दासशर्माऽह। श्रीकृष्णाय नम।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तारकर्मभूभृताम्।
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

Closing : देखे क्र० ११९७।

Colophon इति तत्वार्थसूत्र समाप्त।

१२०३. तत्त्वार्तसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७।

Closing : देखे, क्र० ११९९।

Colophon . इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम्।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७।

Closing . देखे, क्र० १२०१।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्ण।

१२०५ तत्त्वार्थसूत्र

Opening . देखे क्र० ११ ७।

Closing : तपश्चरण करिवो, व्रत धरिवो, सयम शरणको करिबो .... चतुरगति के दुख तै छूटे ।

Colophon : इति समाप्ता ।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० ११६७ ।

Colophon : इति ।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० १२०५ ।

Colophon : नहीं है ।

१२०८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र०, ११६७ ।

Closing : अरिहतभासियत्थ गणहरदेवेहि गथिय मम्म ।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवह सिरसा ।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१२०९. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : णवमे सवरनिज्जर दसमे मोक्खं वियाणेहि ।
इय सत्ततच्चभणिय, दहसुत्ते मुणिदेहि ॥६॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचित तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।
सवत्म्मर १९३७ । मिति माघ वदी १२ वार वृहस्पति । इति ।

१२१० तत्त्वार्थसूत्र

Opening देखे, क्र० ११९७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०५ ।

Colophon . नहीं है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११९७ ।

Closing देखें, क्र० ११९९ ।

Colophon : इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. समाप्त. ।।

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११-७ ।

Closing : देखे, क्र० १२०० ।

Colophon . इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय: समाप्त: ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।

Closing . देखे, क्र० ११६७ ।

Colophon . इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८ भोमवासरे, सवत् १६५५ श्रीरस्तु ।

१२१५. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।

Closing : पढमे पढम णियमा विदिए विदिय च मव्वकालम्मि ।
जपुणु खाईयमम्म जम्मि जिणा तम्मि कालम्मि ।

Colophon . इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्त । श्री पटणामध्ये साहब विलदाश तस्य पुत्र साहभगवतिदास तस्य पुत्र आलमचन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ सोम दिने सम्पूर्णम् ।

१२१६ तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७ ।

Closing देखे, क्र० १२०५ ।

Colophon . इति श्री समाप्त' ।

१२१७ तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening श्री वृषभादि जिनेश्वर अत नाम शुभवीर ।
मनवचकाय विशुद्ध करि वदौं परम शरीर ।

Closing . समयमार अध्यातमसार प्रवचनसार रहसि मनधार ।
पचासतिकाया ए जीम, नाटकत्रयी कहावै पीन ।
तत्वारथ सूत्तर की टीका, मर्वारथसिद्धि नाम सुठीक
दूजीन तत्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्तिक ।

Colophon : नही है ।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।
Closing : अस्पष्ट ।
विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के पत्र भी अपठनीय है ।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
. ... .. सव्वसाहूण ।
Closing : अस्पस्ट ।
Colophon : अस्पष्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विंशति

Opening : निर्व्वाण जी ।१। सागरजी ।२। महासाधु जी ।३। विमल प्रभु जी ।४। सुद्धाय जी ।५। श्रीधर जी ।६। श्रीदत्त जी ।७। अमलप्रभ जी ।८।
Closing : कदर्प्प जी ।२०। जयनाथ जी ।२१। श्री विमल जी ।२२ दिव्य-वाद जी ।२३। अनतवीर्यजी ।२४।
Colophon इति त्रिकाल चतुर्विशति का नाम सपूर्णम् ।

१२२१. त्रिवर्णाचार

Opening त्रैलोक्ययात्रा चरितु प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवति यस्या. । प्रसादतो वर्त्तत एव लोके सारस्वति सा दर ता.त्मनोद्वे ।।१।।

Closing : सारस्वत्या प्रमादेन काव्य कुर्वन्ति पडिता ।
ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविंदविनिर्गते श्रीगौतमर्षिपादपद्मारा-धकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पचम पर्व्वः ।

१२२२. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवननार अपार गुन गायक ״ ״ ।
श्री अरहत महत ॥१॥

Closing : सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनितै ही है । तातै परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम आनंद की प्राप्ति करहु ।

Colophon : इति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४२७ ।

१२२३ वचनिका

Opening : वदो श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थंकरतार ।
नमै जासपद इद्रसत शिवमारग रुचिधार ॥१॥

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तव भगवान कहते भये । हे राम शोक न करि, तू चल देव हैकै एक दिन वासुदेव सहित इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

Colophon : नही है ।

१२२४. वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजै, वैरागी जो देव ।
मन वचसीसनवाय के,कीजै तिनकी सेव ॥

Closing : एक सात पचास मैं सब वर सुखकार ।
पोष सुकल तिथि धर्म , जौ जै निसपतिवार ॥

Colophon : इति श्री वैराग्य पचीसी सम्पूर्ण ।

१२२५. योग

Opening : यह आत्मा ससार अवस्था मे जीवात्मा कहावै है और जब यह
ही अपनी अतरग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप
सकल सामग्री के पावै है ।

Closing : भाल आदि दश स्थान मैं ध्येय थापि मन लाए ।
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम् ।

१२२६. योगीरासा

Opening : आदि पुरुष युग आदि ' ··· आदि जती आदि नाथो
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ । जय जय जय जगनाथो

Closing : योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कोई लीजै ।
जिणदास त्रिविध करि जपई सिद्ध सुमिरण कीजई ।

Colophon : इति योगी रासा सम्पूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ४२ ।

१२२७. अक्षर बत्तीसी

Opening : कहे करम वस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥

Closing : यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दास ।
बाल ख्याल कीनौ कछु लही आतम परगास-॥-

Colophon : इति अक्षर बत्तीसी सम्पूर्णम् ।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening : ॐ सु अलष परब्रह्म कौ धरौ सदाचित ध्यान ।
जा प्रसाद निहचै मनुज होत सुकृत को थान ।।१।।

Closing : हरष होत प्रभु दरस तैं लहत अनेक अनद ।
लक्ष्मी चद्र समान जस सुविध सीस सुखचद ।।४५८।।

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

१२२९. अन्यमत श्लोक

Opening : अहिंसा सत्यमस्तेय त्यागो मैथुनवर्ज्जनम्
पञ्चस्वेतेषु धर्म्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठिता ।।१।।

Closing : अनुदिते नभसा देवस्य महर्षयो माहर्षिभि जुहेया जनकस्य
जतस्य सायशा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिर्भवतु
स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ...... ।।

Colophon नहीं है ।

१२३० अठाईरासा

Opening : वरत अढाई जे करैं ते पावैं भवपार प्राणी ।
जबूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ।।१।।

Closing : मन वच काया जे पढै ते पावैं भवपार ।
विनयकीरत सुखमू भनैं जनम सफल ससार प्राणी ।।

Colophon इति श्री अढाई रासाजी समाप्तम् ।

१२३१ अढाईरासा

Opening : देखें, क्र० १२३०।
Closing : देखें, क्र० १२३०।
Colophon : इति अढाई-पूजा रासौ संपूर्णम्। शुभ भवतु।

१२३२. बारहमासा

Opening : विनवे उग्रसेन की लाडिली समुझावहु मोहि ये हे सगरी ॥१॥
Closing : बारह मास पूरे भये प्रति उत्तर लाल विनोदि गाई।
Colophon : इति बारहमासा समाप्तम्।

१२३३. बारहमासा

Opening : देखे—क्र० १२३२।
Closing : देखे—क्र० १२३२।
Colophon : इति श्री बारहमासा जी समाप्तम्।

१२३४. चंद्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यास मैं निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरूप शुद्धबोध कौ प्रकाश है।
अनुभौ अनूप रूप रहत अनत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग ग्यान सुख रास है।
अनुभौ अपार सार आपही कौ आप जानै
आपही मैं व्यापदीसै जामैं जड़ नास है।

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चद,
अनुभौ अतीत आठ कर्म सौ अफास है ॥१॥

Closing : गुण ठाणौ मिथ्यात अवृत तन छुटै ग्यारगत
सासादन गुण थांन नरक तजि होई तीन रत।
मिश्र षीन सजोग तहाँ जीव मरहिं न कोई
सुनि अजोग गुन थांन छुटै प्रगटै सिव सोई
सपत सेव गुण थे छुटै एक गत देव की
कह्यो अरथ गुरु ग्रथ मैं सति वचन जिन सेवकी ॥

Colophon : इति श्री चदशतक समाप्तम्।

१२३५. चर्चाशतक

Opening : जै सरवग्य अलोक लोक इक अडवत देवै।
हसतामल ज्यो हाथ लीक ज्यौं सरव विशेवै।
छदौ हर्व गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम।
दर्प्पण जेम प्रकाश नाश मल कर्म महातम।
परमेष्ठी पाचौं विघनहर मगलकारी लोक मैं।
मन वच काय सिरनायभुव आणद सौ द्यौ द्योक मैं ॥१॥

Closing : चरचा मुख सौ भनैं सुनैं प्रानी जहि कानन।
केई सुने धरि जाहि नाहि भाषै फिरि आनन।
तिनि कौ लखि उपगार सार यह सतक वनाई।
पढत सुनत ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई।
इसमे अनेक सिद्धान्तकौ मथन कथन द्यानत कह्या।
सव माँहि जीवकौ नाम है जीव भाव हम सरदहा ॥१०४॥

Colophon : इति चरचा शतक समाप्तम्।

१२३६. चौबोल पचीसी

Opening : दरव षेत अरुकाल भाव दरव पट तत्व नव।
ग्यायक दीनदयाल सो अरिहत नमो सदा।

Closing कवित्त वनाए सावनि सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।
चरचा कूप अनूपम वानी हसभूप चिद्रूप निसान ।
गोमटसार धार द्यानत नैं कारन जीव तत्व सरधान ।
अक्षर अरथ अमिल जो देखौ लेखो सुद्ध छिमा उर आन ॥२५॥

Colophon इति दरव चौबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening : छप्पय—एक सरूप अमेद दोय ······ ।
··· · जिह तिह विघ भवजल तरौ ॥१॥

Closing : वृषमसेन गुणसेन ·· — — यह पुद्गलमरजायहे ॥२५। ।

Colophon : इति दसवोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२३७ ।
Closing देखें, क्र० १२३७ ।
Colophon इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

Opening : रिषमदेव रिषमदेव छीर गभीर धीर धुनि ।
चार वीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन ।
सुरग ढाम निज नाम मातपुरतात वरन तन ।
आय काय सुभचिन्न मुकुत आसन दस वरनन ।

जसगाय पुन्न उपजाय बुद्ध पाय करो मगल अमर ।
सिरनाय नमौ जुग जोर कर भो जिनद भौ तापहर ॥१॥

Closing : जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकल बनाए ।
एक एक जिन स्वाम नाम दस दस गुन गाए ।
सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख सतत प्रानी ।
द्यानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी ।
गद जनम जरामृत नहि मग एक उषदविगर ।
सिरनाय नमौ जुग जोरि कर भो जिनद भौ तापहर ॥३०॥

Colophon इति श्री दसथान चौबीसी सपूर्णम् ।

१२४० ढालगण

Opening देव धरम गुरु वदिके कहू ढाल गण सार ।
जा अवलोके वुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

Closing . अव जनमै नाही या भवमाही सवके साई सबजानी ।
तुमको जो ध्यावै तुमपद पावै कवी कहावै अधिकानी ॥६२॥

Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१२४१. ढालगण

Opening । देखें, क्र० १२४० ।

Closing । देखें, क्र० १२४० ।

Colophon . इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् ।

१२४२. दोहा

Opening । अपनौ पव न विचार जैं अहो जगत के राइ ।
भववन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Closing . रूपचद सद्गुरुनिकी, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वै सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाई ।।१०१।।

Colophon : इति श्री पडित रूपचद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता ।
शुभ भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेंद्र मगल करो नितप्रति नयो उछाह ।।१।।

Closing . जो मम्यक्त सहित ... सोना और सुगन्ध ।।

Colophon : नही है ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I क्र० ५०८ ।

१२४४. दोहावली

Opening . देखे, क्र० १२४३ ।

Closing . देखे, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखें गये है । चारो मे चार-चार पत्र है जिनमे एक समान दोहे दिये गये है ।

१२४५. दोहावली

Opening : देखे. क्र० १२४३ ।

Closing : देखे, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

१२४६. द्विपञ्चाशतिका

Opening : अतिसूछिम करि ··· ···· ···· लेपये छानियैं ॥२२॥

Closing : बावन कवित एतौ मेरी मतिमान लए।
हस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ॥४५२॥

Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपचाशतिका समाप्ता।

१२४७. फुटकर-काव्य

Opening : अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कू श्रद्धान करण योग्य है।१॥

Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्य श्रुताभ्यासता।
चारित्रोज्वलतामहोपशमता ससारनिर्वेदता ··· ·· ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening : अनाद्यनतरूपाय पचवर्णात्मिमूर्त्तये।
अनंतमहिमाप्राप्त सदाकार: नमोस्तु ते ॥१॥

Closing : अस्पष्ट।

Colophon : इति श्रीवादिचद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक सपूर्णम् श्री पाठकाना शुभ भूयात्। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लिखित पडित परमानदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयाया रविवासरे सवत् १६२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये।

देखे, रा० सू० III, न० ८६।

१२४६ जैन-रासौ

Opening : अर्हंता छियाला सिद्धा अट्ठे सूर छत्तीसा।
उव्झाया पणवीसा अट्ठाईसा हवेई साहूण ॥

Closing : जे नर आप घात कर मरो होइ तिरजच चिहू गति फिरी ।
संमारा दुख भोगवो दिख आपु घनुरो पाई ' ' '''' ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अव मन मेरे वे सुनि सुनि सिख सयानी ।
जिनवर चरनो वे करि करि प्रीत सज्यानी ॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सव सुखदायक तिहुपन मे ।
जिन घो समझ परी सव भूदर सदा सरन इस भाव वन मे ॥

Colophon : इति सिस्य जकड़ी सपूर्णम् ।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोत्तमु, आदि जति आदिनाथो ।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो ॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै ।
जो जीनदास हृत्रि विधि हिए सिद्धह सुमिरणु कीजै ॥४२॥

Colophon : इति जोगीरासु समाप्ता ।

रा० सू० III, पृ० १६५ ।

१२५२ कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारन काज सबै सुखदाई ।
दीनदयाल वडे प्रतिपाल दया गुनमाल सदा सिरनाई ॥
दुरगति टारन पाप निवारन हो भवतारन की भवताई ।
बारबार पुकार करो जन की विनती सुनिए जिनराई ॥

Colsing . हो दीनबन्धु श्री पति करुना निधान जी ।
ये मेरि बिथा क्यों न हरो बार क्यो लगी ॥

Colophon । इति ।

१२५३. कवित्त

Opening : श्री जिनवर के नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत हैं सफल करत अवतार ॥१॥

Closing । अद्भुत अतिसै तुम धरै वीतराग निज लीन ।
पूज्यक सहिजै उव्वहै निंदक सहिजै लीन ॥६॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१२५४. कवित्त

Opening · भौ जल माहि भरयो चिरजीव सदीव अतीत भव स्थिति गाठी ।
राग विरोध विमोह उदैव सुकर्म्म प्रकृति लगी अति गाठी ।
पेच पर्‌यो दिढ पुग्गल सो इह भाँति सही बडी आपद गाठी ।
सम्यक् ध्यान भज्यौ जबहीं तबही सवकर्मनि की जडकाठी ॥

Closing · कहै वेदवके कहूं आप सुनि वेके कहूँ आप जो जायकै
कहूँ इष्ट कह मित्र है ।
कहूँ जोग विधि जोगी, कहूं राज रस भोगी कहूँ वैद कहूँ रोगी
कहू कटक कहे मिष्ट है ।
कहू लता के छाया कहू फूल के फूल्यौ कहू भौर कै भल्यौ कहू
रूपके दिखाए है ।
सकल निवासी अविनासी सर्वभूत वासी गुपत प्रगासी आपै
सिख आपै सिष्ट है ।

Colophon . इति कवित्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५०६।

१२५५ कृपणपचीसी

Opening : एक समदेहरा मैं पचनव जुरे हुते भप इनवात जिहाँ जातकी चलाई है।
चालो भले गिरिनारि नेमनाथ परिस्येवेको जनम सफल तिहा कीति बढाई है ॥
तहाँ एक बैठी हुनी किरपण पुरिपनार उने सुनी वात आनि घर मे चलाई है ।
सुनि हो पियारे पिउ जोयारे आवै जिनु हमैं नुमे दोउ बोलो वलौ वन आई है ॥१॥

Closing : कहै लालविनोदी भव सुनो धन पाय जस लीजिये ।
करिजाज प्रतिष्ठा जग्य जिनसुदान सुपात्रा दीजिये ॥

Colophon : इति श्री कृपणपचीसी समाप्तम् ।

१२५६ मालपचीसी

Opening : सुरलोकासमुतीर्थ्या सौधर्मेण निर्मिता ।
माघे चैत्रे वृहद्द्वारे भव्यैर्माला प्रतिष्ठिते ॥१॥

Closing माला श्री जिनराज की पावै पुन्य मजोग ।
जम प्रगटै कीरति वढै धन्य कहै सब लोग ॥३६॥

Colophon · इति मालपचीसी ।

१२५७. नाममाला

Opening त नमामि पर परमगुरु कृष्ण कवल दल नैन ।
जग कारन करूना निधे गोकुल जाको अैन ॥१॥

Closing जमल जुगल जुग द्व द्व है, उभय मियुन विविधीय ।
जुगल किसोर सदा वनो, नददास के हीय ॥२५६॥

Colophon : इति श्री नददासेन कृता मानमजरी नाममाला सपूर्णम् । शुभम् अस्त । पाठकस्य शुभ भूयात् । सवत् १८०६ । शाके १६७१ ॥ पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआ नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री खेदु पाण्डेय पुस्तकमिद लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

Opening : धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्प्पवेताल ।
वररुचि-सकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ॥१॥

Closing : कुलवत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै बन्धु हित ।
सन्यास क्षरिधन सग्रहै ए जग मे मूरख विदित ॥

Colophon : इति नवरत्न कवित्त समाप्त ।

१२५९. नेमिचन्द्रिका

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रथ एक गुटका है, जो वहुत ही अस्पष्ट है । वीच के कुछ पत्र पढे जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचद्रिका

Opening : आदिचरण हिरदै धरौ, अजित चरणचित लाइ ।
सभव सुरत लगाइकै अभिनदन मनु लाइ ॥१॥

Closing : तौ होई व्याह को साज काज वहुविधि सो कीन्हो ।
देस देस प्रति नृपति सवनि को ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२६१. नेमिचंद्रिका

Opening : देखें, क्र० १२६० ।

Closing : नेम चद्रिका जे पढै जाको पुन्य प्रकाश ।
आसकरन लघु वीनवै जिनवानी को दास ॥२१६॥

Colophon : इति नेमचद्रिका सपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ वारहमासा

Opening : देखें, क्र० १२३२ ।

Closing : देखे, क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ राजूनमती का वारहमासा प्रतीकुनर सपूर्णम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ०

१२६३ नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को व्याह रचो है ।
गावत मगलचार वधू कुल मे सपके जो उछाह मचो है ।
तेल चढावन को युवति अपने अपने कर थाल सच्यो है ।
नेग करे सब व्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिको है ।

Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लो छदमस्त रहो है ।
केवलज्ञान भयो प्रभु को तव आठविभु तम दान मही हे ।
मात सै वर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।
निर्वान गये गुनि पांच सै छप्पन लाल विनोदिक ने सग गही हे ।

Colophon : इति श्री नेमिनाथ का व्याहुला समाप्तम् ।

देखे रा सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखे, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला सम्पुर्णम् ।

१२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखे, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला समाप्त ।

१२६६. पखवारा

Opening : पडिवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी ।
प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै व्है प्रतिपदा नाम कहावै ।।१।।

Closing : पून्यौ पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरन परगासी ।
पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वनवासी ।।

Colophon : इति पषवाराजी समाप्तम् ।

१२६७. परमार्थजकडी

Opening : अरहत चरन चित ल्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो ।
वंदौ जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ।।१।।

Closing : न अघाय यौं हीरमैं निस दिन ए कछि नहूं ना चुके ।
नहि रहै वरज्यो वरजदेष्यो बार वार तहां धूके ।
श्री जिन सिद्धान्त सरोज सु दर ताहिं मध्य लगाईए ।
रामकृष्ण इलाज याकी कीए एही सुख पाईए ।।८।।

Colophon : इति श्री रामकृत जषरी सपूर्णम् ।

देखे, रा० सू III, पृ० १३७ ।

१२६८ पिंगल

Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद ।
कवि विनोद मो यह कियो उत्तम छंद विनोद ।।१।।

Closing : रूपक घनाक्षरी मे गुर लघु नियमन वतिस वरन वर रचिये चरन चारि ।
कीजै विसरामतित आठ आठ अक्षर पै अत एक लघु नौ नियम करि करि धारि ।
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि कै विचारी ।।
भाषा सिंधु तरिवेको आधे छद करिवेको पिंगल वनायौ पढ़ियै से सुद्ध कै सुनि ।।

Colophon : इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम षोडसमो विनोद ।

दोहा— चीरगा पत्या पत्य रस रस वसु ससिवामक ।
सुभ भद्रा सित पक्ष दिण अगारक मतिवक ।।१।।

अपर च — तिथितनिदुभ पुनर्वसुवेला लाभ विराजु ।
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रथ सुमाजु ।।२।।
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

१२६९. राजुल-पचीसी

Opennig · प्रथम सुमरौ अरिहत देव ··· सौ विनती करी ।।

Closing : यह लाल विनोदी गावै सुनत सव जन गहवरे
राजुलपति श्री नेमि जिन सव सघ कौ मगल करे ।२६।।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

१२७० राजुल-पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६९ ।

Closing देखे, क्र० १२६९ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी सपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।
और गावै नर नारी सोउ अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon इति राजुल पचीसी सपूर्णम् ।

१२७२. राजुलपचीसी

Opening देखें, क्र० १२६६ ।

Closing देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३ राजुलपचीसी

Opening : वदी वे प्रथमही ··· · राजमति जस गाई सो जीवै ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीऐ श्रीनायक तीनी हिए व्यापत हैं ।
तिहारे दर्शन ········· पाप नासत हैं ॥

Closing : गहे जिननाथ को — जागें हैं ॥

Colophon इति रेषता समाप्त ।

Colophon : इति श्री पाण्डे रूपचद शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

Opening श्री गुरनाथ प्रसादतै होय मनोरथ सिद्ध ॥
— — ज्यौं तरु वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ॥

Closing । आई अवधि विवेक की देखी कोन अनपाय ॥
काग कनक के पीतरै ह्म अनादर भाय ॥

Colophon इतिश्री वृदावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ सवत् १६५३ गुरुवार आठ वजे रात्रि को आरामपुर मे बाबू अजित दास के पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

विशेष-- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीर्थङ्कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार, तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अर्हत्पाशाकेवली वृन्दावनविलास आदी ग्रथो का उल्लेख है लेकिन सतसइया का कोई उल्लेख नही है ।

१२७९. समकिताधिकार

Opening : श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसति सुपसाय ।
समकित गुण फल वर्णउ इह पर भवि सुखदाय ॥१॥

Closing : विजय दशमी श्री झृठापुर वर सघ सुकल सुखदाई जी ।
वाचक मानव दइ सुखदायक सुणना लील वधाई जी ॥

Colophon : इति समकिताधिकार श्री अरहदास सवन्ध. । सवत् १७०२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखित श्री काला कुन्हे ग्रामे । शुभ भवतु न सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।
गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो बनाय ॥६॥

Closing : ध्यालीन मुनी अनागार । मुक्त गये जग के आधार ।।
पाहि कूट को दरस न करे । कोड उपवास तनो फलभरे ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखें क्र० १२८२ ।

Closing : समोसरण में जायकें वंदे वीर जिनेन्द्र ।
अहो नाथ तुम दरसन तें कटें करम के फंद ।।८४

Colophon : नहीं है ।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री समेदित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।
श्री सिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाइक ।
अनमित सुख उद्योत कर्म्म वैरी घनघाइक ।
ज्ञान भान परगास पद सब सुखदाइक ।
ऐसें महत अरिहत जिनन्द निसि दिन भावसों ।
पाओ प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसों ।।१।।

Closing : वीस हजार वरष वीतत मानसीक तह असन करत ।
दस दुनि पखवारे गए परिमल सहि ... ।।

Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

Opening : पचगुरु को नमो दोकर सीसनवाय ।
श्री जिन भाषित भारती ताको लागो पाय ।।१।।

Closing　　रेवा सहर मनोग वमैं श्रावग भव्य सव।
　　आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ॥३७॥

Colophon :　　इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम सर्गः समाप्त । सम्पूर्णमिति ।

दोहे —　　सम्वत् अष्टादश शतक बानवे अधिक सुजान ।
　　फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥
　　रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम ।
　　वाचैं सुनैं सद्दहै पावैं सर्व सुखधाम ॥

१२८४ शिखरमाहात्म्य

Opening :　　अजितनाथ सिद्धवर कूट । अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख मुनि सिद्ध भयैं वतीस कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन का फल है ।

Closing :　　पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि एक करोड चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ व्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड उपास का फल है ।

Colophon :　　अनुपलब्ध ।

१२८५. सोलहकारणरासा

Opening :　　वीर जिनेस्वर नमसकरी ··· · ·· जहाँ हेमप्रभ धन यसा ॥१॥

Closing :　　सकलकिरत ए रासा कीयौ ए सोलह कारण ।
　　पढै गुणै जे सभलै तिण शिव सुहकारण ॥७॥

Colophon :　　इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

१२८६ श्रुतपचमीरासा

Opening : वरत अठाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जवूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणै, मन वच रुचि गावहि ।
सुख सपति आणद लहै, वछित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon : इति श्रुतपचमी रासा ।

विशेष—इसके साथ अठाई रासा भी है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नम सिद्ध मनधर सत उदघाटै जुगं पाट तुरन्त ।
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : विनुथुलै सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति वाढै अनद ।
अजघना • •• • ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

Opening : पारात्सार प्रवक्ष्यामि कथित ग्रथकोटिभि ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥

Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु पडित तद्विदो विदु ॥

Colophon नही है ।

१२८९. बाहुवलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतवाहुवल वीर।
अति साज चले रण लरिवेकौ अतिधीर ॥

Closing : सत्रे सै चलहोत्तरै भादौ सुदि सुमवार।
सुक्ल पक्ष तेरस भनी गावै मगल च्यार।

Colophon : इति श्री भरत वाहुवलि भाषा समाप्तम्।

१२९० विवेक-जकड़ी

Opening : चेतन तेरो वानौ चेतन दानौ चेतन तेरी जाति वेवेही
हातै मति खोई जाति विगोई रह्यो प्रमादनि भाति वेवेहा ॥

Closing : कु दकु द आचारज गुरुवयणहिं मूरख विनन सभालै।
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ॥

Clolophon : इति विवेक जकरी।

१२९१. व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि अैसौ महाराज है।
सबकौं समान गिना राग दोश भाव विना नाही पास तिना सक्र-सौ को सिरताज है।
ताही को वपान्यौ धर्म्म सोई साच सोई पर्म और को कह्यौ अधर्म झूठ को समाज है।
सिवपुर वाट के वटाउनि को सवल है सुख को दिवैयो महाकाज माहि नाज है ॥१॥

Closing , चाहत धन सतान ' आनताहि वहे है ॥२६॥

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मत्र

Opening : इत्थ यथा तव विभूतिरभूज्जिनेद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभादिनकृत. प्रहृतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाश-नोपि ।। ।।

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा वहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मत्र हैं सो सपूर्ण सिद्धि मत्र उपकार के वास्ते एक एक काव्य के एक-एक मत्र का थोडा-थोडा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मान-तुगाचार्य विरचित समाप्त ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणामुद्योतक दलितपापतमोवितानम् । सम्यक प्रणम्य जिनपादयुग युगादा वालवन भवजले पतिता जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मत्र जपिवा यत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत जाप्य नित्य कीजै दिन ४६ सर्व वस होवे जिसको नामचितै सो वस होवै व्रत कीजै ।।४८।।

Colophon : कुछ नहीं है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४ चौबीस-तीर्थंकर-मत्र

Opening : ॐ ह्री श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट विचक्राउरूभेईमवा सर्व-शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : अमोघ लक्ष्मी मिले ताज सग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ।।

Colophon ; इति मत्र सम्पूर्णम् ।

१२९५. गायत्रीमंत्र

Opening : ॐ भूर्भव: स्व तत् सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोन: प्रचोदयात् ।

Closing : भूतप्राणानाम प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमाते गणेशमहर्षिणा गायत्रीछदसा गायत्रीसमाख्यनाऽनेन दिव्यमत्रेण त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसक्षेपेण ननु निरूपित

Colophon : इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२९६ घटाकर्णमंत्र

Opening : ॐ घटाकर्णो महावीर सर्वव्याधिविनाशका ।
विस्फोटकभय प्राप्ति रक्ष रक्ष महाबल: ।।१।।

Closing : नकाले मरण तस्य न च सर्प्पेण डस्यते ।
अग्नि चौरभय नास्ति ॐ ह्रीं श्री घटाकर्णो नमोऽस्तुते ।।४।।

Colophon : इति घटाकर्ण मत्र ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६५ ।

१२९७. घंकाकर्णमत्र

Opening देखें, क्र० १२९६ ।

Closing : देखे क्र० १२९६ ।

Colophon इति घटाकर्ण मत्र ।

१२९८. होमविधि

Opening श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ
भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरण प्रणवं प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing : शांतिनाथ नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशांतये ।
सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon : इति होमविधान सम्पूर्णम् ।

१२९९. जैनगायत्री

Opening : आनादिनिधन मंत्र पंचत्रिंशत् तदक्षरम् ।
पंचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ॥३॥

Closing : अनादिनिधनो मंत्रो गायित्रीमंत्रसयुता ।
नित्य च जाप्यते योऽय महामंगलदायकम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसंकल्प

Opening : ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनाना म धर्मश्रावणाया-
रोग्येश्चार्याभि। वृद्धिरस्तु ... ... ।

Closing : ... ... देवोह् अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर ... ... अमुक
लाभाय जपं करिष्ये ।

Colophon : नहीं है ।

१३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening : ततो गधकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।
पूजयामास गधाद्यै रभिषेकपुर सरम् ॥

Closing . लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजघो विभुः
द्वात्रिंशमुकुटप्रबधमहितक्ष्माभृत् सह ···

Colophon . इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यत्र

Opening : दिवारी के रात को लिखना भोजपत्र पर अष्टगन्ध सों
भुजा मे वाध राखै ।

Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।

Colophon : लिखत मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

१३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

Opening · ॐ भूर्भुव स्व अर्हं असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारिधारिकेभ्यो
नम । वार १०८ नित्य जपिये ।

Closing मध्यम तर्जनीऽनामिका अगरीनिजीवन स्वाम ।
अगुष्ठासो जपमाल रूचि गुणै एक वहुतास ॥

Colophon : नही है ।

विशेष — यह ग्रथ इतना पुराना एव सडा हुआ है कि पढा नही जा
सकता ।

१३०४. महालक्ष्मी

Opening : मत्र— ॐ ऐं श्री ह्रीं क्ली महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरु कुरु
स्वाहा ॥

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप पेवना गुगुल, अगर, तगर, नागरमोथा, छरूछडीला, कचूर, गिरीदाष, वदाम छोहारा, मिश्री घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०००। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय मिटे लक्ष्मी मिले ।

Colophon : कुछ नही है ।

१३०५. मंत्र

Opening : ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युजयाय सर्वजीवशरणाय परममंत्राय पुरुपाय चतुर्वेदायतताय ...
... मम सर्व कुरु-कुरु स्वाहा ॥१॥

Closing : ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हंसमहाहंस परमहंस. कोहंस अर्हंहंस पक्षिमहाविपक्षि ह्रू फट् स्वाहा ।

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थभय-२. ॐ क्रो प्रो प्री प्र. ठ ठ स्वाहा ।

Closing : अभिपेक सुद्धि तिहका नाला तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त करै जु पाली पाषी देय वें का हाथ को अहार लेणू नही ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३०७. मंत्रसग्रह

Opening : ॐ ह्रो ह्री ह्रूँ ह्रौ ह्रः असिआउसाय नम अपराजित मन्त्रोय विघ्न नासय नासय कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ छो छो छो छ. अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वोहा: ।
विधि ।। पेडा ३ ।। वार १०८ ।। मत्रसो पठको आनाही-
वोन्नेता ...।

Colophon : नही है ।

१३०८ मंत्रयत्र

Opening : ॐ क्रो क्रौ क्रौ क्रौ क्रौ मही अमुकी नामान्याः पतत्याः सर्वत्र-
जयसौभाग्य प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्य ... . ---।

Closing : ... नीवू को चूहा के विलमे गाडिये उपर जूती तीन
नाम लेके मारिये दिन तीन ताई जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

Colophon इति मत्र यत्र समाप्तम् ।

१३०९. नमोकारमत्र

Opening : कहा सुर तरु कहा चित्रावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस
के पाएं ते ।
कहा रसपायें औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो
लक्ष्मी कूँ आऐ ते ।।

Closing कान्हबल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगाईवे को
काहु के उधार के ।
कहत विनोदीलाल जपतहो तिहुकाल मेरे है अतुलबल मत्र नव-
कार को ।।

Colophon : इति णमोकार मत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१० पद्मावतीदडक

Opening : ॐ नमो भगवते त्रिभुवन सकरी ।
सर्वाभरणभूषिने पद्मासने पद्मनयने ।।१।।

Closing : ज्भे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि ' ' मा रक्ष पद्मे ॥८॥
Colophon : इति पद्मावती दंडक सपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथ प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येऽभीष्टफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥

Closing : अपराजिते ... अमुकी मोहय-मोहय स्तंभिनी ··· ···
मम वश्य कुरु-कुरु स्वाहा ।

Colophon : नहीं है ।

१३१२. पद्मावतीकल्प

Opening : ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-
पतिर्वृ छगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीज वाग्भव
शक्तिप्रणवकीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे विनियोग ।

Closing : ज्भे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दुष्टे
निराधिकारे दह दह दहने हेन ··· ह्रीं ह्री
ह्री ह्रैं प्रसन्ने-प्रहसित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखें क्र० १३१२ ।

Closing : इद कवच ज्ञात्वा पद्मावत्या स्तोति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥

Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

१३१४. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पचमुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचंद्रऋषिकृत अनुष्टुपछन्द' पचमुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीज ॐ चिन्तामणिपार्श्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलक श्री रामचन्द्र तव प्रसादसिद्धयर्थे मकललोकोपकारार्थे पचमुखीपद्मावती स्तोत्र जपे विनियोग. ।

Closing : नवबार पठेन्नित्य राजभोग समाचरेत् दसबार पठेन्नित्य त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम् ।
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेन्नर कवचस्मरणेनैव महाबल- ? ज्वितम् ॥

Colophon : इति पचमुखीपद्मावतीकवच सपूर्णम् ।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मत्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीचरणाबुजेभ्यो नम ।

Closing ॐ ह्री श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः ।

Colophon : इति पद्मावतीकवच संपूर्णम् ।

१३१६. पद्मावतीकवच

Opening : देखें—क्र० १३१४ ।

Closing : साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मंत्र है, नित्य जपने से मर्म मगन्न होय है ।

Colophon : नही हैं ।

१३१७. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क्र० १३१४ ।
Closing : देखें, क्र० १३१४ ।
Colophon : इति श्रीराचचन्द्रऋषिकृत पचमुखीपद्मावती कवच समाप्तेम् ।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ णमो जिणाण ह्रो ह्री ह्रो ह्रू ह्रौ ह्रः ।
Closing : अथवा मृ गा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे ।
Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मत्र सपूर्णम् ।

१३१९. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ आ क्रो ह्री क्ली पद्मावती देवी ह्रू क्ली ह्री नम । जाप्य ३०००० कीजे ।
Closing : अत्रसाहननुजनाभवृषभ ... कालछया नित्यश ।।
Colophon : इति पद्मावनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२०. पद्मावतीपटल

Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेद्रमहिताय .. त्रैलोक्य सहारिणा चामुंडा ।
Closing : ह्रा ह्रीं प्ली प्लू ह्रा ह्रा . पद्मावती धरणी धरणीद्र आज्ञापयति स्वाहा ।
Colophon . इति पद्मावती पटल सपूर्णम् ।

१३२१. पन्द्रहयन्त्र-विधि

Opening : आद्वतरैं की चाल है भणो की घोडै की चाल पहली सुं नवको द्वै में भरियैं एक अकसु माड कैं नव अक सु माड कैं नव अक लिखियैं नव को द्वै मे इसकी विशेष विधि कहियैं दस वार लिखैं तो लोक सर्वमोहित हुवै वीस वेंर लिपैं तो आर्पण हुवै तीस वार लिखै तो पृथ्वी मैं जय पावैं ।

Closing : दधामाषनील चैव शर्कराघृतसयुतम् ।
कृष्णपक्षे तु चाष्टम्या वलि दत्ता मविरकैं ? ॥४३॥

१३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवंदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।
.... पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ॥

Closing : इत्थ मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
.. - स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२३. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : ॐ नमो चण्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थंकराय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय ।

Closing : .. - घोरोपसर्गविनाशनाय ह्रूं फट् स्वाहा ।

Colophon इति चडोग्रपार्श्वनाथस्तोत्र सपूर्णम् ।

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं व पातुवो नित्य जिनः परमशंकरः ।
नाथ परमशक्तिश्च शरण सर्वं ... ॥

Closing त्रिसध्य य. पठेन्नित्य नित्यमाप्नोति सश्रियः ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्व भोवुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातगायत्री

Opening पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिदेवदेवश परमेश्वर पुरातन वदुरवपरयाप्रीत्याविप्राणो मधि वदन मद्भक्ताना हितार्थाय वराण परमेश्वर सन्यामध्यानयुक्त च सूर्यार्घ्यादि सुमाधन ।

Closing । इति महावाक्य ॐ गायत्री चैकपदी द्विपद्री चतुस्पद्यपदसिनहि पद्यस नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पददर्शिताय नमो नम एव चतुर्थाश्रमेन गृहस्थाना प्रसगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातगायत्री विषये सपूर्ण समाप्त । सवत् १८२५ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तक लिख्यते हरयस मिश्र । कासि जी मे लिखी ।

१३२६. सकलीकरणविधान

Opening · स्नानानुस्नानशुद्धोधृतशितसुद्धो ान्तरीयोत्तरीय,
सकल्पाचम्य प्राणामिति तममृत परिसेचन तर्पण च ।
आचम्या तस्य शुद्धि पुनरपि सतत शान्तमत्र षडागम्,
दिवस ज.पाद्रिव र परमजपयुत्त स्तात्रदिक्.रधयभू. ॥

Closing · ॐ णमो अरिहंताण णमोसिद्धाण णमो आयरियाण ।

णमोउवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ।

इति पचपद जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्ते लिखित टीकारामेन आरानगर मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७ सामयिकविधि

Opening . विधिपूर्वक पडिलेहुय उपगरण प्रमार्जित स्थानकइ स्थापनाचार्य थापितई ।

Closing : ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधिः ॥२७॥ पोसहपडिकमणा वावण विधि ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon नही है ।

१३२८ शान्तिनाथ-मत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्त्तये, ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व्वपापप्रणाशाय ।

Closing : सपूर्ण जप सख्या अडतालीस लक्ष प्रमाण निष्ठा मना जपै पश्चाद् सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon : नही है ।

१३२९. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अर्हन्मुखकमलनिवासिनी पापाहंमक्षयकरी ... मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing ॐ ह्री श्री क्ली महालक्ष्मी नमः धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि वृद्धिअन्नधनसपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

जाप सवालक्ष १२५००० दशाम होम पचामृत को करे तो
प्रभाव वृद्धि होय ।

Colophon इति विजयप्रतापमत्र सम्पूर्णम् ।

१३३०. सरस्वतीमत्र

Opening ॐ ह्री श्री वाग्वादनी सरस्वती मारदा बुद्धिवर्द्धनी देवी
कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon नही है ।

विशेष— इनमे मात्र एक ही मत्र है ।

१३३१. सरस्वतीमत्र

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली व्ली वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति
परमब्रह्म मुखीद्भूते श्रुतागिदेवि द्वादशागेयो नम । मम विद्या-
प्रमाद कुरु तुभ्य नम ॥१॥

Closing : ॐह्री अर्हं णमोपादाणुसारिण ॥८॥
ॐ ह्री अर्हं णमो सभिन्न सोदराणम् ॥९॥

Colophon नही है ।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐ ह्री श्री मत्ररूपे विबुधगननुतेदेवदेवेन्द्रवद्ये ।
.... — मनसि सदा मारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing . ॐ ह्री क्ली क्रू श्री ह्री रो नम लक्ष जापते सिद्धि होय ।

Colophon . इति सारदा स्तुति ।

१३३३. सोलहकारण मंत्र

Opening : ॐ ह्री दर्शनविशुद्धये नमः ।
Closing · ॐ ह्री प्रवचनवत्सलत्वाय नम ।
Colophon : सपूर्णम् ।

१३३४. सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनद कहै, उत्पति विनास द्विभेद लहै ।
जनमै दस वासर को गनिए, मरिहै तव वारह को भनिए ।।१।।
Closing : ग्रथ सस्कृत तै यहै भाषा कीनीसार ।
जो मन समय उपजै देखौ मूलाचार ।।२४।।
Colophon : इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि सपूर्णम् ।

१३३५. तत्रमत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रि ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रौं ह्र असिआउसा सम्यग्यदर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्री ··· नमः आचार्य श्रीरविसेनकस्य रक्षा दृष्टिदोषनाश कुरु-कुरु स्वाहा ।
Closing ॐ ह्री एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभाडागारे स्थिताय मम ईप्सित पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्ट निवारय निवारय ॐ ह्री नम. पीतपुष्पैर्जाप १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसास होम एकमुमुखी रुक्षास ··· — ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ ह्रा ह्रि ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रैं ह्रो ह्र असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्री नमः ।

१३४०. विसर्जन-मंत्र

Opening : सुभ्राक्षतप्रसवमकुलरत्नदीपै मानिवरत्नमयकाचनभाजनस्थै ।
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्वयाग्ने सम्मगलात्तिकमहं त्ववतार-
यामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदवे ज्वालिनिसृष्टविवे गजगमनविलंवे नागयुगेत्र-
नितवे ।
हृतधनुजगदवे भालखण्डेन्दुविवे नतजनुविकरवे याहिभक्तावलवे ॥

Colophon ; इति विसर्जन सपूर्णम् ।

१३४१. विवाह-विधि

Opening : या सदन गच्छेत् मडपे तोरणान्विते ।
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्वरम् । १॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेद ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३४२. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : गह्यं हिमानग्निपुरे मदीयनेत्रद्वो निवान कुरुविघ्ननेत्रे
गृह्यस्व वलि च पूजां ।

Closing : चौदश अवीतवार कै दिन मद भाडाने मैल जैतो नदपाणी
भवति ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१३४३. यन्त्रमन्त्रसंग्रह

Opening ॐ मं म ख ख षि षि र र त्रां क्रा ग्री ग्रीं अमुकस्यो च्यारय-२
मारय-मारय चूरय-चूरय बुद्धि भृ शं कुरु-२ स्वाहा । "

Closing : पद्मपुत्री विसहरी एक सहस्र बार सात पठनै तमाचो मारी जै सर्प विष उतरै ।

Colophon : नही है ।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening : इति ह्यस्माद्गुरावैगाद्यो महर्षयः
जातमात्र विशाध्यो स्वास्वालसैंधसर्पिषा ।
प्रसृतिश्लोशित चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोर्वादन चास्य कर्णमूले समाचरेत् ।।

Closing : चिकित्सितं हितं पथ्यं प्रायश्चित्त भिषग्जितम् ।
भेषज शमन शस्त पर्यायैः स्मृतमौषधम् ।।

Colophon : इति चिकित्सिते द्वात्रिंशोऽध्याय । इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टांगहृदयसंहितायां चिकित्सास्थान चतुर्थं समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० २४६ ।

जि० र० को०, पृ० १६ ।

१३४५ चिकित्साशास्त्र

Opening : गंवा होती पुंआर्कइ लीजइ । दूधमूं पीजइ सर्वरोग जाइ ।।१।।

Closing : विन्दु आठ कइ द्रोण प्रमाण, दुई द्रौणे इक सूर्य की मान ।
दोई सूर्य की द्रोणी इक लाखी, विन्दु द्रोणी इक खारी दाखी ।।

Colophon नहीं है ।

विशेष— इसकी लिपि भिन्न २ लोगो द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह ग्रथ मालूम पड़ता है ।

१३४६ चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मै औटाइ ॥
अरध रहे जल से छिनवाइ । खाड टाक चालीस मिलाइ ॥
ताको नरम विमाम बनाइ । घोट डडसो सीसे पाड ॥
दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥

Closing : सास की दवा—धतूरा पचाग कूट के चिलम मै पीवै हुकै की तरह सैं सास जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।

Colophon : नही है ।

१३४७ ज्वरहर-यंत्र

Opening ज्वरेत्यादिना केवल ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयनि किंत्वपरा ।१।

Closing : इद ज्वरहर यत्र मया प्रोक्ता तवानघे ।
उपकाराय लोकाना साधूनां च हिताय वै ।
गोप्य त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥

Colophon : इति ।

१३४८ कुट्टककरण छाया व्यवहार

Opening : भाज्यो ... वुष्टमुछिष्टमेव ॥१॥

Closing : शुद्धिजौजातौ गुणएवराशित्वेनांगीकृतः ॥१४॥
पचगुणो ॥७० ॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ दशगुणे ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हृतशेष ॥१४॥ एव बहुत्वे गुणनामैक्य भाज्य अग्राणामैक्यमग्र प्रकल्प्यसाध्यम् ॥

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितोलीलावायां कुट्टकाध्याय समाप्ता ॥

१३४९. मदनविनोद निघटु

Opening : वीज श्रुतीना सुधन मुनीना वीज जडाना महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्र भवपातकाना किंचिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥

Closing : .... यो राजा मुखतिलक कद्धारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मिते च ग्रथेन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो ~ प० गुणगणमिश्रकोऽय ॥

Colophon इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघटौ मिश्रपवर्गस्त्रयोदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघटौ समाप्तम् ।
सवत् १६१२ का० सु० लिखापित श्री मानसिघ जी — पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

१३५० नाडीप्रकाश

Opening . नाडी तीन प्रकार के है। इगला चद्रमा है सो वाया है। पिंगला सूर्य है सो दाहिना है। दोनो चले सो सुख मन है। कृष्ण पक्ष सूर्य का है। शुक्ल पक्ष चद्रमा का है।

Closing : दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान।
तीन नाक जीह्वा एकै का सभेद पहचान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३५१. निदान

Opening प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसहारकारकम् ।
स्वर्गापवर्गयोद्वारे त्रैलोक्ये शरण शिवम् ॥१॥

Closing ग्रहण्या समधातु सनग्निश्च समदोरमलक्रिय.
प्रसन्नात्मेंद्रिय मना स्वस्थामित्यभिधीयते ॥

Colophon : इति निदान ग्रं। समाप्त । शुभमस्तु । सवत् २७५६ ।

विशेष— यह ग्रथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवाचार्य हैं।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० ११८ ।

१३५२ पंचदशविधान

Opening : अथात सत्रवक्षामि सुन्दरीयत्रमुत्तमम् ।
तदक तु प्रवक्षामि शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥१॥

Closing : इनगेगुगन करके मो राजा-प्रजा सर्वसकारी सिद्ध होय ।

Colophon : नही है ।

१३५३. रामविनोद

Opening : सिद्धि वृद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।
विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ॥

Closing : द्रोनि मनक को चार ... राम विनोदी विनोद सौं ॥

Colophon इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सवत् १९०६ मार्गोत्तमे मासे वैशापमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया वार भौमवारे का लिखि के सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र वदलीदास ने पोथी लिखी पठनार्थ अपने हित हेतवे वस अग्रवाल का है ।
यादृश पुस्तक ... दीयते ॥१॥
जल रक्षेत् ... पुस्तकम् ॥२॥

१३५४. रूपमगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच वराबरी आदी का रस मैं गोली करे मिरच प्रमाण सध्या प्रात: खाय ।

Closing नित्यज्वरवालानै दीजै पाडी का मूत्रसू ने जरावा ताने दीजै निब-
कार ससू चोथावालाने दीजै इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मगलरूप सपूर्णम् । शुभ भूयात् ।

१३५५ शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीश केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्षे मूत्रपरीक्षणम् ॥१ ॥

Closing : पानट २ सुपेदकथट २ अफीमट १ इकत्र कर गोली करनी मासे
१ प्रमाण तदलोदकेन समीप अतिसार जाहि ।

Clolophon इति श्री सारदातिलक ग्रथ समाप्तम् । लिखितमिद नित्या-
नन्देन नारनौल मध्ये लिखायत पडितजी श्री चेतनदास जी-
कस्मिन्सम्वत्मरे सवत् १६७६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवा-
सरे अलिखदिद पुस्तक यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६ सारंगधर सहिता

Opening : श्रिय सदद्याद्भवता पुरारिर्यदंगतेज प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मलचन्द्रिकाया महौषधीव ज्वलिता हिमाद्रौ ॥१॥

Closing . विविधगदार्ति दरिद्रया ? नाशन याहृग्निमपि चकार वियोगरत्नैः ।
विलसतु शारगधरस्य सहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेपु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचिताया सहिताया
चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्याय समाप्तोयमुत्तर खड।

१३५७ वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।
कुमति विनासन सुमनकर मगन सुदन करेइ ॥

Closing : वैद्य ग्रथ प्रमाग सत्र ढूढ लिया तस लोक ।
छह से सही सब जरा का आधार ।।

Colophon : इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्मवे स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता। सवत् १७६६ वर्षे मिती आषाढ सुदि १५ मगलवार लिखित पूज्य स्थिविर जी ऋषि श्री गणेश जी तत्‌शिष्यणी लिखित आर्यापुम्यालो शुभ भवति ।

१३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening : प्रणम्य नित्य शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिवितयानि धिय ।
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मगलमेव कुर्य्यात् ।।१।।

Closing : चतुर्भिराटकैं द्रोण कलसोप्यल्वणोमत: ।
उन्मनश्च घटोराशि द्रोणपर्यायवाचक ।।६।।

Colophon : इति परिभाषा। इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिश्रविरचित वैद्य-मनोत्सव सपूर्णम्। सवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिद पुस्तक नित्यानद ब्राह्मणेन लिखायत पडित श्री चेतनदास जी। श्रीरस्तु।

१३५९ योगचितामणि

Opening : यत्र वित्रासमायाति तेजासि च तमासि च ।
महीयस्तदय वदे चितानदमयमहम् ।।

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्व योगशत यथा ।
तथैवाय विजयता योगचिन्तामणिश्चिरम् ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपूरीयतपोगणनायक श्रीहर्षकीर्तिसूरि सकलिते वैद्यकसारो श्रीयोगचितामणौ मार मग्रहे मिश्रिकाध्याया सप्तमा

समाप्ता । इति श्री योगचितामणि शास्त्र समाप्ता ।
सूत्रार्थ मिलिनेन ग्रथमान ६५०० सवत् रामगणोदधितू प्रमिते सवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्या सोमवारे लिखितम् । पूज्य श्री ऋशि स्थिवीर जी श्रीगणेश जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६६ ।

१३६० यूनानी चिकित्सा

Opennig   विघन विघ्न) विनासन देवकूँ, प्रथम करु परनाम ॥१॥

Closing : हरताल३ अरद ८ दिरम मुर्ष ८ दिरम, करूरवाई ८ दिरम माजू २० दिरम, जगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम, अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच मिरके कैं गलावैं २ हप्ते बीच धूप के रखैं बाद कर्श करैं ।

Colophon . नहीं हैं ।

१३६१. आचार्य-भक्ति

Opening   सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान् ॥

Closing : इच्छामि भते आयरियभक्तिकाउस्सग्गोकउ तस्सालोचेउ सम्मणाण सम्मदमणसम्मचरित्त जुताण, पचविहाचाण्ण आयरियाण आयारादिसुदणाणो वदेसियाण उवज्झायाण तिरयणगुण पालणरयाण सव्वसाहूण णिच्चकाल अच्चेमि, पुज्जेमि वदामि । सुगइगमण समाहिम`ण जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon : इति आचार्य भक्ति. ।

देखे, जि० र० को०, पृ० २५ ।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१ ।

१३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद
सोभाअतिभारी हैं ।
कहत विनोदीलाल मन वच तिहू काल ऐसें नाभिनंदन को
वंदना हमारी हैं ॥१॥

Closing : तुम तो जिनददेव जगते ....
.... त्रिभुवननाथ गति मेरि यो बनाई हैं ॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम् ।

१३६३ आदिनाथ आरती

Opening : आदिनाथ तुम जगताधार, भवसागर उतारन पार ।
मैं तुम चरन कमल को दास, आदि नाथ मेरी पूरो आस ॥१॥

Closing : तुम अनंत गुन है प्रभु कैसें पाऊ पार ।
थोडी कर मानौ घरी भैगे कहै बखान ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम् ।

१३६४ आदिनाथस्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथ पार्श्वं वंदे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीर्विलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभ्रतादि नश्यते व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४६ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयौ ।
नाभिराम मरूदेवी नदन नगर अयोध्या जनम लीयौ ।।

Closing : जो जिनवर ध्यावैं भावना भावैं मन वच काया भाव धरे ।
पाप निकदने भवय भजन मुक्तिवरागणा सो वरए ।।२२।।

Colophon इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening . ॐ ह्री जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रहुम्तेमहासिंहयानस्थिते सर्वलक्षणलक्षिताङ्गे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निस्कम्पे निर्मले नि प्रपचे ।

Closing : अवेदतावलवत्ना मादृशा भवतीत्यश
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ।।४।।

Colophon : इति अंबिकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ श्री सवत् १६५' ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियै प्रतिदिन प्रतिभासमानै,
जन्मप्रवधमथनै.प्रतिभासमानै ।
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रापेजनैर्ि-सनुपदवीक्षणेन ।।

Closing : तुष्टि देशनया जनस्य मनसे ········ सतामीशिता ॥

Colophon : इति श्रीदेवनद्याचार्य कृत चौवीस महाराज ····· काव्य महास्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० १ ।

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

१३६८. आरती

Opening : जै जै जै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू ।
नाभिराय मरुदेवी नन्दन ससार सागर तारण जू । जै जै० ॥१॥

Closing : जे पढै पढावै मन सुद्ध ध्यावै इह आरत सू सफल भया ॥१२॥

Colophon : इति श्री निर्म्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६९. आरती

Opening : अष्टदरबकरसव एकठा जीमना आरूडी मनाहो ।
जिन जी के चरण चढाइ श्री जिन पूजो जी भाव सौं ॥१॥

Closing : इयणर देवे णिय सूयसत्तिय जिणचउवीस विथा भत्तिया
ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो समारिनपछइ आवइ ॥१॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी
करम दलन सतन हितकारी ॥ आर० ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा
तुम हो सव देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक वदित आणदकारी । इ० ।
सातमी आरती श्री जिनवाणी
द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदाणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon इति आरती सपूर्णम् ।

१३७१. आरती

Opening : आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

Closing जिन आरती कीजै · · गति सहित निकलक ॥

Colophon : इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥ टेक ॥

Closing : जय-जय आरती शात तुम्हारी ।
तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon ; इनि आरती श्री शान्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

Opening : पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैः
कुकुमादि गधसार चंदनादिमिश्रितैः ।
कामधेनुकल्पवृक्षचित्यरत्नयंत्रकम्
स्वर्गमो[illegible] स[illegible]न् सं [illegible]रण [illegible] ॥१ ।

Closing : इत्थ श्रीजिनराजमार्गविदित ... ... वासर प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिदोहि सउरे लाधेउ नरभवसा ।
आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचार कि ॥१॥

Closing : आरम छाडी आतम रे, पीय सजम रस पूरि ।
सिद्ध बधू सउजिम रमउ इम दौलइ रे श्री विजई देवसूर वि ॥
॥ चेतो रे चित प्राणी ।१५॥

Colophon : इति सज्झाय समाप्ता ।
वडे न हुजउ गुन बिना, बिरद वडाई पाई
कहत धतूरै सू कनक, गहनौ गढ्यो न जाई ॥१॥
कनक कनक तै सौगुनौ, मादकता अधिकाई
इति पाइयै बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७५. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,
तुही आधारा रासुजस तव जगमे अनूपे
नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे ।
तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहर काहि भूपे ॥१॥

Closing : पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ॥
जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening : ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ॥
हवस सव अव की दफा सव काम होना चाहिए ॥१॥

Closing : मनमानता वरदान की दातार तु ही है ।।
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ।।

Colophon : नही है ।

१३७७. भजनावली

Opening जं जं जं जिन चद वद दुख दहने वारा,
भीर भयकर हार सार सुख सपति सारा ।
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी,
असरन सरन सहाय होत जन सुनन पुकारी ।।१।।

Closing : भुजचारि उदार भडार अपार ।
सभी सुषमार समस्त भरो वो ।
दरसे परसे पद पक जई ।
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ।।

Colophon : नही है ।

१३७८ भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ... ।

Closing : अज्ञानवत अनत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।
असरान परी क्या कहूं जी ... ।।

Colophon : नही है ।

१३७९ भजन

Opening : छल सुज सम हि भाव ही कीरत को नहि अत ।
भागी भारी भीर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ।।

Closing . जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै करुना ।
भवि वृ द को अब दीजिये यह शील का शरना ।

Colophon इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।
विशेष— इसमे भजन के अलावा 'सील महातम' वृदावन कृत भी सकलित है ।

१३८० भक्तामरस्तोत्र

Opening भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्योतक दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगयुगादा-
व लम्बन भवजले पतिता जनानाम् ॥१॥

Closing : स्तोत्रश्रज तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धा,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कठगतामजस्त्रम् ।
त मानतु ग मवमा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०७ ।

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing : देखे, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।
Closing देखे, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्रीमानतुगाचार्य विरचित भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३८३ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing . देखे क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री मानतुंगाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रमनाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening . देखे, क्र० १३८० ।

Closing · देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing । देखे, क्र० १३८० ।

Colophon इति भक्तामरस्तोत्रम् सपूर्णम् ।

१३८७ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे—क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज मित्र सुख लहै तस मनवाछित होई ।।१।।

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पडित श्री रंगविमल लिपि-
कृता सम्पूर्णम् । भादो सुदि ७ शनिवासरे । सवत् १८४६ ।

१३८९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री भक्तामर सस्कृत जी समाप्तम् ।

१३९० भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतु गाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसपूर्णम् ।

१३९१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष तां मालां कठगता अजस्र निरतरं धत्ते
धारयति त पुरुषं,मानतु ग इव सा लक्ष्मी समुपैति या लक्ष्मी
मानतु गेन प्राप्ता सा लभते ।

Cloophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध
टीका समाप्ता ।
मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयाया पडित शिव-
चद्रेण कृता इय सपूर्णम् ।

१३९२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तवन समाप्तम् ।

१३९३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतुंगाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३९४ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें क्र० १३९५ ।
Closing : देखें, क्र० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम् ।

१३९५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीम जिन, आदि सुविधि करतार
धरमधुरधर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥
Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत
जे नर पढ़ै सुभाव सो ते पावैं शिव खेत ॥४६॥
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध सपूर्णम् ।

१३९६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१३९७. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखे, क्र० १३६५।
Closing देखे, क्र० १३६५।
Colophon : इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

१३९८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५।
Closing : देखे, क्र० १३६५।
Colophon इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

१३९९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५।
Closing . देखे, क्र० १३६५।
Colophon . इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५।
Closing . देखे, क्र० १३६५।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख वदि १४ सवत् १९३९, वार आदित्यवार । शुभम् श्री ।

१४०१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३६५ ।

Closing : देखे, क्र० १३६५ ।

Colophon इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२ भक्तामर वचनिका

Opening : देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुर उर लाय ।।
स्तोतर भक्तामरतणी करु वचनिका भाय ।।
मानतुंग वरसूरनै रच्यो भक्ति उर धारि ।।
श्री जिनेन्द्र अनुभावतै बंधन घरै उतारि ।।

Closing सवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विक्रमराय ।।
कातिक वदि बुद्ध द्वादमी पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वचनिका समाप्त ।।

१४०३ भक्तामर वचनिका

Opening : देखे क्र० १४०२ ।

Closing : देखे, क्र० १४०२ ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष—यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१४०५. भक्तामर-टीका

Opening : जो देवनमृमुगुटि सुभरत्नकाति तीर्तोविकास करि ते जिनपाद दीप्ति।
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडी भव जली जनहो जुगादि ॥१॥

Closing : माड्या मनात भरला मुनि शक्र मुति तो स्तोत्र पाठवदला गुरु पुन्यकीर्ति।
मीवोलहा चिनमिले जिनसागराला करी क्षमा निवितो बुध पडिताला ॥५०॥

Colophon : इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम्।

१४०६ भक्तामरस्तोत्र

Opening : घरामू निकल ता मदिर जाणो।
जदि रसता माहि उच्चार करणो॥

Closing : देखे, क्र० १३८०।

Colophon : इति श्री मानतुग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवाधिदेव भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम्।

१४०७ भक्तिसग्रह

Opening : सिद्धान् उद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान भावोपलब्धि.॥

Closing : सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसपत्ति होऊ मज्झ।

Colophon : इति सप्तभक्तय समाप्ताः।

विशेष — इसमे सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तिया सकलित हैं।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४०।

१४०८. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकाय कल्पांतपवनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मानभद्रतमोहर ॥

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र बद्धो मुचति बंधनात् ।
राज्यचोरभय नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ॥११॥

Colophon : इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ६३५ ।

१४०९ भैरवाष्टक

Opening : देखें, क्र० १४०८ ।

Closing : चाहे तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवास के पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल करणा तेज प्रताप आपि करे ।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१०. भैरवस्तोत्र

Opening : य य य यक्षरूप दसदिसचरित भूमिक पायमानम्,
स स स सहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेषर चद्रविम्बम् ।
द द द दीर्घकाय विकृतनखमुख उर्ध्वरोम करालम्,
प प प पापनाश प्रणमतशतत भैरव क्षेत्रपालम् ॥

Closing : भैरवाष्टकमिद पुण्य छ मास पठते नर ।
स याति परमस्थान यत्र देवो महेश्वर ।६॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र सपूर्णम् ।

१४११. भूपाल-चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतन महीकुलगृह .... जिनाङ्घ्रिद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते ' पुन पुन वार वार दर्शन भूयात् ।

Colophon ; इति श्री पडित शिवचद्रनिम्मपित भूपालचतुर्विशतिकाया, वालावबोध टीका सपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र कृष्ण द्वितीयाया पडित शिवचद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्या सोम वासरे सवत्सर १६२७ का सम्पूर्णम् लिखित पडित परमानदेन पठनार्थम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

१४१२ भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : दृष्टस्त्व जिनराज · .... .. भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

१४१३. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखे, क्र० १४१२ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon : इति भूपाल चतुर्विशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४११ ।
Closing : उपसम इव मूर्तिललित — — — चरिष्टमोयम्यधि-
न्वति वाच ।।२७।।
Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्त ।

१४१६ भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : देखे, क्र० १४१२ ।
Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७. भूपालस्तोत्र

Opening : परमातम सम्यक वरन परमभावना सार ।
श्रीभूपाल वरेस कवि करत सुपर हितकार ।।१।।
Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।
जग जीवन जीवन लभ्यौ हीर अवाध अनिंद ।।२७।।
Colophon : इति भूपाल चौवीसी सम्पूर्णम्

१४१८ भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखे, क्र० १४१७ ।
Closing : देखे, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१४१९. बीस विरहमान-आरती

Opening : आरती कीजै वीस जिनद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकद की ।
श्रीमदर जुगमदर स्वामी, वाहु सुबाहु प्रभू शिवगामी ।।आरती।।

Closing अजितवीर्य प्रभु है सिरनामी, भैरो सरन चरन तुम स्वामी ।।आरती

Colophon : इति श्री वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१४२०. ब्रह्म-लक्षण

Opening : ब्रह्मचर्यां भवेमूल सर्वेषा ब्रह्मचारिणाम् ।
ब्रह्मचर्यस्य भोगन व्रत सवनिरर्थकम् ।।

Closing . दृष्टिपूत ' — ' नवम ब्रह्मलक्षणम् ।।

Colophon : नही है ।

१४२१. चैत्यालय-स्तोत्र

Opening : इष्ट जिनेंद्रभवन भवतापहारी .... प्रकरराजविराजमानम् ।१।।

Closing : द्रष्टमपाद्य मणिकाचनचित्रतु ग सकलचन्द्रमुनिद्रवद्यम् ।।१०।।

Colophon : इति चैत्यालय स्तोत्रम् ।

१४२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीचक्रेचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलयां दोलयन्ति,
चक्र विद्युत्प्रकाश ज्वलिनसतमुख खखगेंद्राद्यरुढे ।
तत्वैरुद्भतभावे सकलगुणनिधे त्व महामन्त्रमूर्त्ते
क्रोधोदित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायाति मा देविचक्रे ।।१।।

Closing . यं स्तोत्र मत्ररूप पठितनिजमनो भक्तिपूर्व्वं शृणोति,
त्रैलाक्य तस्य वस्य भवति बुद्धजने वाक्पटुत्व च दिव्यम् ।
सौभाग्य स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भय चक्रदेव्यास्तवेन ।।८।।

Colophon इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखे, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।

१४२३. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४२२ ।

Closing : देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : ईति चक्रेश्वरी स्त्रोत्र सम्पूर्णम् ।

१४२४. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening : प्रभुभव्यराजीवराजीदिनेश शुभ शकर सुन्दर श्रीनिवेशम् ।
सुरैर्दानवैर्मानवैः लिप्तसेव जिन नौमि चद्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing चन्द्रप्रभ नौमि यदगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेदुकातान्
चकोरयुथप्पवति ? स्फुटति कुप्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ।।

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४२५. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१४२६, चारित्र-भक्ति

Opening : येनेद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारागदान्,
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तु गोत्तमागान्नतान् ।
स्वेषा पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रु प्रकाम सदा,
वदे पचतपतमद्यनिगदन्न चाश्मभ्यर्चितम् ।।१।।

Closing : इछामि भते चरित्तभत्तिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लाचेउ
· — — जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

१४२७. चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिन नौमि सभव सुविधि तथा ।
धर्मनाथ महादेव शाति शातिकर सदा ।।१।।

Closing सकलगुणनिधान यत्रमेत विशुद्ध,
हृदयकमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।
जगति विदिततत्वौ य स्मरेत् शुद्धचित्तौ,
भवति सुखनिधान मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ।।

Colophon : इति चतुर्विशति-स्तोत्रम् ।

१४२८. चतुर्विशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विशतिस्तोत्रम् ।

१४२९ चतुर्विशतिस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४२७ ।

Closing : देखे, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुविंशति स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विशति-जिन-स्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथ अरनाथ नयानमि ।
अजित जितमोहारिं पार्श्वं वद गुणागरम् ॥१॥

Closing : भवभिसुखमनेक तम्य यो मानवश्च
विमलमतिर्मनित्र स्तोत्रमेतद्वितद्र. ।
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत,
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाण ॥८॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशति जिनान स्तोत्र समाप्तम् ।

१४३१. चौवीस-तीर्थं कर-पद

Opening : अब मोहि तारो दीनदयाल सब ही मत देखें ।
मैं जित तित तुमही नाम रसाल ।।१।। अब ।।

Closing : पाठक श्री सिद्धिवर धन सदगुरु विलास,
पाठक तिहि विध मो श्री जिनराज मल्हाए । ५। इहि० ॥

Colophon : इति श्री चौवीस तीर्थंकराणा पदानि सपूर्णम् ।

१४३२. चिन्तामणिस्तोत्र

Opening : किं कर्पूरमय सुधारमसय किं चद्ररोचिर्मयम्,

कि लावण्यमय महामणिमय कारूण्यकेलिमयम् ।
विश्वानदमय महोदयमय शोभामय चिन्मयम्,
शुक्लाध्यानमय वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् ।।१।।

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् ।
प्रदलित-दुरीतोघ-प्रीणीत प्राणसध्यम् ।
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीस,
शिवपदतरुवीज व्याधिवीज ददातुम् ।।१२।।

Colophon : इति चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीश सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायसीस मुनिन्द्र गणेन्द्र नमो जोरिहाथ नमो देवि चिंतामणि पार्श्व-नाथम् ।।

Closing · गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ।।

Colophon · इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चिंतामणिपार्श्वनाथ–स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर श्री वीरसेनस्य शिष्यै.
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै ।
जपति पठति नित्य पार्श्वनाथाष्टक य,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमतिनीश ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टक समाप्तम् ।

१४३५. चौवीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौवीस जिन लक्षन लेहु विचार ।
जो कछु सुने सु कहत हूँ, भव्य जन लेहु सुधार ।

Closing : लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार ।
भूला चूका फिर धरो भैगो कहै विचार ॥

Clolophon : इति श्री चौवीस जिन लक्षन आरती ।

१४३६. चौवीस-जिन-आरती

Opening अतिपरमपवित्र जनितसुचित्र वरविचित्रमगलकरणम् ।
प्रणमामि जिनेन्द्र प्रणतशतेन्द्र भवसमुद्रतारणतरणम् ॥१॥

Closing परमजिनेश्वरा मुक्तिपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा ।
मघप्रभवत चरणभजत विरतरन्नु मगलमधिरा ॥

Colophon : इति चौवीस जिन चिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७. चौवीस–दडक–विनती

Opening : वदो वीर सुधीर को महावीर गभीर ।
वर्द्धमान सनमत नमो, महादेव अतिधीर ॥१॥

Closing : अताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारन करन को, भाषो दौलतराम ॥५६॥

Colophon : इति श्री चौवीस दडक विनती सपूर्णम् ।

१४३८. दर्शन–ज्ञान–चारित्र–आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यान व्रत, इन विन मुकत ना होय ।
अधपग अरु आलसी जुरे जलै दवलेय ॥

Closing : इय अग्घु विधारवि भवभय हारवि,
करि विचित्त सुयसस्स मणु ।
भवि भवियण धण्णउ सुह सपण्णउ
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९ दर्शन-स्तुति

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।
शुद्ध भाव ताके मन भयौ सम्यक दृष्टी मुकति हि गयौ ।।

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४० दर्शनाष्टक

Opening : आद्याभवत्सफनता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणाम्बुजवीक्षणेन ।।
अद्यस्त्रिलोकतिलक प्रतिभासनो मे, ससारवारिधिरिय चुलक.
प्रमाणम् ।।

Closing : अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुणैर्निदितमाधव: ।
तस्य सर्वार्थससिद्धि जिने० ।।११।।

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१ देवस्तवन

Opening : श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।
ममारागमदोषविस्तरगत: सेवासमीपस्थित ।।१।।

Closing : इन्द्रमपि भगवति नृन गुणानां कामकल्पनम् ।
स्तोत्र कण्ठ करोति यस्य दिव्यश्रीन्स ममाश्रयति ॥३६॥

Colophon : इति देवस्तवनम् ।

देखें, जै० गि० भ० ग्र० I, क्र० ६५७ ।

१४४२ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो,
घोरं दुःखं भवभवगतोदुर्निवारः करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तचेत्,
जेतुं शक्तो भवति न तया कोपरस्तापहेतु ॥

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनु तार्किकसिंह ।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्यसहाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिराज विरचितं श्री एकीभावस्तोत्रसमाप्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५८ ।

१४४३ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र सपूर्णम् ।

१४४४ एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

१४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : देखे, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति श्री वादिराजमुनि विरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : देखे, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

१४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : देखे, क्र० १४८२ ।
Colophon : इति श्री एकीभाव स्तोत्र समाप्तम् ।

१४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।
Closing : धूपैसुगंध कृष्णागरुचंदनोघौ ।
कृत सुगंध कृतसारमनोहरानी ।। तीर्थंकरा०।।
Colophon : अनुपलब्ध ।
विशेष— एकीभाव के पहले भूपाल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में हैं ।

१४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon . इति वादिराजमुनिकृत एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

१४५०. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : विद्वान अक्षरमात्रापदस्वरहीन नोक्तता अज्ञानेन बालोपकाराय केवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्वेण ।

Colophon : इति एकीभाव टीका सपूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : वादिराज मुनिराज को बढतो सुहित उद्गार ।
स्वरूप रूप अनुभौ कथा, कहत सुपर हितकार ॥

Closing : वादिराज मुनिराज अनुप्रान्दिक तार्किक लोक ।
काव्यकार सहकार जग जीवन हीर सुश्लोक ॥

Colophon : इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम् ।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४५१ ।

Closing : देखें, क्र० १४५१ ।

Colophon इति श्री एकीभाव सपूर्णम् । श्री ।

१४५३. गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परपरा महाधियम् ।

Closing : स्वश्श्रुवद्धिरोधेन मुनिवृ दारकं रत्नदा ।
प्रसादितो गणेद्रोभूद्वक्तिग्राह्या हि योगिन ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजसूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्य रौहणायेंद्रभूतये ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्व भवसर्वार्थसिद्धये ॥८॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे क्र० १२६६ ।

Colophon : इति घटाकर्ण स्तोत्रम् ।

सदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२६६ ।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening : वदौ दिगंवर गुरु चरन जग तरन तारन जानी ।

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान ॥
जिनके अनुग्रह विन कहूं नहो कटै करम जजीर ।
ते साधु मेरे उर वसो मेरी हरो पातक पीर ॥

Closing : करजोरी भूधर विनवै कव मीलेवै मुनीराज ।
आन मन की तव पुरै मेरे सरे-सगने काज ॥
संसार विषम विदेह मैं विना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन वसो मेरी हरो पातक पीर ॥८॥

Colophon इति गुरु सगती सपूर्न ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर वसै ते भव जलधि जिहाजु ।
आप तिरै पर तारहिं, ऐसे श्री ऋषिराज । ते गुरु ॥

Closing : देखें, क्र० १४५६ ।

Cloophon : इति गुरुस्तुति सपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखें, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुर चरन जहाँ धरै जग मै तीरथ होय ।
सो रज मम माथे लगे भूधर मागै एह ॥१४॥

Colophon : इनि विनती सम्पूर्णम् ।

१४५९ गुणावलि

Opening : श्री अरिहंत अणत गुण, सेवइ सुरनर इद ।
पाय कमल जसु प्रणमता, लहीयै परमाणद ॥१॥

Closing : श्रीखेम साखै सोभता वा शांति हरष मुणिंद,
तसु सीस कहे जिन हर्ष मुनि गुरु नामै हो दिन-२ आणद ॥

Colophon इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६०. गुणाष्टक

Opening . गुणाधीश योगी मुनि ··· सकल जन के काम शरते ॥

Closing : सुनो गामै धाते ·················· आश्रि परमा ॥

Colophon : इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक संकलित हैं ।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening : णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ॥
एसो पच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मगलाण च सव्वेसिं पढम हवइ मगलम् ॥

Closing : ये रे सावलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भावरिया ।
— — जो भवसागर से तरिया । येरे ॥

Colophon : नहीं है ।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening : मङ्क्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यन्तराणां निकाये,

नक्षत्राणा निवासे ग्रहगणपटले तारकाणा विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसाद्राधकारे,
श्रीमतत्तीर्थं कराणा प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वदे ॥१॥

Closing . इन्द्र श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिश ·· · प्रणमता चित्त-मानदकारी ॥

Colophon इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै करुना ।
भविवृ द को अव दीजिये यह शील का शरना ॥ टेक ॥
सुचिशील के धारा मे जो स्नान करे है ।
मल कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है ॥ टंक ॥
व्रतराज सो वेताल व्याल काल डरे है,
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ॥ जिनराज ॥१॥

Closing जस सील का कहने मे थका सहस वदन है ॥
इस सील से भव पाय भगाकर मदन है ।
यह सील ही भविवृ द को कल्यान प्रदन है
दस पैंड ही इस पैंड से निर्वान सदन है ॥१४॥ टेक ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपजर-स्तोत्र

Opening . ॐ ह्री श्री अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नम । ॐ ह्री श्री अर्हं सिद्धेपोयो नमो नम । ॐ ह्री श्री अर्हं आचार्य्येभ्यो नमो

नम· । ॐ ह्रीं श्री अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नम· । ॐ ह्रीं श्री अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नम ॥१॥

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहंस ।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति जिनपजर स्तोत्र समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।

१४६५. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६४ ।
Closing : वात सब्रुच्छ ग ... मनोव छिनपूर्णाय ॥२४॥
Colophon : इति जिनपजरस्तोत्र सम्पूर्णम् । पडित अजयचन्द्र ।

१४६६. जिनपजर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६४ ।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon इति वज्रपिंजरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४६७ जिनरक्षा-स्तवन

Opening : श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम् ।
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

Closing : राकाया ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम् ।
पूजाविधि समायुक्त कर्त्तव्य सज्जनैर्ज्जनै. ॥२१॥

Colophon : इति जिनरक्षा स्तवनम् ।

१४६८. जिनसहस्रनाम

Opening : पच परम गुरु को नमो उरधरि परम सु प्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी चौवीसो धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, वन्यौ अनुपम रास ।
जो पढसी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथौ-२ चद्रवासरे ··· ··· ।
सूवा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नवावगज वारावकी नाम है ।
टिकइत नगर सुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैयाँ-भलो ग्राम है ।
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अन्नजल के स्ववम आयो यहि ठाम है ।
भोज नृप देश जिले शाहावाद आरा नग्र राय जी बुलाकचद-मदिर मुकाम है ।।१।।
श्री सहस्रनाम पाठ जी को चढाया श्री चद्रप्रभु स्वामी जी के मदिल मे व्रत उद्यापन का मुसम्मात ······ कुँअर भार्य्या वाबू रामा प्रमाद अग्रवाल श्रावक दिगम्वर आम्नाय धारक आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौ सुदी ८ सवत् १६५६ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४० ।

Closing : जन्मजन्मकृत पाप जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरान्तक हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४।।

Colophon . इति जिनदर्शन सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७०. जिनदर्शन

Opening प्रभु पतितपावन मे अपावन चरन आयो शरण जी,
यो विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी ।

Closing · या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।
नवल नवल गुण गाय कै जै जै जै जिनदेव ।।

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेप— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है ।

१४७१. जिनदर्शन

Opening : देखे, क्र० १४७० ।

Closing . जाँचो नहीं सुरवास · · दीजीए शिवनाथ जी ।।

Colophon : इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening · ॐ नमोभगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशाकशखगोक्षीरहारधवल । गौत्राय घातिकर्म्मनिर्मलोछेदनाय जाति जरामरणविनाशनाय ।

Closing · आँ क्रौं क्षा क्षू क्षो क्ष ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चदप्रभतीर्थंकर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल दुखहरन मगलकर विजयकर स्तोत्र सपूर्णम् ।

विशेप— इसके आगे एक मत्र भी दिया गया है ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I क्र० ६७६ ।
रा० सू III, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : भृंगारतागेलवरदर्प्पर्णे चामराणी श्रकचदनादिनवरत्नविभूषितागे दैत्यास्तितापरिजनै करकजयुग्मे ॥६॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७४. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद ह्रा ह्री हू हू फुट स्वाहा । अनेन मत्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० — अनेन मत्रेण गजेन्द्र नरेन्द्र सर्वशत्रू वशीकरण पूर्वमत्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमत्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : चद्रहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु स्फुट घ्र द्रा आ क्रो क्षी क्षू क्षी ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सपूर्णम् ।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्णत जीर्ण-शीर्ण ।

१४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : ... तस्याभरण पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपाससरासनायुध उत्तमासनेन स्थापित तस्याग्रे जाप्य रक्तपीतउज्वलफलानि मध्यरात्रे — — ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७८. ज्वालामालिनी

Opening : स्नेहाच्छरण प्रयाति भगवन् पादद्वय ते प्रजा,
हेतुस्तत्र विचित्रदु.खनिचय ससारघोरार्णव ।
छायानुरागं रविं ॥१॥

Closing : छेदय छेदय भेदय भेदय डरू डरू छरू छरू
हरू हरू स्फुट स्फुट घे घे .. ..
— .. ज्वालामालिन्या ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष— इसमें शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

१४७९. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : कल्याणमदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमङिघ्रपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य १॥

Closing : जननयनकुमुदचद्र प्रभासुरा, स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर सस्कृत समाप्तम् ।

देखे जै० सि० भ० ग्र० I, ६७२ ।

१४८०. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७९ ।
Closing : देखे, क्र० १४७९ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी सस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening देखे क्र० १४७९ ।
Closing . देखे, क्र० १४७९ ।
Colophon इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening · देखे, क्र० १४७९ ।
Closing : देखे, क्र० १४७९ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७९ ।
Closing : देखे, क्र० १४७९ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४७९ ।
Closing : देखे, क्र० १४७९ ।

Colophon : इति श्री कुमुदचद्राचार्य्यविरचित श्री कल्याणमदिरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४८५. कल्याणमदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।

Closing : अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्त्ता कुमुदचद्राचार्यस्य नामोऽपि प्रकटो जात ।

Colophon इति कुमुदचद्राचार्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावबोध टीका पडित शिवचद्र निर्म्मापिता अलमगमत् ।

१४८६ कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।
वदौ परमानन्द मै सो घट-घट अतरलीन ।।

Closing : यह कल्याणमदिर कियौ, कुमुदचद्र की बुद्धि ।
भापा कियो वनारसी, कारण समकित शुद्ध ।।

Colophon इति कल्याणमदिर पूरन ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

१४८७. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening . श्री नवकार जपौ मन रगँ श्री जिनशासन सार री माई ।
सर्व मगल मैं पहिलौ मगल जपतां जय जयकार री माई ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर भापा सपूर्णम् ।

१४८८ कल्याणमदिर-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १४८६ ।

Closing देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मदिर स्तोत्रभाषा सपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमदिर

Opening : देखे, क्र० १४८६ ।

Closing : देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९० कल्याणमदिर

Opening . देखे, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मदिर की भाषा सपूर्नम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : श्रीमत्सर्वज्ञदेवनिजमुकुटतटाभ्यतरे सदधानम्,
चचच्चामीकराभ खचितमणिशतैं भूषणैर्भूषितागम् ।
स्फुर्जत्काम्याभिलाषप्रदममलतर वेत्रयष्टिंदधानम्
स्तोष्ये श्री क्षेत्रपाल जिननिलयगत विघ्नविध्वसदक्षम् ॥

Closing : ॐ आ क्रो ह्रीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न-
सपरिवारसहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठ ठ मम सन्नि-
हितो भव भव वषट् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

Colophon : सपूर्णम् ।

१४६२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६१ ।

Closing : इम स्तव यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्त्ते,
भक्त्यातिकाल सतत पवित्र भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्तिः ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६३ क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १६०८ ।

Closing : भैरवाष्टकमिद — — भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४६४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री नमो भगवति पद्मावती ह्रा ह्रा कात्यायनी हू हू योगिनी
नवकुलनागवधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ — ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चति बधनात् ।
त्रिसध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयाद् ॥१६॥

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयभुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Closing : नामाष्टकसहस्राणा ये पठति पुन पुन ।
ते निर्व्वाणपद यान्ति निश्चयेननात्रमसय ॥

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४६६ लघुसहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४६७. लघुसहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १४६८ ।

Closing : देखे, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्र सपूर्णम् ।
सवत् १८४२ वर्षे शा० १७ ७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ ।

१४६८. लघुसहस्रनाम

Opening : नम त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलापया ॥१॥

Closing : देखे क्र० १५६५ ।

Colophon इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७० ।

१४६६. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जरारुजा जन्महृता हृता हृता ।
पार्श्वे फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ॥१॥

Closing : तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौमले,
विख्यातो भुवि पद्मनदिसुधियस्तत्वस्य कोश निधिः ।
गभीर यमकाष्टक भणति य. संभूयसा लभ्यते ।
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिद स्तोत्र जगन्मङ्गलम् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ७३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४०-१४१ ।
जि० र० को०, पृ० ३३४ ।

१५००. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४९९ ।
Closing : देखे, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

१५०१ लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४९९ ।
Closing : देखे, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति श्री लक्ष्मीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२ महावीर आरती

Opening : आरती करी जिनवीर की, सुन पिया मेनिकराय ।
जन्म-जन्म सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ॥१॥

Closing : जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलंक ।
सीवपुर पाई जै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलक ॥

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : सपूर्व्वं सूरिभिराम्नात क्षेत्रपालसपर्यका ।
तथाह मडन वक्ष्ये सर्वविघ्नोपशातये ॥१॥

Closing : यथापूर्व्व मया श्रुत्वा तथा एव मया कृतम् ।
क्षेत्रपालविधि दिव्या विघ्नदु खप्रणाशकम् ।

Colophon : इति मडलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४ मगल आरती

Opening : मगल आरती कीजे भोर विघन हरन सुभ करन किशोर । टेक ।
अरहत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ॥१॥

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो ॥

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करे १२५००० दिन तीन मे जब
उपवास के स ने च्रमो वनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर
फूल ।

Colophon नहीं है ।

१५०६ मगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट ' ' कुर्वं तु ते मगलम् ॥१॥

Closing : इत्थ श्रीजिनमगलाष्टकमिद • • कुर्वं तु मगलम् ॥१०॥

Colophon : इति मगलाष्टक सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग० I, क्र० ७०५ ।

१५०७. मगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत हैं प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमति मेरी ॥

Closing · निस्तार के तुम मूल स्वामी बडे भागन पाइए ।
रूपचद चिंता कहा जिन चरण सरणनि आइऐं ॥

Colophon इति रूपचद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१५०८· मुनीश्वर विनती

Opening · वदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,
जे भरम भारा रोग को है राजवैद्य महान ।
जिनके अनुग्रह विन कवि नहि करे कर्म जजीर,
ते साधु मेरे उर वसे मेरी हरो पातक पोर ॥१॥

Closing कर जोड भूधर वीनमै वे मिलै कव मुनि राय ।
इह आस मन की कव फलै मेरे सरे सगले काज ।
संसार विषम विदेस मे जे विना कार वीर ॥ ते साधु० ॥८॥

Colophon : इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

१५०६. नमस्कार

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखे, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१०. नमस्कार

Opening देखे, क्र० १२८७ ।

Closing : देखे, क्र० १५०६ ।

Colophon इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११ नदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि ... विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing : अन्यत्र स्वपन् जाग्रन् तिष्ठन्नपि पथि चलन् ... स्तोत्र सुकृती ॥११॥

Colophon : इति सपूर्ण ।

देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२ नदीश्वर-भक्ति

Opening : देखे, क्र० १५११ ।

Closing : ... दुक्खखओ कम्मक्खओ वोहिलाओ सुगइ गमण समाहि-मरण जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इनि नदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभवतय समाप्ता ।

१५१३. नरक-विनती

Opening : आदि जिनद जु हारीयै मन धरि अधिक उल्हासो जी ।
मन वच काया शुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना
दु:ख दोहिल ।।१।।

Closing : प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयै ।
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयै ।।

Colophon : इति श्री नरक विनति स्तवन सम्पूर्णम् ।

१५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमत्रस्य भार्गवऋषि अनुष्टुप् छद
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयूर्थे जपे
विनियोगः ।

Closing : श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखो कोटिवालार्कभामम्,
विद्युद्वर्णा वरवरधरा भूषणाढ्या सुशोभाम् ।
वीजापुर सरसिजयुग विभ्रती स्वर्णपात्रम्,
भर्त्रायुक्ता मुहुरभयदा महामय्यच्युतश्री. ।।१०५।।

Colophon इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदय सपूर्णम् ।

१५१५ नवग्रह-स्तोत्र

Opening : जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकाना सुखहेतवे ।।

Closing भद्रबाहु महाश्चैव पचमश्रुतकेवली ।
तेन विद्यानवादार्च ग्रहशांतिरुदीरित ।।२१

Colophon : इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० २०६ ।

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — — जिनपूजनात् ॥१॥

Closing भद्रबाहुरूवाचेद पचमश्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादत पूर्वाद्ग्रहणाति विधि श्रुता ॥११॥

Colophon इति नवग्रह शाति स्तोत्रम् ।

१५१७ नवकारढाल

Opening . पहिलो लोक अलोक ए ढाग छै समरो श्री नवकार
मार पूरव तणो नव निध सिद्ध आगै सदा ए ।
महिमा मोयी जास सकट सवि टलै मिलय मनोरथ मपदा ए ॥

Closing : दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवछित सुखथाय । नमु न० ।
दया कुशल वाचक वदै धर्ममदिर गुण गाय ॥२३। नमु न० ॥

Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८ नवकार-स्तोत्र

Opening : हस्तावल वोर्हता पापाद्वा मचराचरस्य जगत ।
मजीवन मत्रराट् ••••• ॥१॥

Closing • अन्यच्च ••• सुकृति ॥१२॥

Colophon ; इनि पत्र नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९ नवकारमत्र-स्तोत्र

Opening • ॐ परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पजराभि स्मराम्यहम् ॥१॥

Closing : यश्चैना कुरुते रक्षा परमेष्ठिपदै. सदा ।
तस्य न स्याद्भ्रव व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मत्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ९ ।

१५२० नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरौ सरन चरन तुम आयौ ।
भव भव मै प्रभु होइ साहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरौजी कृत आरती ।

१५२१ नेमिनाथ-स्तोत्र

बिशेष— यह पूर्णतया जीर्ण है ।

१५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हूमत पाये करिने सेव ।
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणे सार ए निजामणी भवतार ॥५४॥

Clolophon इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि सपूर्णम् ।

१५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरुपमशिवमचलमनामय प्राप्तम् ।

Closing : देखे, क्र० १५१२ ।

Colophon : इति निर्वाणभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१७ ।
जि० र० को०, पृ० २१४ ।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वदौ मदा, भाव सहित सिरनाई ।
कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई ।

Closing : सवत् सत्रहमै इक तान आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१५ ।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति निर्वाणकाड भाषा सपूर्णम् ।

१५२६ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम् ।

१५२७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाउ भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२९. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५२४ ।
Closing देखे, क्र० १५२८ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम ।

१५३० निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५२४ ।
Closing : तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वदन कीजै तहाँ ।
मन वच काय भाव सिरनाई वदन करो भविक सिरनाई ।।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा सपूर्णम् ।

१५३१ निर्वाणकाण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो चपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।
उज्जते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो । १।।

Closing : जो पटइ तियाल णिव्वुइ कडपि भाव सुद्धीए ।
भुजदि णरसुरसुक्ख पच्छा सो लहइ णिव्वाण ॥

Colophon : इति निर्वाणकाड समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री णिव्वाणकाड की गाथा संपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकाड समाप्तम् ।

१५३४. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकाड संपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकाड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
Closing : देखे क्र० १५३१ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड प्राकृत मपूर्णम् ।

१५३७ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।
Closing देखे क्र० १५३१ ।
Colophon . इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणकाण्ड

Opening श्री अर्हंत अनत गुन सिद्ध सूर उवझाय ।
सर्वसाधु के चरण जुग वदो मन वचकाय ।।१।।
Closing : देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाड भाषा समाप्तम् ।

१५३९ निर्वाणकाण्ड

Opening . रावण के सुत आदिकुमार,
मुक्त गये रेवा तट सार ।
कोडि पाच अरु लाख पचास,
ते वदौ ॥
Closing · देखे, क्र० १५२४ ।
Colophon : इति निर्व्वाणकाड सम्पूर्ण ।

१५४३. पद

Opening : आज गई थी समवसरण मा जिनवचनामृत पीवा रे।
आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरषे निरषेवा रे
।।आवा ।।१।।

Closing : परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजै
परम भगति जिनराज तुहारी अपणो कर जाणीजै ।३।। कु० ।

Colophon इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम् ।

१५४४. पद

Opening : मिल जाओ ·· गुरु के वचन मोती कान मैं ।

Closing : सात विसन आगे आवागवन निवारो ।। वृ० ।।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१५४५ पद

Opening विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल वेकरारी है ।। विना ।।
चौरासिलाप मे भटको बहुत सी देहधारी है ।
मुसीवत जो पडी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है।। विना ।। ।।१।।

Closing देव त्वदीय · · तव दिव्यघोषम् ।।४।।

Colophon : इति काव्य सपूर्णम् ।

१५४६. पद

Opening . देखो मतलव का ससारा, देखो मतलव का ससारा ।। टेक ।।

Closing : भाग चदमा चद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याकों निहार
स्याद्वाद की उचरनी
परनति सव जीवन की तीन भात वरनी ।। परनति० ।।४।।

Colophon   इति पद सम्पूर्ण । मिति भादव बदी [illegible] वार शनिश्चरवार संवत् १९४८ का । लिखत अमीचंद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

१५४७ पद

Opening : तुम बसो निरंजन नाथ मुक्ति पद पाई ।
दे चमक अगनित जोति सदा सुखदाई ॥ टेर ॥

Closing [illegible] हितकार सदा [illegible] ।
अब तुम चौरासी माहि फेरि नहीं आऊँ ॥
ध्याई जिनदे [illegible] निजदास [illegible] गाई ॥ तुम बसो ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्ण समाप्तम् । शुभ भूयात् मिति भादव सुदी ११ वार सोमवार संवत १९४८ लिखत अमीचंद श्रावक पाल-मग्राम का वासी ।

१५४८. पद

Opening : दिन चार्न चोल दुनिया सौनप जमारोपाय जी ॥

Closing : पतरी मान्न जावतार साम मिल गया चोर,
पतरी वाण भया ·· ॥

Colophon   अनुपलब्ध ।

१५४९ पद

Opening : नेमि सावरो मे म्हारि प्रीत लगी हो ।
सतु खग दिवारि सील जो न किया जोर जुगती गो तारी लगीहो।

Closing : ... नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।

Colophon : पद सपूर्णम् । सवत् १९१६ मिति चैत्र वदी १५ । बाबू हरलाल जी अग्रवाल गागिलगोत्रस्य पुत्र बाबू बधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुवन बीवी पुस्तक लिखापित आरे मध्ये सपूर्णम् ।

१५५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का ...... उबारोगे तो क्या होगा ॥

Closing : अधम उद्वार पूरन के · नीकारोगे तो क्या होगा ॥

Colophon · इति पूर्णम् ।

१५५१. पद

Opening शरण पिया जैसो होसी रघुवीर ॥

Closing . ·· मेरी वार क्यो विलम्ब करो रे ॥

Colophon : नही है ।

१५५२ पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।
आप तरे आप ही ए तोरे देखो चित मे जोई ।
लाख वात की वात है चेत न जाने सिवसुख होइ ॥ए जी का ॥१॥

Closing . वादि न क्यो न विचारी चेतन अवहु होहु खरे ।
जब सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ॥ ए चेतन ॥

Colophon . नही है ।

१५५३ पद

Opening किये आराधना तेरी हिये आनद व्यापत है ।
तिहारे दर्शन देखें सकल ही पाप नाशत है ॥१॥

Closing : दुर्लभ है नर अवतार नहि बार बार आवत — …
— … सब साधुन ने गाई ॥१२॥

Cloophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तम् ।

विशेष— पद के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी सकलित है।

१५५४ पद

Opening : जाके वदन पखत है री सुक्ति महासुख जानि ॥ माधुरी ॥

Closing : सबही पाई भोग सजोग, तैं मिल तैं तजि लीनों जोग ।
शील यत्न चित्त मैं दृढ राखि, जग भाखी तेरी उत्तम साखि ।

Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोडी माय नाए नमो, वेरी वेरी ।
हे वीर पीर हरिये मिलावो मे अब मेरी ॥ टेक ॥

Closing : प्रभ जी तुम तीन ज्ञानधारी,
सच्चे होगे ब्रह्मचारी,
तजी तुम राजुल सी नारी,
भये हो गिर के तपधारी,
धर्मचदनी रामचद गावै जिन शरण लिया,
हम को छांडि चले सखी री साजना ॥५॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जातरे
चूकत जे औसर ते पीछै पछितात रे ॥ प्रा० ॥

Closing : माधुरी जिनवानि चलो री सुनिह,
विपुलाचल परि वाजै वाजैत भुनक परी मेरे कान ।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, वदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नही है ।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है ।
अरीहत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी है ॥

Closing अरज सुना वेहरमान वदो नितमेव रे
चेतन को तार लेव मत बीसारो टेव रे ।। श्र० ॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् ।

१५५८ पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥

Closing हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी हैं,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यो आप सवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृंदावन कर जोर कहैं प्रभु आज हमारी ही वारी है ॥टेक।

Colophon . इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening . मोह नीद मेरी उर भ है, भोत दीना नें जाया । जीन ॥१॥

Closing अस्पष्ट ।

Colophon : नही है ।

१५६०. पदसग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत है ॥१॥

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल मो मैं अचल मैं हू।
जिनद वनस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम्। मितिमाघ वदी १।

१५६१. पदसग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ॥
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठढा पानी
चावने को पान बीडा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये ताबु आसमानी ॥

Closing : तीन खड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ॥ सु० ॥

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियौ
महाराज सवो मन मोह लियौ ॥ टेक ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६३ पद-हजूरी

Opening : धगी धन आज की आई सरे सब काज मो मन के ॥

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरौ।
द्यानत की अर्ज वीनती जामन मरन हरौ ॥

Colophon : पद संपूर्णम् ।

१५६४. पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥
वीसतीर्थंकर वीस कूट मे कर्म काटि सिद्ध पाई ।
तिनके चरण कमल नित वदौ मन वच तन लवलाई,
पाप सव जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing : चेत चेतन वेचेत तुम्हे बार बार समझाई ।
कहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई ।
याहि ते शिव सुख पाई ।
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon इति सम्पूर्णम् ।

१५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकातदुर्व्वामारप्टतदृशभानुवे ।
जिनाय सकलाभीप्ट ध्यायनि:कामधेनवे ।

Closing , दिव्य स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसपत्करम्,
भूतप्रेतपिशाचराक्षसभय विध्वसनिर्णाशनम् ।
आनरसते ? वाञ्छित सुनिलय सर्वेपि मृत्यु जय ,
दिव्य व्याप्तकर कवि च जनक स्तोत्र जगन्मगलम् ।

Colophon इति पद्मावती अष्टोतरशतनामावली सपूर्णम् ।

१५६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाघृष्टपादरविंदे ।

व्याघ्रोरुक्का सहस्रज्वलदलनशिखा-लोलपाशाकुशासम्,
आ क्रो ह्री मत्ररूपे क्षयितदलमरे रक्ष मा देवि पद्मे ॥१॥

Clo ing   अहि्वान न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा अर्च्चा न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon .   इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।
जि० र० को०, पृ० २३५ ।
Catg of Skt & Pkt Ms , P. 655

१५६७ पद्मावती-स्तोत्र

Opening ·   देखे, क्र० १५६६ ।

Closing :   त्व न मम्मरणाद् व्रजति नितरा ˋ दु भिक्षदावानलम् ॥

Colophon ;   इति श्री पद्मावती स्तोत्र सपूर्णम् ।

१५६८ पद्मावती-स्तोत्र

Opening   देखे, क्र० १५६६ ।

Closing   आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदा,
सर्व प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ॥३६॥

Colophon   इति पद्मावतीस्तोत्र समाप्तम् ।

१५६९ पद्मावती-स्तोत्र

Opening :   देखे, क्र० १५६६ ।

Closing .   पठित भणित गुणित जयविजयरम -निवन्धन परमम्,
सर्वव्याधिहरस्तोत्र त्रिजगत पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३ ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।

सन्दर्भ के लिए देखे, क्र० १५६६ ।

१५७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चचच्चान्द्रशशाकपूर्णवदना ... सयोज्य हस्तद्वयम् ।।१।।

Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा ... पद्मावती पातु व ।।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सपूर्णम् ।

१५७१ पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्गी सर्वपापप्रणाशनी ।
सर्वदु खक्षयकारी महापद्मे नमोनम ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थं लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२ पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : भव्या कुर्वन्ति मा पूजा सद्भक्त्याभीष्टसिद्धये ।
एव पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचन्द्रतारकम् ।।

Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पाजलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening जिनसासनी हसासनी पदमासनी माता ।
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ।।

Closing जिनधर्म्म से डिगने का कही आपरे कारन
तौ लीजियौ उबार मुझे भक्ति उदारन ।
न कर्म के सजोग सो जिस जोनि मे जावो ।
तहा दीजियो सम्यक जो शिवधाम को पावो ।।

Colophon. इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४ पद्मावती सहस्रनाम

Opening प्रणम्य परमा भक्तया देव्या पादाबुजम्तिद्या ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्तिमिद्धये ।।१।।

Closing . भो ? देवि । भो मात सक्ष्यम्यति प्रीतिफलाप्नोति।।१३५।।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवन सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७२७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४२ ।

१५७५ पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing भो देवी भीमा • न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : देखे, क्र० १५७४ ।

Colophon . नही है ।

१५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ।।१।।

Closing : भक्त्या पठत्विद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,
आचन्द्रता्क जीयात्सद्भव्यसुखहेतवे ।।३८।।

Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्त. ।

१५७८. पद्मावती-सहस्रमाम

Opening : देखे, क्र० १५७४ ।

Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीसमन्विता ।
ते जना सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ।।१४।।

Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पचाग पूजा समाप्तम् ।
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि
शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे ।

१५७९. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।

Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की वीनती सपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखें, क्र० १५७३ ।

Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Colophon इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनन्दिपर्चविंशितिका

Opening : हृदय भुवि - ·· गुमन्यम् ॥

Closing : ताते धर्मकु धारणकार पुण्य का सचय करो ।

Colophon : नहीं है ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening · देखें, क्र० १४७८ ।

Closing देखें, क्र० १५१८ ।

Colophon : इति पचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३ पचनमस्कार

Opening । ॐ नमः सिद्धेभ्य। । अथ कतिपय पचपरमेष्ठिना सप्रादाया- ·· ·· लिख्यते पंचनामादि पदाना पचपरमेष्ठ ·· ··· ।

Closing अस्पष्ट ।

Colophon । नही हैं ।

१५८४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५१९ ।
Closing : देखे, क्र० १५१९ ।
Colophon : इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम्-।

१५८५ परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानदमयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।
Closing : काष्टमध्ये यथा वह्नि शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पडितः ।
Colophon : इति श्री परमाणद स्तोत्र समाप्त ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२९ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
Catg, of Skt, & Pkt Ms P 665

१५८६. परमानद-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५८५ ।
Closing : देखे, क्र० १५८५ ।
Colophon : इति श्री परमानद स्तोत्र समाप्तम् ।

१५८७. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।
Closing : देखे, क्र० १३२२ ।
Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपार वारदुर्वारवार गलितवहलस्वेद सर्वतत्वानुवेदम् ।
कमठमर्दविदार भूरीसिद्धान्तसार विगतवृजनयूथ नौमि य पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथतिलो भणता यसवासरवासभलो
मर्नामित्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१८॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णत. जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोस्मृत,
श्यामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चरान्निखिलम् ।
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,
धरणेद्रो पद्मावती युगस्वर श्री पार्श्वनाथ नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्र पठेन्नित्य त्रिसध्य च विशेषतः,
ग्रहे भवति कल्याण पार्श्वतीर्थे स्तवेन च ॥८॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३२२ ।

Closing . देखे क्र० १३२२ ।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्र फणीन्द्र सुरेन्द्र अधीस सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायशीशम् ।
मुनीद्र गणेन्द्र नमो जोरि हाथ नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-
नाथम् ॥

Closing : गणधर इद्र न कर सकै तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकै कीजै आप समान ॥१०॥

Colophon इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६३. पार्श्वनाथ-स्तुति

Opening : जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-
देव छवि हटकी ।
अबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे मीस पे सरपफन सोभा
है मुकुट की ॥

Closing : तुम तो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,
कर जोरि के लालविनोदी कहे वलि जाऊँ मे वामा के
नदन की ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५६४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री मात श्री पद्मावते नम:, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वना-
थाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय — ।

Closing : जो निय कठे धारइ कम्पमिम कप्परुखु मारित्थ ।
अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पट्टु मो सुटूई ॥२३॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ मत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५९५. थार्श्वनाथाष्टक

Opening . खीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,
धारात्रय भृ गारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।
पूज्यभवजीवमौख्यदायक दुरितकल्मषपडनम्,
श्रीपार्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वदनम् ।

Closing । नीरचन्दन मूलनायकवदनम् ।

Colophon । इति पार्श्वनाथाप्टकम् समाप्तम् ।

२५९६ पार्श्वनाथाष्टक

Opening । क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिडारी ।
पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाम्र पदाबुजधारकरी ।।
अति सु दर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।
शत इद्र समर्चित पादयुग सुभवाबुधि तारन पापहरम् ।।

Closing दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपागना सेवित पादपद्मम् ।
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्वं समीहितानि ।।१६।।

Colophon इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५९७. पार्श्वजिन आरती

Opening । स्वामी पार्श्वकुमार हू ँ करु वीनती आपीए ।
तुम त्रिभुवन पतिधार मैं तुम सरन चरन गहिए ।।१।।

Closing । श्री जिनधर्म प्रभाव मनवछित फल पावई ए ।
भैरो पर होय सहाय अपनी उंड ? निवाहगयै ए ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती ।

१५६८. प्रत्यगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री या कल्पयतिनो अवध • ब्रह्मणा अपिनिर्णय ।

Closing : यस्य देवे च मन्त्रे च गुरौ च त्रिपु निर्मला,
न व्यवछिद्य ते भक्तिरतस्य सिद्धिरदूरतः ।।

Colophon : इति श्री रुद्रजामले पार्वती स्वरसवादे छराजोगमूलपाणि तत्र विनिगते प्रत्यगिरा सिद्धमत्रस्तोत्र नपूर्णम् ।

१५६६ ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening आद्य ताक्षरसतक्ष्यमक्षर व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालासमताद् बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।

Closing इति स्तोत्र महास्तोत्र स्तुनी ामुत्तम परम्,
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदमव्ययम् ।।६३।।

Colophon . इति ऋषिमडल स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७४६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४७ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms P 629

१६००. ऋषिमडल-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing देखे, क्र० १५६६ ।

Colophon इति ऋषिमडलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig देखे, क्र० १५६६ ।
Closing देखे, क्र० १५६६ ।
Colophon इति श्री ऋषिमंडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening . देखे क्र० १५६६ ।
Closing दृष्टेणार्महंतेविंवे भवेत्सप्तमके ध्रुव ।
पदमाप्नोति विश्रस्त परमानंदसंपदा ।।
Colophon . इति रिषीमंडल स्तोत्र संपूर्णम् ।
विशेष— इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है ।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening . आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे चतुर्थ रक्षेच्च नासिकाम् ।।६।।
Closing यावच्चंद्रार्यमा च · सद्विमानाकुलागा ।।
Colophon अनुपलब्ध ।

१६०४ साधु वंदना

Opening : श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुखराग ।
कहो मूलगुन साधु के परमिति विंशति आठ ।।
Closing : अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष ।
सो मुनि कहत बनारसि पावैं अविचल मोक्ष ।।
Colophon इति साधु वंदना समाप्ता ।

१६०५ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥११॥

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३८ ।

१६०६ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । सवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृत वुजीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

१६०७ सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८ सहस्रनाम-स्तवन

Opening : प्रभो भवागभोगेषु ········ शरण्य करुणार्णवम् ।

Closing : एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा ···· जिनायात ॥

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृत जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयभूर्वृषभ शम्भव शभुरात्मभू ।
स्वयप्रभ प्रभुर्भोक्ताविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon · इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीत जिनसहस्त्रनामस्तवन सम्पूर्णम् । सवत् १८०२ वर्षे मीति आसाढ सुदी ४ मथेनभाउ परताप-गढ मध्ये लिखतम् ।

१६१० सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुकौ करौ प्रणाम ।
बुद्धि वल वरनौं ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ॥

Closing सगुन जिभूति वैभवी सेसुखी समवुद्ध ।
सकल विश्वकर्मा .... विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon इति श्री दुरनिदलन नाम नवम सतक सपूर्णम् ।

१६११ सहस्रनाम

Opening तुम स्वयभू अनादि सिद्ध अजन्मा सो तिहारे ताईं नमस्कार होहु । त्वम आपकू आप करि आप विषै उपजाय प्रगट भये हौ । उपजी है आत्मवृत्ति जिनकै अर अचिंत्य है वृत्ति जिनकी ।

Closing : भगवान स्वयभू समस्त नरनि के स्वामी जगतपति विहार करैं ही तिनकू इन्द्र के मुख ते स प्रार्थना के वचन नीसरे ते पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।

Colophon इति श्री भाषा सहस्रनाम सपूर्णम् ।

१६१२ समन्तभद्र-स्तोत्र

Opening : नताखडलमौलीना यत्पादनखमडलम ।
खडेन्दुशेखरीभूत नमस्तस्मै स्वयभुवे ॥

Closing · अर्हं सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।
पचनमस्कारो भवभवे मम सुह धंतु ॥ ॥

Colophon ; इति समतभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

१६१३ सम्मेदशिखर-स्तुति

Opening मैं आयो सरणते तेरे ।

Closing मो करणी पे नजर न कीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।
दीनबन्धु तुम पतित उधारण सेवक चरण गहो रे । मैं आयो० ॥

Colophon । इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

१६१४ सम्मेदाचल-स्तोत्र

Opening । सम्मेदशैल भक्तिभरेण नौमि ॥१॥

Closing . तीर्थानामुत्तम तीर्थं निर्व्वाणपदमग्रिम्म् ।
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२३॥

Colophon : इति सम्मेदाचलमहात्मस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु सवत् १८२८ वर्षे
आषाढ द्वितीय वदि अष्टम्या आदित्यवारे लिखत लक्ष्मणपुर-
मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये । शुभ भवतु ।

१६१५ सन्ध्या

Opening : वामे वहुत कुशान् प्रणव गायत्र्या रात्रा कुर्यात् ।

Closing : — तत प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon : इति सव्या समाप्ता ।

१६१६. शांतिजिन-आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी शात जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कद की ॥
विश्वसैन राजा जी के नदन ।
दरसन करत मिटै भवफदन ॥

Closing : भैरो जे नर आरती गावै ।
मन वछित फल सोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon : इति श्री शाति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७. शाति-स्तुति

Opening : जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज ससै तम भाना ।
मोह महागिर वज्र सुयेवा, सुर नर असुर करै तुम सेवा ॥

Closing : हे जिनवर मे जायो ये ही होहु सकल कल्यान अछेही ।
मैं निज आतमांक गुन पावो सिधालै मे सिध सु जावे ॥

Colophon : इति शांति जी पूर्ण भई ।

१६१८ शातिनाथाष्टक

Opening : मकलगुणनिधान नर्मसर्वे समान मदनमदविनाश मुक्तिकान्त निवास
सरुजकमलमित्र सर्वविधपवित्र अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धता
शातिनाथ. ॥१॥

Closing . शान्त्याष्टक सुरनरेण सेव्यमानम्,
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,
धर्मार्थकाम-ममना-द्यहीयात्तिमान' ॥

Colophon : इति शान्तिनाथाष्टकम् ।

१६१९ शारदाष्टक

Opening . ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारै ।
रचि आगम उपदिसे भविक अव ससै निवारै ॥
मो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।
छद भुजग प्रयातमै अष्ट कहौ वखानि ॥१॥

Closing जे हित हेतु वनारसी देहि धर्म उपदेश ।
ते सव पावहि परम सुख तजि ससार कलेस ॥८॥

Colophon · इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२० शारदा-स्तुति

Opening · देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपकेरूहा सपूजयामीधुना ॥

Closing । अरिहन भासिय णमहोविह सिरसा ॥

Colophon · इति सारदा-स्तुति अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१· सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारण · समयसारमहं परिपूजये ॥१॥

Closing : सज्जयकीर्तिनतानि सि सस्तुतिं पठति य सनत मतिमान्नर ।
विजयकीर्तिगुरो कृतमादरात्सुमतिकल्पलता कलमश्नुते ॥६॥

Colophon : इति सरस्वतिस्तुति ।

१६२५. सिद्धि-भक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृति-समुदयान साधितात्मस्वभावान्
वदे सिद्धिप्रसिद्धै तदनुपमगुणप्रगटाकृतितृष्ट ।
सिद्धि. स्वात्मोपलब्धि. प्रगुणगुणगणो छादिदोषापहाराद्योग्यो-
पादान् युक्त्या दृपद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing सुगइगमण समाहिमरण जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon , इति सिद्धभक्ति ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।
जि० र० को०, पृ० ४३८ ।

१६२६. सीता-विनती

Opening : प्राणी डारे अरहत का गुणगाय अरे प्राणी,
जब लग सास शरीर मे जी ॥१॥

Closing . रामचद्र मुकति पद्यास्याती सीता सुरपति थाय् जी
जो नरनारी ए गुण गावै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon : इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१६२७ श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।

Clos gn : देखे, क्र० ११:३ ।

Colophon · इति श्रीपालविनती सपूर्णम् ।

१६२८ श्रीपाल-विनती

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing . देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon . इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण ।

१६२६ श्रुतभक्ति

Opening स्तोष्ये सज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन लोलितसल्लोकघनानि सदा ।।१।।

Closing : सुगइ गमण समाहिमरण जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखे, जै० नि० भ० ग्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभुमन्त्रराजी ... चन्द्रप्रभ देवदेवम् ।।

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्त सुभगोलोकविश्रुतः ।
वाछित फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र सशय ।।

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening सुखयसयलमण्टि जिमजिणवर सुरणरफणपति सेविय ।
तिम चारित्रमयलधम्मदपर सामय पदवरसेविय ।।१।।

Closing इह भविय णमावहो शिवमुहयावहो चारित्रहजयमालवरा,
इह भवि उहहरहो परभवसुलहो नासय कम्मठ्ठ नियरा
।।२५।।

Colophon इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

१६३२. स्तुति

Opening : हरु प्रभात सुए नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।
वारवकि भई छार रहेप के चाव दर्शन प्रचिभूत मे धरे ॥१॥

Closing : यह भजन भये सपूर्ण सीता के वनवास की।
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ॥

Colophon इति श्रावण शुक्ल स० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा मे लिखे है।

१६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

Opening : श्री नाभिनदन जिनोजितसभवेस देवोभिनदन जिनो सुमति जिनेन्द्र ।
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथ चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम् ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपरमार्थविदाम्वरेण .... कैवल्य वस्तुविशदं जिन सुप्रभातम् ॥४॥

Colophon . इति सुप्रभातस्तोत्रम् ।

१६३४. सूर्यसहस्रनाम

Opening . तुहिण किरण विप पोसयत्यसुमाली,
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली ।
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृ दम्,
मुखरनरनागे सर्वदा वदनीये ॥

Closing : तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्त्तिवृहस्पति ।
अहिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेव नमोस्तुते ॥

Colophon : इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५२ ।
जि० र० को, पृ० ४५२ ।

१६३५. स्वयभू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयंबोधमयेन लोका आश्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथ प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्मं दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतपरम्परानम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापारशुध्यानिशम् ।
भव्याना जयमानया विमलया पुण्याजनिदापयन्,
नित्य तच्छ्रियमातनोमि सकल स्वर्गापवर्गस्थिते. ॥

Colophon : इति श्री स्वयभू समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ७८३ ।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू समाप्त. ।

१६३७. स्वयभू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू सस्तुत सम्पूर्णम् ।

१६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरासि पीठिकाग्रे स्वयम्भू ॥
Closing . ये सस्तुता विविधभक्तिः विमला कमला जिनेन्द्रा ॥
Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७८४ ।

१६३९. विनती

Opening : करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ॥
Closing : इति जितमाला अमल रसाला जो भव्य जन कठ धरई ।
• •• सुर शिव सुन्दर बरइ ॥
Colophon : इति पूजन समाप्ता ।
विशेष — ग्रन्थ मे पूजा भी सकलित है ।

१६४०. विनती

Opening . हो दीन बधु श्रीपति करुनानिधान जी ।
यह मेरी विथा क्यो न हरौ बार क्या लगी ॥१॥
Closing : करुना निधानवान को अब क्यो न निहारे ।
दानी अनतदान के दाता हौ सम्हारो ॥
वृषचदनदवृ द को उपसर्ग निवारो ।
ससार विषममार से अवपार उतारो ॥
Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४१ विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : देखे, न० १६४० ।
Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी करूनानिधानामी जी,
सुनो अनरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै ।
विनवै भूदरदास ए प्रभु टील न कीजै ॥१२॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवत्र तन विनती करो ।
मैं जग वहु दु ख पाय मुख रो किम वरनन करो ॥१॥

Closing : ज्यो जानै त्यो तारि विरद आपनो जान कै ।
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनाशनो दुरीय नरासनो अवसानै सरण तु ही ।
जिन मासन जाण्यो इन्द्रज मान्यो पहिलै पूज तुमरि करो ॥

Closing सदा जिनविव धरै निज भाल सदा जिन सेणैकतरिर्महात्मा ।
नज्ञानमागर त्रिवद्धं नचन्द्रमूर्ति जीगाज्जिनेद्रवरक प्रविराजमान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४५. विनती

Opening . श्रीपतिजिनवर करूणायतन दु खहरण तुम्हारा वाना है।
मत मेरी वार अवार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि " - प्रभु आज हमारी बारी है।
।। टेक ।।

Colophon · इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मागीतु गी दर्शनकरस्या प्रभु जी का।
सिद्धक्षेत्र की करो वदना दुख टलि जावै दुरगति का ।।
विषम घाट पहाड विच परवत ऊँचा मांगीतु गी का ।
इन पर मुनिवर मुक्ति गया है कोड निन्यानव गिनती का
।। चलो रे ।।

Closing : उगणीसै की साल जैठ सुदि करी जातरा पचसका ।
हरषकीर्त्ति कहै सुद्ध भाव सों मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो ।
।।१३।।

Colophon : इति मांगीतु गी की विनती सपूर्णम् ।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम् ।
श्री नाभिनंदन जगत बंदन आदिनाथ निरंजनम् ।।

Closing : मै अधीन परवस परे विके तुम्हारे हाथ ।
इतनो करिकै जानियै लाख वात की वात ।।

Colophon : इति श्री विनती मपूणम् ।

१६४८ विनती

Opening : देखे, क्र० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावै जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।
पार उतारी वो जी ॥

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४९· विनती

Opening : हो दीनबन्धु श्रीपती करुना निधान जी
यह मेरी बोभा क्यो न हरो ……… ॥ टेक ॥

Closing : करुनानिधानवान को — अब पार उतारो ॥ टेक ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening देखे, क्र० १६४२ ।

Closing देखे, क्र० १६४२ ।

Colophon इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१· विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : तेरे दास निहारै नीरमै कीजिए जी नर नारी गावै जी ।
भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती सपूर्णम् ।

१६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखे, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावै जी, भव भव सुखपावे जी ।
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत समस्त व्यापारवेदीविनिवृत्तसग ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य पायादपायात्पुरुष पुराण. ॥

Closing : वितरति विहितार्थी - सुखानियशो धनजय च ॥

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखे, जै. सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८५ ।

१६५४ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

१६५५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६. विषापहार-स्तोत्र

Opening देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : निःशेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,
सान्द्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।
क्वेय श्री क्वचनिस्पृहत्वमिदमिखानि यशो धनजय च ॥४०

Colophon इति श्री धनजयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening . देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : — येन तेन प्रकारेण विहित। पुन. त्वयि विषये
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता. च भक्ति विद्यते ।४०॥

Colophon . इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका सपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयसूरि विरचित विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३

Colophon · इति विषापहार. ।

१६६० विषापहार स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहार स्तवन समाप्तम् ।

१६६१ विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वदौ गुनवीस ।
ब्रह्मा विस्नु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहू मोहि वागेसुरी ॥

Closing : भय भजन रजन जगत विषापहार अभिराम ।
ससै तजि सुमिरौ सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥

Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति सपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Closing . देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा सपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनत गुन, स्वामी परमानद ।।
सुर नर पूजित तासु पद वदो ऋषभजिनद ।।

Closing : भयभजन गजन दुरित विषापहार सुभाव ।
वैरिन मे सुमिरौ सदा श्री जिनवर के नाम ।।

Colophon इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६६ ।

Closing : देखे, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. वृहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयभुवे नमः .... चित्तवृतये ।।

Closing : इतिप्रवृद्धतत्त्वस्य स्वयमतुं जिगीयत ।
पुनरूक्ततरावाच प्रादुरासन जितक्रमो ॥

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९ वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing . • अनादि के कर्म कलक पक धाई चिह्निलायक्तौ
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon इति श्री स्वामी समत भद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत् स्वयभू सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयभू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : देखे, क्र० १६६९ ।

Colophon : इति श्री स्वामी समतभद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत्स्वयभूस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३८ ।

Closing : ये ससुताविविधभक्तिसमतभद्रैं रिद्रा दिभिर्विनतमौलि मणिप्रभाभि।
उद्योतिताघ्रियुगल सकलप्रवोधास्तेनोदशतु विमला कमला-
जिनेन्द्राः ॥

Colophon : इति स्वयम्भू वडा समतभद्र कृत समाप्ता ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

१६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराण अणयोगण गुणेहिं तच्चेहिं ।
अजलि मउ लिय हथो अभिवदतो सविभवेण ॥१॥

Closing : इछामि भते जोगभत्ति फाउ सग्गो ' ' सम्पत्ति होउ मज्झ ।

Colophon इति योग-भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० म० I, क्र० ८०० ।

१६७३ अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मदिरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते च दर्भाक्षितै,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितत्वत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोह् निजभूषनार्थममल यज्ञोपवीत दधे,
मुद्राककणसेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन •• ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयभूदेवजू,
पिता नाभि मरुदेवि करें सुर सेवजू ।
कनक वरन तन तु ग धनुष पन सत तनो,
कृपा सिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।

Closing : इत्थ श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्र पठेद्य' पुमान्,
प्रात प्रातरुदात्तभावसहित सम्यक्तशुध्याश्रितः ।
योगीदैश्चिरकाल तस्सतपसा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पद स्मतिमानानदमुद्राकित. ।।

Colophon । इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५ आदिनाथ-पूजा

Opening । सुपनदुपमतिथि मेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ।
ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाह्न विधि करु त्रिविध नमके परा ।।

Closing यह निज सार अपार जो भविजन कठधरिई ।
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि रामचद्र सिव तियपाई ।।

Colophon · इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६· आदित्यवार-पूजा

Opening : इक्ष्वाकुबमकुन मडणअश्वसेनो तद्वल्लम, प्रतिवताजिनवामदेवी ।
तस्त्ा जिन विमलभूति सुरेन्द्रवद्य त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद नमामि ।।१।।

Closing । इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।
मनवचक्रमधावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ 'फल देतसही ।।

Colophon । इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening · श्री ार्श्वनाथ प्रणमामि नित्य, सुरसुरै पूजितपीठवद्यम् ।
रविव्रतोद्यापनक प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ।।१।।

Closing : रविव्रतमहापूजाश्लोकपिंडीकृताधुना ।
पचात्माविने मया विप्र लेपकं चित्ततर्पका' ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारण दुगःवारण ... सुरसुन्दरम् ।

Closing : दहु णदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ ... चद्रकीर्त्ति सुहावऊ ॥

Colophon . इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मदिरेषु ।
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वदे जिनपुगवानाम् ।
अवनितलगताना कृत्तिमाकृत्तिमाना,वनभवनगताना दिव्यवैमानिकानण
इहमनुजकृताना देवाराजार्चिताना जिनवरमिलयाना भावतोह
स्मरामि ॥१॥

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ... प्रयछतुन ॥५॥

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ॥

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६७९ ।

Closing : भव णालय चालीसा वतरदेवाणहुति वत्तीसा ।
कप्पामरचउवीसा चदो सूरो णरो तिरिओ ॥

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनबिंबेभ्यो नम ।

१६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening । क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्न ······ विघ्नविनाशनम् ॥

Closing । भगतन की प्रनिपात करै सबैजीवन कौं काज सरैया ।
नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ॥

Colophon । इति कवित ।

१६८२ अनन्तपूजा-विधि

Opening । एकादशी कैं दिन पूजन कर व्रत थापन करै
तथा आचमन करै तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करै ।

Closing जीव समासा ।१४।। अजीव ।।१४।। गुणस्थान ।।१४।। मार्ग ।१४।
भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४।।
मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।
प्रकृत ।।१४।। रत्न ।।१४।। चतुर्थदश पदार्थ चितन ब्यौरा ।

Colophon : इति अनतपूजन विधि ।

देखे, जैं० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

१६८३. अनंत पूजा विधि

Opening । भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनतव्रतद्वेइजे, मायास्नान
करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावै · अष्टदलकमलकरावे ।

Closing · ॐ ह्री श्री यसमस्मैददत्तानतफल · नित्य वेयाचे मत्र ।

Colophon : इति अनतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।

विशेष— ५१।२३ मे यज्ञोपवीत मत्र हैं, जो इसीका अग है ।

१६८४. अरिहत-दक्षिणी

Opening । गगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार बरविहीरा ।
जन्म मृत्यु जराकृत दूर · · ॥

Closing : अस्पष्ठ—(जीर्ण)

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऍं दक्षिणपत्रे श्री पश्चिमपत्रे ह्रीं उत्तरपत्रे क्लीं ईशानपत्रे क्ष्वीं अग्नियपत्रे ह्रीं नैऋत्यपत्रे क्ष्वीं पवनपत्रे ज्यों कुवेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमा ·· कामान् कुरुध्व परान् ।।१०।।

Colophon : इति पूर्णार्घ वृहत् द्रव्येन अर्घ ददात् ।
इति पोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : सवौपडाहूय ··· ··· प्रतिमा समस्ता ।।

Closing : यावति जिनचैत्यानि विद्य ते भुवनत्रये ।
तावति सतत भक्त्या त्रि. परीत्य न माम्यहम् ।।१८।।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
जि० र० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा सपूर्णम् ।

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : आहूय सवौषडिति प्रणीत्वा ताम्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान्।
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्चे ॥१॥

Closing : आरतिय जोवइ कम्मइ घोवइ सग्गाववग्गह लहु लहइ।
ज जमण भावइ त सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ ॥१८॥

Colophon : इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ता।

देखे दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१।

१६८९. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मडपमालिख्येद्वरतरे — • तदर्च्चा ततः ॥१॥

Closing : आयुर्दैर्घ्यंकरीवपूर्व ... - भवता देषाईतामर्हता ॥

Colophon : इति श्री नदिश्वर पक्तिवध पूजा समाप्ता।

१६९०. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : तीर्थोदकै भणिसुवर्णघटोप्पिनीतैः,
पीठे पवित्रवपुषै प्रविकल्पितीर्थै।
लक्ष्मीसुता गहनवीजविदर्पगर्भै,
सस्थापयामि भुवनाधिपतिं जिनेन्द्रम् ॥

Closing : नदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहैं।
द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ॥१०॥

Colophon : इति नदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जयमाला भाषा
सस्कृत सहित सम्पूर्णम्।

१६९१. अढाईपूजा

Opening : सरव पख मैं बडो अठाई परव है,

नदीश्वर सुर जाहि लेयबहु दरब हैं ।
हमैं सकति सो नाहि इहा कर थापना ।
पूजै जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ।।

Closing : नदीश्वरजिनधाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत्त लीनौ नाम यही भगत सव सुख कतै ।।१६।।

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम् ।

१६६२. बाहुबलि-पूजा

Opening : वाहुमान जो षडवली चक्रेन की,
लखी अनित समार सवे विच्छेद की ।
धरो दिगवर भेष शान्तमुद्रा वरी,
घातअघात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ।।

Closing : पूजन पचकुमार तणी जे नरकरैं,
हरमत हरवलचक्रसक्रपद ते धरे ।
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,
धर्मं अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ।।

Colophon : इति श्री पचकुमार की पूजन सम्पन्नम् ।

विशेष— इसमे वाहुवलि पूजन और पचकुमार पूजन दोनो हैं ।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig देखें, क्र० १६६२ ।

Closing : जे नर पढ़े विसाल मनोरत सुद्धसो ।
ते पावैं थिर वास छूटै ससार सो ।।
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म कौ ।
देय अक्षै भडार ध्याऊ अलख ध्यान को ।।२४।।

Colophon : इति श्री वाहुवल मुनी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भौर भयैं ।
आए हो भवन हमारैं, भली कीनी ये ।।

Closing : आस करैं उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ।। भली० ।।

Colophon : इति भैरौ ।

१६६५. बीस-तीर्थ कर-अघ्र्य

Opening : श्री मदिर आदि जिनद बीसो सुखकारी ।
सुविदेह माँहि अभिनद पूजत नरनारी ।।
थिति समवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ।
हम पूज अर्घ चढाय आनन्द के कारक ।।

Closing : इह वर्त्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,
तह श्री गुर सुगुन भडार राजन हे सुमहा ।
वसुदेव जथो चितल्याय हे त्रिभुवन स्वामी,
हय पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ।।१।।

Colophon : इति ।

१६६६. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा ।
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्पक्त्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्रीमदिरा दिप देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्यमना सौरय स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ।।

Colophon : इति श्री वीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६९७. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६९६।

Closing : देखें, क्र० १६९६।

Colophon : इति श्री वीरहमान पूजा समाप्तम्।

१६९८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६९६।

Closing : ये वीस तीर्थ करन की सेव तुम्हारी कीजिये।
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए॥

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूवा समाप्ता।

१६९९ बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें क्र० १६९६।

Closing : देखे, क्र० १६९६।

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूजा सपूर्णम्।

१७००. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६९६।

Closing : तुमको पूजा वदना करै धन्य नर सोय।
सारदा हिरदै जो धरै सो भी धरमी होय॥६॥

Colophon : इति श्रीबीसविरहमान पूजा जी समाप्तम्।

१७०१. वीस-विद्यमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६९६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति श्री वीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२. वीस-तीर्थंकर-जकड़ी

Opening : श्री मंदरजिण वदस्पा जग सारहो, पुंडरीकजिणराय ।
जवूदीप विदेह मैं जगनार हो मेरि पूरवदिसिभाय ।।

Closing : सातमा जिन समयगामी मोरिव जेसु दिगवरा ।
भावना भावैं हरष सेती होइ मुक्ति स्वयवरा ।।

Colophon : इति वीस विरहमान की जखडी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening : प्रथम श्रीमदर स्वामी जुगमधर त्रिभुवण धारिए ।।१।।

Closing : इम वीस जिनवर सघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजियै ।
करि जोर सेवक वीनवैं प्रभु मणवछित फल दीजियै ।।

Colophon : इति वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४. बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening : देखे, क्र० १७०३ ।

Closing : प्रभुजी आनद सदेस घ्यावो शिव सुख पाइये ।
एवीस जिने सुर सग जिनकी सेव नित प्रति कीजिये ।।१।।
करि जोर द्यती करे विनती मुक्तिफल पाइरे ।।

Colophon : इति वीस तीर्थङ्कर की जयमाल सपूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाही ।
अनतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाही ॥
अह्लानन विधि कहूँ नाय सिध सुध करि मनही ।
लोक मोह तम हरत दीप अद्भुत ससि जिनही ॥

Closing : वसुद्रव्य लै सुधभावतैं जजूं तिहारे पाय ।
देह देव शिव मुझ अवै अहो चददुतिराय ॥१४॥

Clolophon : इति श्री चद्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : वरचरित चार गुन अकलधार भवपार वसे हैं ॥
हे त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसै है ॥

Closing : चद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।
चद जिनन्द जजन्त निराकुल दद न कोई ॥
चद जिनन्द जजन्त चहन्त सवै मिलि जावै ।
चद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष वढावै ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्ण ।

१७०७ चारित्रपूजा

Opening देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमिहात्मनः ।
सम्यक्-चारित्र-रत्नम्य वक्ष्ये सक्षेपतोर्चनम् ॥

Closing : अधउ आलस्सउ पगुल वि जिणवर भासियय ।
तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ॥

Colophon : इति चारित्रपूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३ ।

१७०८ चारित्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १७०७ ।

Closing : विरम-विरम मगान्मुंच मुच प्रपचम ।
विसृजमोहसृजब विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्त पश्य पश्य स्वरूपम्,
कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानदहेतु। ॥१४॥

Colophon : इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समात्ता ।

१७०९. चारित्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १७०७ ।

Closing देखे, क्र० १७०७ ।

Colophon : इति श्री पडिताचार्यं श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी समाप्तम् ।

१७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरात् ।
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं चतुर्विशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्व्वविघ्नोपशात्यर्थं जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Colophon इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening : आद्य तीर्थंकृता सर्वा सर्व्वविघ्नप्रशातये,
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ॥१॥

Closing : दिव्यै नीरैश्चदनैरक्षतैस्तै क्ततोय सुभोघै ॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : सुभिरमत्रभवेभवत पदाबुजनताजनताजनताम्पति ।
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वह · दिने ॥

Closing ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती सहितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इद जल गधं पुष्प अक्षत नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महाअर्घ निर्व्पयामि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : वृषम आदि अतवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान षडग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुण जुत तसुधराव ये नव छारिकै,
अह्वानन विधि करूं गुणौघ उचारिकै ॥१॥

Closing : जो को इह व्रत भावी करी, ते नर मुकत पथह त्ररो ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही, कथा ग्यानसागर मुनी कही ॥

Colophon : इति श्री अनतव्रत कथा समाप्तो। रामचन्द्रेण लिपि कृत आरामध्ये लाला विजन लाल जी लिखापितम्। लेखकपाठकयो शुभ भवतु।

विशेष— इसमे कई पूजाएँ सग्रहीत है।

१७१४ चतुर्विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening : रीषभ अजित सभव ... पूज्य पूजत सुरराय ॥

Closign : भुक्ति-मुक्ति दातार चौवीसो जिनराजवर।
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इत्माशीर्वाद. इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा सपूर्णम् स० १६५० ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८१६।

१७१५ चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७१४।

Closing . देखे, क्र० १७१४।

Colophon : इति श्री समुच्चय चतुर्विंशति पूजा समाप्तम्।

१७१६. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देशकालादिभावज्ञो निर्म्मम· शुद्धिमान्वर।
साच्दारायादिगुणोपेत. पूजकः सोत्रशस्यते ॥

Closing : यावच्चंद्रदिवाकर ... ... कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कराणा सस्कृत पूजा सम्पूर्णम्।

देखे, जि० र० को०, पृ० ११६।

१७१७. चतुर्विशतिजिन जयमाला

Opening : वदितानमर ·· — · · पूरा इव ॥१॥
Closing : अनणुगुणनिवद्धा · · · लक्ष्मीवधूनाम् ॥
Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे चैत्र शुदि ११ शनौ ।

१७१८. चौवीस-तीर्थंकर-पूजा

Opering : देखें, क्र० १७१३ ।
Closing ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयकरि जो भविजनक वि धरई ।
हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचद्र शिवतिय वरई ।।२५।।
Colophon इति श्री चौवीसतीर्थङ्कर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौवीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening : श्री वृषभादि विरातिमा चौवीसह जिनराय ।
आह्वानन ठांडै करू, तिन वेर गुणगाय ॥१॥
Closing : जे जिव कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तैं जिन पूज्य रच्चावैं ।
ते जिव ह्वै धरणेन्द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावैं ॥
Colophon : समाप्त: ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening · सिद्ध वुद्धि दायक ·· · पदकज ॥
Closing · वृषभ आदि चौवीस जिनेश्वर ध्यावही ॥
ऽभ्य करै गुणगाय सुर वजावही ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

१७२१. चौवीस-तीर्थकर-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२० ।
Closing : देखे, क्र० १७२० ।
Colophon : इति श्री चउवीस तीर्थङ्कर जी की पूजा सपूणम् । चौधरी रामचद्र जी कृत । सवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पचम्या । शुभम् ।

१७२२. चौवीसी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७१४ ।
Closing : देखे, क्र० १७१४ ।
Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।
इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन मे बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या बनसी कुँअर ने चढाया गागील गोत मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३. चतुर्विशति तीर्थकर पद

Opening : आदिदेव रिषभ जीनराज .... स्याची सेव ॥
Closing : चौवीसवा श्रीमहावीर — गौतम सीर ॥
Colophon : इति चतुर्विंशति पद सपूर्णम् ।

१७२४ चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरु जगद्देव जगदानददायकम् ।
जगद्वंद्य जगन्नाथ श्री पार्श्वं सम्पूजे जिनम् ॥

Closing : दीर्घायु सुमपुत्रवनिता आरोग्यसत्सपदम्,
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरता. सद्गेहभूषादय'।
भूयासुर्भवता गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादय,
श्री चितामणिपार्श्वनाथवररतो मागल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon : इति इति श्री चितामणि पूजाव्रत समाप्तम्। लिखित सभूनाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूवाके लसगरमध्ये स० १७९३ मगसिर सुदि १३, शनिवार।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८२७।
जि० र० को०, पृ० १२३।

१७२५. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७२४।
Closing : देखे, क्र० १७२४।
Colophon : इति श्री चितामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता। सवत् १८१९ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या बुधवासरे लिखित ज्ञानसागर पठनार्थ फकीरचदजी। पोथी लीखी सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभ भूयात्। श्रीरस्तु।

१७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४।
Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लि ·· श्रीपार्श्वचिंतामणि ॥
Colophon : इति श्री चितामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम्।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, १७२४।

Closing : इति जिनपतिदिव्यः स्तोत्रलक्षातरेण ⋯ सर्व्वदान्वेपनीयम् ॥

Colophon : इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : शान्त विदूर्ध्वरेफ ⋯ सजायते पूजयेद्यः ॥१॥

Closing : इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वछिय बहुपधारम् ॥१२॥

Colophon : इति चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा ।

१७२९. चिन्तामणि-जयमाल

Opening : तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ⋯⋯ जिणेसरहम् ।

Closing : अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिन ससिनिर्मलवक्र-मित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता। सवत् १८२५, पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्या शुक्रदिने लिखित पंडित सेवाराम कौशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये। श्रीपार्श्वनाथ के भडार की पोथी परसौ लिखी निज पठनार्थ वा भव्य जीवस्य वाचनार्थं वर्धिता जिनशासन शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

अनित्य जीवित लोके अनित्य धनयौवनम् ।
अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीत्तियसस्थिरः ॥

१७३०. दर्शनपाठ

Opening : दर्शन देवदेवस्य दर्शन पापनाशनम्,
दर्शन स्वर्गसोपान दर्शनं मोक्ष-‍ ाधनम् ॥

Closing : जन्म-जन्मकृत पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरातका, हन्यते जिन दर्शनात् ।।१२।।

Colophon : इति श्री दर्शन सम्पूणम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० ७१३० ।

Closing देखे, क्र० १७३० ।

Colophon इति दर्शनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१७३२ दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० १७३० ।

Closing : देखें, क्र० १७३० ।

Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहु गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ।।१।।

Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजै ... इहा फेरि न आवना ।।२३।।

Colophon इति दरसन पूजा ।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening परस्याभिमुखीश्रद्धा सुद्धचैतन्यरूपत ।
दर्शन व्यवहारेण निश्चयेनात्मन पुन ।।

Closing : अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणवीजम्,
जननजलधिपोत भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठार पुण्यतीर्थं प्रधानम् ।
पिवतु जितुविपक्ष दर्शनाख्य सुधाशु ॥

Colophon : दर्शनपूजा ।

१७३५. दर्शनपूजा

Opening : देखे. क्र० १७३४ ।

Closing : देखे, क्र० १७३४ ।

Colophon : इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६. दसलाक्षणी-पूजा

Opening : उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।
स्थापयेत्दशधाधर्ममुतम जिनभाषितम् ॥

Closing . करै कर्म की निर्जरा भव पीजरा विनास ।
अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षनी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७. दशलाक्षणी-पजा

Opening : देखे, क्र० १७३६ ।

Closing : देखे, क्र० १७३६ ।

Celophon : इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिदहिं सिट्ठइ।
जगताइ सुहकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

Colophon : इति दसलाक्षणी पूजा।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५।

१७४२. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७३६।

Clsoing : देखे, क्र० १७४१।।

Colophon : इति दसलाक्षण पूजा संपूर्णम्।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलजिणदंहि तिहूवणचंदह पणवमि भावे गणहरह।
पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

Closing : मूलसघपदृधरो धम्मचन्दगुरो सातिदासुब्रह्म भणइ णिस।
जिणदास हणदणु दहलक्षणगुणु सूरदास तुम करहु थिस ॥

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्त.।

१७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

Opening : विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्ध,
अभयवनसमुद्र चिन्मयूख- प्रचडम्।
इत दम विधिसार सजजे श्रीविपारं,
प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धताढ्य जिनेसम् ॥

१७४७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ... । यतीद्रसामान्यतपोधराणा भगवान जितेन्द्र ॥

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७४८ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : कीजै सकल प्रमान त्रिन सकते सरधा धरो । द्यानत सरधावान अजर अमर सुख भोगवै ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

१७४९. देवपूजा

Opening जय ।३। जयवत प्रवर्त्तो ॥३॥ नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३। णमो अरहताण । अरहतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण। आचार्य्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । ... ।

Closing : मेरे अैसै प्रभात समय मध्यान्ह समय सध्या समये विषे पूजा करए । सकल कर्म्म का छय निमित्त भावपूजा वदना स्तुत अर्हंन भक्ति प्रतमा भक्ति पंचमहागुर भक्ति करिये कायोत्सर्ग करिये उवे पाप है तिनकू त्यागिए ।

Colophon इति श्री देवपूजा अर्थ सयुक्त सम्पूर्णम् ।

Closing : गुरोभक्ति गुरोभक्ति. गुरोभक्ति सदास्तु मे ।
चारित्रमेव समारवारण मोक्षकारणम् ॥२५॥

Colophon : नही है ।

१७५४ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : ॐ ह्री नैर्म्मलयमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ॥

Colophon अनुपलब्ध ।

विशेष— इसमे चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी है ।

१७५५ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : मिथ्यात तपन निवारण (न) चद समान हो ।
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।
काल कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ॥१४॥

Colophon : इति वियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

१७५६· देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing अणादि काल के जे कुवादि तिन कें मिथ्यात कू दूरि करने वाले चउवीस तीर्थ कर हैं तिनहि पूज हू ।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थ कर जयमाल । ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि वर्द्धमाने नमः ।

१५७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening : ॐ ह्री क्ष्वी स्नानस्थानभू, शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थान शुचि-जलेन सिंचेत् ।

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि विधाय ।
स वज्रपजरगताकृतसिद्धभक्ति — .. — ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५९ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ।।

Closing : देखे, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

१७६१. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।
Closing देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६२ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १६४६ ।
Closing . देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति श्री जयमाल सपूर्णम् ।

१७६३ देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।
Closing : देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४ देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।
Closing : देखे, क्र० १७५० ।
Colophon इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : जे तवमूरा सजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।
रयणत्तय रजिय कम्मह गजिय ते रिसिवर मइ झाईया ।।

Colophon : इति देवपूजा ।

देखे जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

Opening : वत्ताणुठ्ठाणे ' ··· परमपउ ।।
Closing : देखें, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमाल सपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रतिमावीजमन्त्र प्रसिद्ध नदुमिसुरामकृतहरिने रूप ········ ।
Closing : ··· ···· सुरमत्रजिनप्रभा ।
Colophon : इति सुरमत्र समाप्त: ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

Opening : पातालवास वरनीलवर्णं फणासहस्रान्वितनागराजम् ।
तमाह्वये सत्कमठासन च सस्थापये भूमिधर सुभक्त्या ।।

विशेष— ग्रथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस मे सटे हुए है । अलग करने पर फट जाते है, जिससे Closing और Colophon का पता नही चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७० ।

Closing : भक्तिर्जिनश्वरे यस्य .. तस्यैतत्सकल भवेत् ॥३२॥

Colophon इति नागेन्द्र स्तौत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening · धरणयक्षविलक्षणसहस्रै क्ष्ितिधरोन्नतकच्छप्रवाहनै ।
त्रिदशवदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदल श्रियै, ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपकजसेव्यमान पद्मावतीभजतिवाड्मनवामभागम् ।
घोपरोपमर्गहनन निजमाणदक्ष त देवशुद्धिमतिग प्रभजामि नित्यम्

Colophon : इति पुष्पाजली धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१ गर्भ कल्याणक

Opening ! पणविवि पच परमगुरु गुरु जिनशासन,
सकल सिद्ध दातार सुविघन विनासन ।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ॥
मगल करि चौसघह पाप प्रनासन ।

Closing ! भासियो सुफल सुणि चित्त दपति परम आनदित भऐं,
छह मास परि नवमास वीते रयण दिन सुखसो गऐ ।
गर्भवितार महत महिमा सुनत सब सुख पाईये,
भणि रूमचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥८॥

Colophon . इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२ गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिपर परवत पर दक्षिणा दिस मे सोहैं
नेमनाथ जिन मुक्तधाम सव जन मोहै
कोड वहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो
ता थल पूजन काज भव्य मन्न अति हरपायो
तिम तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर
पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ॥

Closing   तिहु जग भीतर श्री जिन मदिर वनै अकीर्तम महासुखदाय,
नर सुर खग कर वदनीक जे तिनकौ भवि जन पाठ कराय ।
धन धन्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुसोहत भलाय
चक्री सुरखग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषथाय ।

Colophon :   इति श्री तीन लोक सवधी पूजा सपूर्णम् ।

विशेष—इसमे सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक सबधी पूजा भी सकलित है ।

१७७३. गिरनारपूजा

Opening :   देखे, क्र० १७७२ ।

Closing .   जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।
रामरतन सु पुत्र भयो धर्मामृत पानी ।।

Colophon   इति श्री गिरनार जी की पूजा सपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी ३ । मदवासरे । लीखित जूनागढ श्री मदिर जी कापेया आनद जी ।

१७७४. गिरनारपूजा

Opening :   देखे, क्र० १७७२ ।

Closing :   जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भडार ।।

Colophon :   इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी ७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विदै ५३३ ।। मुनि के साथ श्री नेमनाथ जी उर्जयत टोक से जा जूनागढ गिरनार परवत पर है, सोरठ देश गुजरात मे मुक्त पधारे । नेमपुराण से देखना ।

विशेष—इसमे नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये है ।

१७७५. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ... . पचमहाव्वयहँ ॥१॥

Closing : ॐ ह्री पुलाकवकुसकुमीलनिर्ग्र थस्नातकेभ्यो नम. ।

Colophon : इति गुरुजयमाल संपूर्णम् ।

१७७६ गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युग गुरौ ।
तप प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ॥

Closing : तेजस्सिंव्रजमस्तिचंद्रमचमत्कारैकसवारिकम्
किर्त्तिसारदशुभ्रमानधवलां निरसेषदिग्व्यापिनी ।
आयुदीर्घतर निरामद्वपु लीलाघमणीकृत.,
श्रीद श्रीनिकर करोतु भवतामाचार्यभवित सताम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री गुरुपूजा संपूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२ ।

१७७७. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।

Closing : पावै अमरपद होंइ चक्री कामदेव समानिया,
इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रतीत जू आनिया ॥
जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,
कहत लालविनोदी मन वच मनहि वछित पाईया ॥

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८. गुरुपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७६ ।

Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७९. गुरुपूजा

Opening : देखे क्र० १७७६ ।
Closing : देखे, क्र० १७६५ ।
Colophon : सपूर्णम् ।

१७८० गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७७६ ।
Closing : देखें, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमडलके रम्य चतुष्नोपसोभीते ।
स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ।।१।।

Closing : निसगविरागाय ·· ·· प्रणमाम्यहम् ।।

Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण – · सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ।।१।।

Closing : भाव सुद्ध पूजा करौ सेवौ गुरुचित्त लाय ।
तीन काल आरति करौ रिद्धि सिद्धि सुखथाय ।।१७।।

Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

१७८३ गुरुपूजा

Opening सिद्धान्तसूत्रमकीर्णश्रुतस्कधवने यने ।
आचार्य्यता प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ।।

Closing : मुनिवर स्वामीनमू सिरनामी दोए करजोडी विनय करू ।
दीक्षा अति निर्मली धोमुझउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरी।

Colophon : इति गुरुपूजाजयमाल मम्पूर्णम् ।

१७८४. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८३ ।

Closing । कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ।।११।।

Colophon । इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्नम ।

१७८५. होमविधि

Opening . तद्यथा ॐ ह्री क्ष्वीं भू स्वाहा । पुष्पाजली ।
ॐ ह्री अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। क्षेत्रपाल विधि ।।

Closing । इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिन प्रतिमा सिद्धायतन यत्रानि
पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन. नमस्कार कृत्वा
नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon । इति होम सपूर्णम् ।

१७८६. जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ... ... पाछै पूजा कीजइ ।।१।।

Closing . पश्चात म्यीनि की षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाडे छवैया पट्टल ईसान वेदी मध्य फलश थापी जइ तिसकी विधि आगै विशेष है ।

Colophon : इति जलय त्रा विधि सपूर्णम् । सवोत्तर जलइ सविधि पूर्व न्यायैं । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

१७८७. जिनयज्ञविधान

Opening णमो अरहताण, णमो सिद्धाण णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण — ·· ।

Closing · ॐ ह्रीं सुद्धदृष्ट्ये नम । ॐ ह्रीं सुधावलोकिने नम· ।

Colophon अनुपलब्ध ।

१७८८ जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतन दुखहरन तुमारा ··· — ··· ।

Closing । हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है ।
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि विथा विस्तारी है ॥

Colophon विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९ जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वदे श्रीवृषभ देव वृषाक वृषदायकम् ।
षट्धर्मप्रणेतार कर्मभूभृतवज्रकम् ॥

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवशो यश्चक्रिणायस्य स्तुति चकार ।
दानेश्वरत्व जिनपु गवाय पुन स्तुव श्रेयगणाजिनानाम् ॥

Colophon । इति जिन गुण-सम्पति-पूजा सम्पूर्णम् ।

देख, जि० र० को०, पृ० १३५।

रा० सू० III, पृ० २०५ ३०८।

१७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening : प्रकटति परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारदासदधानम् ।
जगति समयसार कीर्तितः श्रीमुनिंद्रै,
स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूपः ।
जगति समयमार ते पर ज्योतिरूपं,
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूप स्वरूपम् । १।।

Closing : अग्यानतिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढै गुनै जो ग्यानधनी ।
ब्रह्म जिनदास भासैं विबुध प्रकासैं मनवाछित फल बुध धनी ।।

Clolophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१७६१. जंबूस्वामी-पूजा

Opening : चौवीसो जिनपाय पच परमगुरु वदिके ।
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मगल करो ।।

Closing : ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जबूस्वामिन् सकलगुण-विराजमान् जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल अर्घ महार्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री इति श्री जबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२. जाम्बूस्वामी-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७६१।

Closing : देखे, क्र० १७६१।

Colophon इति श्री जबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७९३ जयमालिकापूजा

Opening . उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभत्तिय कुसुमजलि
अमरिदह सुरिंदह णिहय दुरिय ज्वाला
पढमविय सुरायण भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,
— — — ॥

Closing : तिण्यरह सुहसुयरह पय पकयाणि खत्तिए ।
निरूभतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपवित्तिए ॥

Colophon । इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७९४ ज्ञानपूजा

Opening । प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसपदाम् ।
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजा वक्षे विधानतः ॥१॥

Closing दुरिततिमिरहस मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,
व्यसनघनसमीर विश्वतत्वप्रदीपम् ।
मदनभुजगमंत्र चित्तमात्तगसिंहम्,
विषयसफरजाल ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon . इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७९५. ज्ञानपूजा

Opening । देखें, क्र० १७९४ ।
Closing । देखे, क्र० १७९४ ।
Colophon : इति पडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

१७९६. ज्ञानपूजा

Opening : देखे, क्र० १७९४ ।
Closing : देखे, क्र० १७९४।
Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

१७९७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।
जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ॥
जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।
जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ॥
Closing : पूजन सख्या छन्द की ····· — ।
Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

१७९८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening : श्रीग्लौ प्रभेशजिनपकजसेवकिन्या,
श्य.माख्या यक्षिसुवद्योपादपद्मयुग्मम् ।
चक्राधिपादिमनुजं खलवद्यमाना,
माह्या नानादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ॥
Closing : वरमहिपत्राहिनि शनचुटगे ॥जय०।४५ ।
Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१७९९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७९८ ।

Closing : नार्केदुबिम्बमखिलोमितदोऽयगात्रे राजीवपत्रनिभपादसुराग'' ॥

Colophon . अनुपलब्ध ।

१८००. ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिनरेन्द्र नन्दन ' क्षीर समुद्र भणी ॥१॥

Closing : यावन्ति जिन चैत्यानि विद्य ते भुवनत्रये,
तावन्ति सतत भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥

Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : मोगद्यमननमगुरुसप्तकुलेन ······· जिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुनि श्री वनिताकरोदकमिद पुण्यकरोत्पादकम् ।
जिन गघोदक पदे म्ष्टकर्म निवारणम् ॥

Colophon · इति लघु जिन कलशाभिषेक सपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चन्द्रावदातै मरलैसुगधैरनिद्यपात्रैर्वरसालिपुजै ॥ पुष्टो० ॥

Closing : वरखगिन्दु उवसग्गुतिहं ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३ कलिकुण्ड-पूजा

Opening : हूकार ब्रह्मरुद्र सुरपरिकलित विनाश प्रयुक्तम् ॥

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकु ड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५ ।

जि० र० को०, पृ० ७४ ।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening . देखे, क्र० १८०३ ।

Closing । देखे, क्र० १८०२ ।

Colophon . इति कलिकुण्ड पूजा ।

१८०५ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening । देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पो – राजहसोवनाह ।।१३।।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

१८०६ कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रूंकार ब्रह्मरुद्रं ... विद्याविनाशनम् ।

Closing : एवं विघ्नविनाशन भयहर सर्व भयान्तिकरम् ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री रस्तु ।

१८०७. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening · देखे, क्र० १८०६ ।

Closing देखें, क्र० १८०६ ।

Colophon . इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Openign : चिद्रूप चिदानन्द अपर निर्जर परम् ।
शान्त कर्म्मातिग पूत पुराण पुरुषोत्तमम् ।।

Closing : अतुलगुणसमग्र स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धि. प्राप्तसर्वे प्रसिद्धिः ।
नमति सुजमकीर्ति कोमलाकीर्त्य-कीर्ति ,
रतनविबुधसातँ पातु व मुक्तिकातँ ।।७७।।

Colophon : इति कजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभ अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening · लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वै रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।
लोकालोक सो काल तीन मबविधि धरी ,
जानि सो सिद्ध देव जजो -हुथुति वनी ।।

Clo·ing : पुत्र प्राप्त करि भवाद्रिसुतरी रोगाग्निधारा धरी,
पापातापहरि प्रबोध सुचरी वश्रीन्द्रभूसोदरी ।
आनन्दाद्भुत धन्य धाम नगरा मायामय मा री,
चर्च्यामाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शकरी ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

१८१० क्षमावणी पूजा

Opening : देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्व्रतविधायक ॥

Closign : यश्चैतन्यमचिन्त्यमद्भुतगुणा श्रद्धानमत स्फुरन्,
ज्ञान पचसमस्ततत्वविषय स्वात्मावबोधद्युति ।
तच्चारित्रमनतरगत व्यापारपारगता ,
वद्दे तत्रितय त्रिधापतिणत यन्निश्चयान्निश्चितम् ॥१२॥

Colophon. इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७ ।

१८११. क्षेत्रपाल पूजा

Opening · युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यै इक्ष्वाकुवशोधरधर्मवेदी ।
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु' प्रहाकृता घातकर्तुर्यभागम् ॥१॥

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्टासघे यतिपति तिलके ··· ·· क्षेत्रपाना शिवाय ॥२७॥

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कार्तिक-मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या भृगुवासरे । श्रीसवत्-१६५३

१८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।
बलिं ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ॥१॥

Closing : आठ्ठो छद गानु मैं तो रज्यो क्षेत्र कौ ।
मुनिसुभचद्र गावौ छद भैरु लाल कौ ॥
जैन को उद्योत भैरू समकित धारी ॥१२॥

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् ... सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वन्दे सन्मति देव सन्मति मतिदायकम् ।
क्षेत्रपाला विधि वक्ष्ये भव्याना विघ्नहानये ।।१।।

Closing : सर्वविघ्नहरायक्षा दक्षा रक्षगुणान्विता ।
एते पिण्डीकृता यक्षा स्मारप्रमिता मता ।।२६।।

Colophon : इति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ६८ ।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें क्र० १८१४ ।

Closing : शांतिधारात्रय ... क्षेत्रपाला शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।
करि पूजा जिनद ही, कमलानद ही विजैपाल बहु सिरनवै ।।

Celophon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् ।

१८१७. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८१२ ।

Closing : इति प्रवुद्धातत्त्वस्य स्वय ... प्रादुरासनजितकर्मी ।

Colophon इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष— इसमे क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनो है। बीच के वहुत से पत्र नही है ।

१८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening ; प्रणम्य श्री जिनेशाना वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
पूजा श्रीक्षेत्रपालाना वक्ष्ये विघ्नविहानये ।।१।।

Closing · लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रूहरि,
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।
विद्यानदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णाशनी,
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चित्करी ।।

Colodhon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१९. लब्धिविधान-पूजा

Opening : श्रीवर्द्धसानजिनचद्र ... सतत शुभक्त्या ।।१।।

Closing : जिणगुणरयणयरू हियै देवायरू केवलणाणलहैवि चिर ।
हुय सिद्ध निरजणु भवभयवचणु अगिणिय रिसिपु गमुजिचिरू ।८।

Colophon : इति लब्धविधान पूजा ।

१८२० लघुकर्मदहन-पूजा

Opening . तीर्थंकर जिनको नमत सुर नर सत ।
ते वंदो वरतो नवा येने सिद्ध महंत ॥

Closing मैं मत हीन विवेक नही अर प्रसाद में लीन ।
थिरता लघु पग जानककर लघु मत स्व नवीन ॥

Colophon : इति लघु कर्मदहन विधान सपूर्णम् । मिति अघन सुदी २ संवत् उनैसै अठाईस दसकत परमानद के मुकाम जवलपुर । ठीकाना हनुमान तलाव श्री मंदर वडे दिवाले के पक्षवाडे मुनामाल ।

विशेष— इसके वाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१. लघुपंचकल्याणक विधान

Opening : वंदो श्री अरहंत पद मन वच तन चितधार ।
मगलमय जग मैं प्रगट पार उतारनहार ॥

Closing : तुम दयाल जगनपति सिवदरसी भगवान ।
सिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।
संवत् येक पदार्थ ससगत मिलाय कर ठीक ।
पूरन पाठ भयो सो तव भद्र कृष्न नवमीस ॥

Colophon : इति लघु पचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : दिन दिन गुनकर करी सदा वढत जगत जिनचन्द ।
वर्द्धमान कही हरी जज्यौ मैं पूजो सुचकद ॥

Closing : ॐ ह्रीं अतिवीरनामेभ्यो अर्घम् ।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१८२३. मगल

Opening : पणविवि पच ... जगत मगल गावई ॥१॥

Closing : वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए ... जगत मगल गाईए ॥

Colophon : इति तृतीय मगल सम्पूर्ण ।

१८२४ मत्रविधि

Opening : ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै त्यारितादिने उपवास कृत्वा जाप्य १२००० त्रिसध्य अर्द्धरात्रौ एव ४८००० ।

Closing : अनेन मत्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० । शत्रुनाश भवति । अनेन मत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूर्वमत्रस्मरणीयम् ।

Colophon : इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२५. मोक्षपैडी

Opening : इक्क समै रूचिवत नौ गुरुवरकै सुनु मल्ल ।
जो उफ अदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ॥

Closing : भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह कौ यह उपदेश ।
कहत बनारसीदास यौं मूढ न समुझै लेस ॥

Clolophon : इति मोक्षपैड़ी समाप्तम् ।

१८२६ नदीश्वर-पूजा

Opening : नदीश्वर पूरब दिसा तेरह श्री जिन गेह ।
आह्वानन तिनका करू मन वच तन धरि नेह ।।१।।

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्तम ताके पाठपढे मनलाई ।
जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै वनाई ।।
ताके पुत्र पौत्र अरू सपति वाढै अधिक सरस सुखदाई ।
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ।।

Colophon · इति नदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८७६ ।

१८२७. नदीश्वर-पूजा

Opening मध्येमडपमालिखेद्वर्त्तरे नदीश्वर मण्डलम ।
वर्णं पञ्चभिरानत गुणगुरु शक्र सता सम्मत ।
तन्मध्ये चतुरानन जिनवर विम्वस्य सातास्पद ।
दिव्यैंऽष्टभिरिष्ट-सौख्य-जननं कुर्यात्तदर्च्चा तत ।। १।।

Closing आयु ·· देवार्हतामर्हणा ।।११।।

Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ।।

१८२८ नदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening . कर्प्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीर. धाराभिराभिरामित. श्रीतहारिणीभि
नदीश्वरेष्टदिवसानि जिनाधिपाना आनदत। प्रतिकृति.
परिपूजयामि ।।

Closing इयथुणि वि जिणेसरू महिपरमेसरू · सुक्ख सो पावई ।।

Colophon : इति श्री नदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्त. । लेखकपाठक-
वाचमश्रोतृणा समस्तु शुभ भवतु ।

१८२९. नवग्रहपूजा

Opening : अर्कश्चन्द्रकुजसौम्यगुरुशुक्रशनिश्चरः ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनाशन जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : कन वछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरै ।
ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूजन करै ॥

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

१८३० नवग्रह-पूजा

Opening : देखें क्र० १८२९ ।

Closing देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon . इति श्री केतुअरिष्ट तिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विंशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्वत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

१८३१. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८२९ ।

Closing · देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon . इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

१८३२ नवग्रह-पूजा

Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्म नरवासुखाणि ? प्रथम तु तेव,
समन्नमन्नाकिशिरः किरीट सघच्छविश्रस्तमनीयत वैः ।।१।।

Closing : आदित्यादिग्रहामर्वे नक्षत्रासुरासया ।
कुर्वन्तु मगल तरय पूजा कर्तृणस्य वा ।।

Colophon इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३. नवग्रह-पूजा

Opening : प्रणम्याद्य ततीर्थेश धर्म तीर्थपवर्त्तकम ।
भव्यविघ्नोपशात्यर्थं ग्रहार्चविर्ण्यते मया ।।१।।

Closing देखें, क्र० १८२६ ।

Colophon : इति श्री केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मगलम् अस्तु ।

१८३४. नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रहाम शब्दये युष्मानयात सपरिक्षदा ।
अत्रोपवसता तावो जये प्रत्येकमादरात् ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।

Colophon : इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५. नवकार-पच त्रिशत्पूजा

Opening : श्रीमज्जिनेंद्रवरसायनमारभूत पूज्य नरामरसुखेचरनायकैश्च ।
ध्येय मुनींद्रगणनायकवीतरागै सस्थापयामि नवकारसुमत्रराजम् ।

Closing : जय परमणि रजण दुरिय विहडण वरदिंतु सुहा ॥

Colophon : इति श्री नवकार पैंतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६. नवपद-कलश-पूजा

Opening : — जोयन श्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।
सोल जोजन ऊचो सही ध्यानधरु चित लाय ॥

Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न थई अधूरी रे ॥२२॥

Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ॥

Closing : जो एतना करी .. ... पावैं ।

Colophon : इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८. न्हवण-पूजा

Opening : सौगधसगतमधुव्रतझकृतेन सवर्णमानमिव गधनिद्यमाद्यौ ।
आरोपयामि विवुधेश्वरवृ दवद्य पादारविंदमभिवंद्यजिनोत-
मानाम् ॥१॥

Closing : ... .. जन्मजरामरण ' ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८३९. न्हवण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८३८ ।

Closing : अल्हा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्ठी ।
एदे पच णमोयारा भवे भवे मम सुह दिंतु ॥१॥

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीट कोटि सलग्नरत्नकिरणच्छविधू-
सराघ्रि ॥ ॥
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै भक्त्या जल जिनपते वहुधाभि-
सिंचेत् ॥१॥

Closing य पाडुक ' -- ' ल त्वदीय त्रिबम् ॥

Colophon : इति त्रिव स्थापण मत्र ।

१८४१ निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेप्पिणु हियै धरेप्पिणु वाएसरेगुणगणहरह ।
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेसरह ॥१॥

Closing इय तित्थकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमनयरे ।
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मगल सयल पहु तिधरे ॥१७॥

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा की प्राकृत आरती सपूर्णम् ।

१८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थागतोपि वा ।
य स्मरेत्परमात्मानं स वाह्याभ्यन्तरे शुचि ॥५॥

Closing देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति णिव्वणि पूजा समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय ... ... सव्वसाहूण ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निव्वणि पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४ निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

... ... णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : कहे कहाली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।

करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निव्वणि थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती सपूर्णम् ।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निव्वणि पूजा ।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : सवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।

भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Colophon इति निर्वान काण्ड मम्पूर्णम् ।

१८४७ निर्वाण-पूजा

Opening देखे, क्र० १८४३ ।

Closing देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८ निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon इति निर्वाण पूजा मम्पूर्णम् ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वदौ श्री भगवान कौ भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर वीस भगवान है ।
गर्भ जन्म तपज्ञान भए निरवान है ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४९ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महांन ।
भादौ कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयौ सुजान ।।२४।।

Colophon इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज चौवीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ।।१।।

Closing : ए थल जावैं पाप मिटावैं गावैं ध्यावे भक्ति बढावैं ।
जो पुजे सो शिव लहैं ।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सपूर्णम् ।

१८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा सस्कृत जयलाल सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३ निर्वाण-कल्याणक

Opening केवल दृष्टि चराचर देख्यौ जारिसो,
भविजन प्रति उपदेश्यौ जिनवर तारिसो ।
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,
रतनय सुम लछन शिव पय भाईया ।।१।।

Closing रचि अगरचदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि सस्कारियो ।
निर्वान कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।
भणि रूपचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ।।६।।

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening सौगन्धसगतमधुव्रत ।
पादारविंदमभिवद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : सुखदेवौ दुखमेटिवौ एहि तुमारीवानी,
मो अधीर की वीनती सुन लीजै भगवान ।
दरसन कीजै देव कौ आदि मध्य अवसान,
सुरगन के सुखभोगके पावै पदनिरवान ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् ।

१८५५ पदलावनी

Opening शिखर गिर के ऊपर तिर्थङ्कर विराजे ।
आग्नि रात मे याने देव दुंदुभिवाजे ॥

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर वीसतीर्थङ्कर मुक्ति गए ।
ककर ककर सिद्ध विराजे असख्यात मुनि मुक्ति गए ॥

Colophon · इति सम्पूर्णम् ।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखे, क्र० १८५७ ।

Closing : पायोभिदिव्यगद्यै, ... पूजयामीष्टनिद्धै ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५७. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूडा-,
पाशांकुसोरभफलांकितदो श्चतुष्काः ।
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतस-,
पद्मावती जयतु शामनपुण्यलक्ष्मी ॥

Closing : या देवी रिपचोरवन्हिजमहा सकष्ट संहारिणी,
या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिर्णाशिनी,
रकाना धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थ संपादिनी,
सा मा पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon : इति पद्मावीपूजा चारूकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८५८. पद्मावती-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८५७ ।

Closing : श्रीमत्पन्नगराजाग्रे वाराधारां करोम्यहं
सर्वशोकस्य शांत्यर्थं भृंगारनालनिर्गता ॥१०॥

Colophon : नहीं है ।

विशेष— इसमे पार्श्वनाथपूजा तथा धरणेन्द्रपूजा भी संकलित है ।

१८५९. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीमच्चतुर्द्विदशशोभितदीर्घवाहिनी वज्रादिकायुधधरामहमा-
ह्वयामि ॥
संस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमाना पद्मावतीक्षितेनुता फणिराज-
कांता ॥

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,
नैरात्म्य प्रतिपद्य नश्यति जना कारुण्य बुध्या मया।
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,
बौद्धोघान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालित ॥१६॥

Colophon : इति अकलंकाष्टकम् ।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Opening : नम श्रीपार्श्वनाथाय चतुर्विंशति मगलम् ॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपंकज-सेव्यमान - प्रभजामि नित्यम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८६१. पद्मावती-पूजा

Opening : जय कुसुमकुंकुमारुणशरीर - पद्मावती ॥

Closing : गभीर मधुर मनोहरतर सद्घोषरत्नाकरम्,
वक्त्र पूर्णकर सुधाहितकर भक्ताबुज भास्करम् ।
नानावर्णसुरत्नभूषितकर ससारसौख्याकरम् ।
श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभद्र कुर्वन्तु वो मगलम् ।

Colophon इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१८६२ पद्मावती-पूजा

Opening : देखे, १८६१ ।

Closing : देखे, क्र० १८६१ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम् ।

Closing : पावए अष्टौ सिद्ध ... चउसघहि गए ॥२५॥

Colophon : इति श्री पच कल्याणक जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८६ ।

१८६७. पंचकल्याणकपाठ

Opening : देखे, क्र० १८६६ ।

Closing : फुनि हरै पातक टरै विघन जे होय मगल नित नए ।
भनि रूपचद त्रिलोकपति जिनदेव चउ सघहिंगए ॥२६॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणक सपूर्णम् ।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

Opening : सिद्ध कल्याणबीज कलिमलहरण पंचकल्याणयुक्तम्,
स्फूर्यद्देवेन्द्रवर्ये मुकुटमणिगणैर्दीप्तपादारविन्दम् ।
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुषकर कर्म्मवल्लीकुठारम्,
कुर्वेऽह पूजन वैः प्रवलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥

Closing : इति शान्तिधारा त्रय —
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्य च बोधान्विता ।
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये सपूजिता, सस्तुता ॥
त्रैलोक्येशमहोदरोभ्येव सुख समारक चाप्नुतम्,
मोक्ष चापि दिशतु वै जिनवराः सर्वात्मना सर्वदा ॥६॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
Cagt, of Skt & Pkt Ms P 662

१८६९. पचकल्याणक-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८६८।

Closing : अनेकतर्कमकर्पहर्पातितवुद्योत्तमा ।

स्वद्धिनी च वयस्फूर्तिजीवातु श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । लाला सकरलाल रतनचद के माथे की पुस्तक ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२।

१८७०. पंचकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमू , कलपकुरूह कुलकद ।

कलमष दुर कल्याणकर, वुधकुलकमलदिनद ॥१॥

Closing : तीन तीन वसु चद ये सवत्सर के अक ।

जेष्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढठो निसक ।

Colophon ; इति पचकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम् ।

१८७१ पचकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मेभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणसिद्धये ।

येषा नामान्यनतानि कातिभिरपि सस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारी सुनाप्तसुकरी चक्रेन्द्रसपत्करी जन्मादिसुतरी ।

गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी · रोगाद्यनासकरी ॥

Colophon इति श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा पचकल्याणक समाप्तम् ।

१८७२. पचकल्याणक-पूजा

Opening : पच परमगुरु वदि करि पचकुमार मनाय ।

मदन व्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

१८७६. पचमंगलपाठ

Opening : देखे क्र० १८६६ ।

Closing : देखे, क्र० १८६६ ।

Colophon : इति पंचमगल सम्पूर्णम् ।

१८७७. पचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८७८ ।

Closing : ॐ नंदीश्वरद्वीपवावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।

Colophon नही है ।

१८७८. पचमेरु-पूजा

Opening : सर्वौषडाहूयनिवेश्य ताभ्या सानिध्यमानीयपड्पदेन,
श्रीपचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमासमस्ता ॥१॥

Closing : पचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय।
द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ॥

Colophon : इति श्री पचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६१ ।

१८७९. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८७८ ।

Closing : देखे, क्र० १८७८ ।

Colophon : इति पचमेरु की आरती समाप्तम् ।

१८८० पचमेरु-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८७८ ।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरघैं ।

श्री पचमेरोस्तु जिनालयाना यजाम्यशीति प्रतिमा समस्तम् ।

Colophon · इति श्री पचमेरू पूजाष्टक समाप्त ।

१८८१· प'चमेरु-पूजा

Opening : देखे, १८७८ ।

Closing भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विपै दिठ भव्य जनौ ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पचमेरु जयमाल भणौ ॥१॥

Colophon : इति पचमेरु पूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५ ।

१८८२· प'चमेरु-पूजा

Opening । जिनान् मस्थापयाम्याह्वानादि विधानत ।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पाजलि विशुद्धये ॥

Closign । सुदर्शनादिमेरूणा पूजाकारिसुभावहा ।

रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पाजलि विशुद्धये ॥

Colophon . इति श्री पुष्पाजलि पूजा समाप्तम् ।

१८८३ प चमेरु पूजा

Opening । तीर्थं कर के न्हौन जलतैं भए तीरथ सर्वदा,

तातै प्रदच्छन देत सुरगन पचमेरुनि की सदा ।

दो जलधि ढाई दीप में सब गनत मूल विराजही,

पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होंहि सुख दुख भाजही ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १८७८ । ।

Colophon : इति पचमेरु पूजा

१८८४ पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening : श्रीमन्त्रिलोके तिलकायमान मानुत्रलोमव्यमरोजमानुः ।

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवद्यो वदे जिनेन्द्रोविश्रुत विधाता ॥

Closing : ॐ ह्री समोसरणादिश्वराय अष्टाविंमतिगुण विराजमानाय श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवरदा भवतु ॥

Colophon : इति पचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५. पंच-परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणुयण इद ······· अट्ठावर मगल ।

Closing : अरहन्ता सिद्धा आयरिया उवझाया साहुपचपमेट्ठी ।

एदे पच नमोयारो भवे भवे मम सुह दितु ॥७॥

Colophon : इति श्री पचपरमेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

१८८६ पंच-परमेष्टी पाठ

Opening : प्रथम पचपद को नमो गुरुपद सीस नवाय ।

तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ॥१॥

Closing : जै जै श्री आचार्य्य नमस्तै, गुन छतीस वपुधार्ज्य नमस्ते ।

तिन पदनमिधरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ॥३॥

जै जै श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीम सुखदाय नमस्ते,
वदय जे घरि भक्ति नमस्ते, .. — .. — ॥४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८८७. पच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमत त्रिजगदेव त्रैलोक्यानददायकम् ।
चन्द्राक चन्द्रभ वदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविम्माधरो,
मोहे भेशमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिन ।
गसारार्णवतारकोहतमलो धर्मादिभूपो मुनि·,
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनमित कुर्यात्सदा व सुखम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धर्म्मभूषण विरचित परमेष्ठिपूजा समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८ पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ॥

Closing : सवत एक सहस्र नव सतक सो सताईस ।
भादो क्रस्न त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ॥

Colophon : इति पच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९ पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम,
ॐ अथ अरहतदेव के ४६ गुण ।

ॐ ह्री षट् चत्वारिंशत गुण सहिताहंत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्री वीर्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम. ।

Colophon : नही है ।

१८९०. पंच परमेष्ठी-पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमलाकर सच्च चिद्रुज्वलमह प्रकटीकृतार्थम् ।
उच्चैर्निधाय हृदिवीर-जिन विशुद्धं शिष्टेष्टपच परमेष्ठीमह
प्रवक्ष्ये ॥

Closing : स्फुर्जत् प्रतापतपनप्रकटीकृताशा
श्री धर्मभूषणपदाबुजचुम्नावनि ।
कर्त्तव्यमित्युदयत सुयसोभिनदिसूरे
सदतरूदपीकरणैकहेतु. ॥८॥

Colophon : इति यशोनदिविरचिता पचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।
देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।

१८९१ पार्श्वनाथ कवित्त

Opening प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि जाप जपौ जगवदन की ।
तिहुंलोक के लायक लायक हौ सुखदायक आनि निकदन की ॥

Closing : जग सौ भै भीत तेरे पथसो परम प्रीति ।
ऐसी जाकी रीति ताकौ वदना हमारी है ।

Colophon : नही ।

१८९२ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : • न्मडल चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।
महारम्य पचवण रत्नप्रकरसभृतम् ॥२॥

Closing   श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।
भृंगारनालनिर्वाति शांतिधारा करोम्यहम् ।

Colophon :   नहीं है ।

१८९३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening .   प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार ।।
जरत नाग जुग वोधि दियो तिहिं सुरपद परम उदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

Closing ।   पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।
सुखसागर वर घन को शमि सम सब कषाय को मेघ महान ।।
तिन को पूजै जो भवि प्रानी पाठ पढै अति आनद आन ।
सो पावै मन वंछित सुख सब और लहै अनुक्रम निरवान ।।

Colophon ·   इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८९४ पार्श्वनाथ-पूजा

Opening .   ह्रीं देव पार्श्वनाथ धरणिपतिनुत देवदेवेन्द्रवंद्यम्,
ह्रींकार बीजमंत्र जगदकलिमत्र सर्वोपद्रवहारी ।
ॐ ह्रां ह्रीं हुंकारनार अघहरनमहाभक्तिरूप जनानाम्,
व्यालीढ पादपीठ शठकमठमति माह्वय पार्श्वनाथम् ।

Closing ·   कल्याणोदयपुष्पवल्लभदय संसार संतापभृत्,
तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणा माणिक्यमालायते ।
पायात्म्यज्जनभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती,
सेव्यसेवक वांछितार्थफलद श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ।।

Colophon ·   इति पार्श्वनाथ पूजा ।

१८९५. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।
मिलि सुगध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ।।
परम श्री जिनपाद पकज विगत कल्मषदूषणम् ।
श्री पार्श्वनाथमह यजेवर फणि लाक्षन भूषणम् ।

Closing : जलादिगधाक्षतचारुपुष्पै, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानै ।
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेश, श्री पार्श्वनाथ परिचर्यमामि ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम् ।

१८९६ प्रभाती मगल

Opening : जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मत मेरी ।।

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बडे भागनि पाइयैं ।
जन रूपचद चिता कहा जव सरण चरण न आइयैं ।।

Colophon इति श्री मगलजीत समाप्तम् ।

१८९७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्य लक्षणान्वितम् ।
ऋज्यावत सुसस्थान तरूणाग दिगम्बरम् ।।१।।

Closing : ये केचिज्जिन .... नरेन्द्रार्च्चितान् ।।१०।।

Colophon : इति श्री पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचित प्रतिष्ठातिलक समाप्तम् ।

१८९८ पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढाये वीर भवदधि पारहूजे चदन चढाये दाह दुरित मिटाईये ।
पुष्प के चढाये पूजनीक हूजे जगत मे अक्षत चढाऐ ते अभय पद पाईये ।

Closing पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को वढावे दया कही आचरन को ।
ताते भव्य दया कीजे तिहुलोक सुख लीजे कहत विनोदीलाल जी तहु मरन को ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८९९ पूजासग्रह

यह पूरा ग्रथ अस्पष्ट है । इसे पढा नही जा सकता ।

१९००. पूजासग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकू नमि गणधर के पाय ।।

Closing . मनवछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।
यह दु ख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूज करै ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सपूर्णम् ।

१६०१ पूजा-विधान

Opening : चितवत वदन अमल चद्रोपम तजि चिता चित होय अकामी ।
त्रिभुवन चद्र पाप तम चदन नमत चरन चद्रादिक नामी ॥
तिहु जग छाई चद्रिका कीरत चिह्न चाद चितत शिवगामी ।
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चद्रप्रभु स्वामी ॥

Closing : राखो सभार उर कोस मे, नहि विसरो पल रकधन ।
परमाद चोर टारन निमित करो पास जिन गुण कथन ॥

Colophon नही है ।

विशेष—इसमे कई पूजाएँ सकलित है ।

१६०२ पुण्याहवाचन

Opening . श्री शातिनाथममरासुरभूतिनाथ,
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशातिकरणं प्रणव प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing श्री शातिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु' तव पुष्टि समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र-घन तथास्तु ।

Colophon । इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६१६ ।

१६०३ पुण्याहवाचन

Opening श्रीनिर्ज्जरेशाधिपचक्रिपूर्व , श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् ।
श्रीवर्द्धमान प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यरीतिकथयामि सिद्ध ॥१॥

Closing : स्वस्तिभद्र चास्तु ३ न स्वी क्ष्वी हुम स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon : इति पुण्याहवाचन ।

१९०८. पुष्पाजलि पूजा

Opening : वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करौ त्रिकाल ।
पुष्पाजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल ।।१।।

Closing : घाति कर्म निरमूलन करी निर्वानपद तव अनुसरै ।
जा विधि व्रत प्रभाव तित लह्यौ, ललितकीर्ति कवि इस विधि कह्यौ ।।

Colophon : पुष्पाजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१९०९. रत्नत्रयपूजा

Opening : चिदगतिफणविप हरन मन, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरो सम्यक त्रयी निहार ।।

Closing : एक सरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब द्यानत को सुखदाय ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

१९१०. रत्नत्रयपूजा

Opening : पचभेद जाकै प्रगट गेय प्रकासन भान ।
मौह तपन हर चद्रमा, मोई सम्यक् ज्ञान ।।

Closing : देखे, क्र० १९०९ ।

Colophon : इति रत्नत्रय पूजा ।

विशेष— इसी से ग्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत हैं ।

१६११ रत्नत्रयपूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : मोहादिनरदाहीरिग्दपशम नपादिने : अनन्तस्वहितकाय ।
रत्नत्रयाय पुष्टैलिलमप्रभाय पुराजनि प्रविमन ति अवतारयामि ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमानमात नत्वा श्रीमत गुरुपदमपि ।
आगमागमं श्रीमान् पश्च रत्नत्रयार्चनम् ॥१॥

Closing : देखें, क० १६०६ ।

Colophon इति रत्नत्रय जी की भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : इति दर्शनस्तुति ... मुक्ति ॥६॥

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४ रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञान व्रत शिवमग तीनों मई ।
पार उतारण जान द्यानत पूजौं व्रत सहित ॥१०॥

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

१९१५. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे,, क्र० १९१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधान ... ... · दर्शनाख्य सुधातु ॥३॥

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१९१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय सद्दर्शन भवभय निरसन मोह महातरु वारण ।
उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ॥

Closing : मदरागकषायरज समन भवदुर्जयदानवमदमनम् ।
परम शिवसौख्यनिवासकर चरण प्रणमामि विशुद्धितरम् ॥

Colophon : नही है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ९३२ ।

१९१७. रविव्रत उद्यापन

Opening : पार्श्वनाथमहं वंदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।
कमठोपसर्गहंतारं जोगीकल्पतरु परम् ॥

Closing : रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।
पचात्माविने विप्र लेखक चित्ततत्पका ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत उद्यापन विधि पुजा समाप्तम् ।

१९१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इश्वाकुवंशकुलमंडनअश्वसेनो तद्वल्लभ प्रतिवत्साजिनवामदेवि ।

तस्या जिन विमलमूर्त्तिसुरेद्रवद्य त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपर नमामि ॥

Closing : इति रविव्रत पूजा सुरपति पद दूजा जे करत नव व्रत सही ।
मन वचकाय धावही मो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देत सही ॥१२॥

Colophon . इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६. रविव्रत-पूजा

Opening . देखे, क्र० १६१८ ।

Closing इक्ष्वाकीररवंशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज ,
वामानदनइन्द्रचद्रधरनी ससेव्यमान सदा ।
प्रत्याहाय विभूषित वसुवृधि कल्याणकारी सदा,
ते तुभ्य विदधातु वाछितफल श्रीपार्श्वकल्पद्रुम ॥१२॥

Colophon . इति रविव्रत पूजा ।

१६२०. ऋषिमडल-पूजा

Openign प्रणम्य श्री जिनाधीश — वक्षे पूजादिमल्पश ॥

Closing श्रीमच्चारुचरित्र ~ ' ' नदीगुणादिर्मुनि: ॥

Colophon . इति ऋषिमडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि: श्लोकै ग्रथाग्रथ । ३८० । सवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पडित श्री हेमराजेन हुकुमचद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१ ऋषिमडल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि श्लोक ग्रथाग्रथ । संवत् १९५६, वैशाख कृष्ण ८ मंगलवारे लि० ।

१९२२ ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम् ।

१९२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम् ।

१९२४ सहस्रनाम-पूजा

Opening : पंचपरमगुरु कोनमो उर धरि परम सुप्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी, चोवीसो धरि चीत ।।१।।

Closing : सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह समि जान ।
यह रचना पूरी भई मंगल मुद सुखथान ।।
सिखिरचंद कृत पाठ यह वन्यो अनुपम रास,
जो पढसी मन लाय के पासी मुख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति पौषशुद्ध ८ वार सुभ वुध समत् १९४२ । को पूर्ण हुई सों जयवंत प्रवर्त्तो । श्रीकल्याणमस्तु । शिखिरचंद अग्रवाल गोइल गोती कवि श्री वृंदावन के लघु सुअन कृत जयवंतौ ।

१६२५ सकलीकरण

Opening : इन्द्रश्चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान् ।
याममंगलपूजार्थं परिक-र्मात्रेरेदिदम् ॥१॥

Closing : सिद्धार्थान् अभिमन्त्र्य परमत्रेण सर्वविघ्नोप समर्थान् सर्वदिक्षु क्षिपेत् ॥

Colophon : इति सकलीकरण सपूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६४ ।

१६२६ सकलीकरण विधि

Opening : धृत्वाशेखरपट्टहारपदकं ग्रैवेयका लंबक,
केयूरांगदमर्दिवधुरकटी सूत्रा च मुद्राकितम् ।
चचत्कुडलकर्णपूरममल पाणिद्वय ककणम्,
मजीर कटकपते जिनपते श्रीगंधमुद्राकिते ॥

Closing : सर्वराजभय छि० सर्वचोरभय छि० सर्वदृष्टिभय छि० सर्व-दृष्टिमृगभय छि० सर्वसर्पभय छि० सर्ववृच्छिकभय छि० सर्व-ग्रहभय चि० सर्वदोषभय छि० सर्वव्या ... — ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६२७. सकलीकरण विधि

Opening : वासपूज्य जगत्पूज्य लोकालोकप्रकाशकम् ।
नत्वा वक्ष्येत्र पूजाना मत्रान्पूर्वपुराणत ॥

Closing : लोक्या चोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमत्रपूर्वम् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूर्णम् स० १६२१ ।

१६२८. सकलीकरण विधि

Opening : देखे, क्र० १६२५ ।

Closing : देखे, क्र० १९२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ह० पंडित परमानंदेन बाबू धर्मकुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ शुक्लपक्षे शनिवासरे संवत् १९५५ का । शुभ भूयात् ।

१९२९. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी वंदु सिरनामी मरण समाधि भला है ।
मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायै ॥१॥

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ॥२०॥

Colophon : इति श्री समाधिमरण समाप्त. ॥

१९३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषभ सनमति चरम तीर्थं कर चउबीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीस ॥

Closing : ऐसे सामायिक पढौ सार जान मुनिवृंद ।
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ॥

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम् ।

१९३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखे, क्र० १९३० ।

Closing : देखे, क्र० १९३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

१६३२ समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मै कहाँ कहु हीत हेत री ।
बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ॥१॥

Closing : परम सरस्वती सिव -- गहे निज ग्याने तीन जु वरी ।
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६३३. समवशरन

Opening : धूल साल देखे मूल साल नरहत,
डर मानथल देखे जो ईमान महामानी कौ ।
वेदी के विलोकै आप वेदी पर वेदी होत,
निरवेद पद पावै याते है कहानी कौ ।

Closing : धरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो ।
अनुभाग वध स्थिति भागते, भागभागदारिद गयला ॥

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम् । सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६३४ सम्मेदाचल-पूजा

Opening : मुक्तिकान्ता प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम् ।
मुक्ति तीर्थ कर प्राप्य वदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥

Closing : वज्रीचद्रप्रतेंद्रपेद्रतरणी · प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon : इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम् । सवत् १८२६ भाद्र बदि १२ भौम दिने लिखि ।

१९३५ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेद तै बीस जिनेश्वर सिव गए,
अवर असंखित मुनि तहा तै सिद्ध भए।
वंदौ मन वच काय नमौ सिर नायकै,
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकै ॥

Closing : ए बीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर नित मघवा पूजन आवै।
नर नारी ध्यावै सो सुख पावै रामचन्द्र जिन सिर नावै ॥११॥

Colophon : इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम्।

१९३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहाँ ते शिव लये,
औरहु बहुत मुनीश शिवालै सुखमये।
ऐसे श्री सम्मेद शिखर नमिहू मुदा,
दरव साजि शुचि रुचि युत पूज रचो सदा ॥

Closing : जय एक वार वंदे जु कोय
तसु नर्क तिर्यं च कुगत न होय।
इत्यादि घनी महिमा अपार
प्रणमो मनवचकर सीसधार ॥

Colophon : 'इति'।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ९८३।

१९३७ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुखथान।
शिखर समेद सदानमो होई पाप की हान ॥

Closing : नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,
श्रीश्रसनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचै जाये।
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोव्रत आये।
शीतल अनत सभव अभिनदन चित्त भाये वदो सुख पाये।

Colophon : इति कवित्त सपूर्णम्।
मती भादो, वदी ५, वारगुरु सम्वत् १६२६।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२।

१६३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

Opennig : प्रणम्य सर्वज्ञमनतवोद्यामाप्तप्रद सद्गुणरत्नसिद्धम्।
कुर्व्वेत्रिशुध्या सुभ्रता हि तीर्थं सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम्॥

Closing चतु: मुनीन्द्रिभिश्लोकैमानृछदोवचोमये।
ज्ञातव्या ग्रथसख्या नृगणकै लेखकोत्तमै। ५॥

Colophon : इति भट्टारक श्री धर्म्मचद्र विनुच र पडित गगादास कृत सम्मेदा-चलपूजा समाप्तम्।

१६३९. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : पच परमगुरु - सारदा सीम ॥१॥

Closing : सिखरसम्मेद ... भानिये॥

Colophon : इति सवैया सपूर्णम्।

१६४०. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : देखे क्र० १६३७।

Closing : तुच्छ बुद्ध मोरी सही पडीत करो विचार।
भूल चूक अब होई जहा लीजो चतुर सुधार॥६॥

Colophon : इति श्री सम्नेदसिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गग सुवारिणा भरि झारिणा सुखकारिणा ,
भवतापनिवारिणा मलहारिणा कर्मवारिणा. ।
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गत सुखअर्पितम्,
वीसतीर्थसुपूजित भववार्जित मुक्तिसर्जितम् ।।

Closing : यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रदा
ते नारकतिर्य चगतिर्विमुखा सद्भावनाभावत ।
तेषा पुत्रकलत्रमित्रभवता सल्लक्ष्मी लीलाकरा
सत्समेदगिरिसु धर्ममत कुर्वन्तु वो मगलम् ।।

Colophon : इति श्री सम्मेद जी की पूजा सलाप्ताः ।

१६४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening : रिषभ अजित ... पूजत सुरराय ।।
Closing : मुक्ति मुक्ति दातार ... सिव लहे ।।
Colophon इति श्री समुच्चय पूजा सपूर्णम् ।

१६४३. शातिनाथ-पूजा

Opening : शाति जिनेश्वर नमू तीर्थ वसु दुगुनही ।
पचमचक्री अनता दुविधि षट्गुनीही ।।
तृणवत् रिधि सब छारि धरि तप सिववरी ।
आह्वानन विधि करू वार त्रय उच्चरी ।।

Closing प्रभु के चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत मोहयो ।
देवी वृंद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ।।

Colophon इति श्री सपूर्णम् ।

१६४४· शातिनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १६४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ·· ··· सु दर ततखिन वरई ।।

Colophon : इति श्री शातिनाथ जी की पूजा सपूर्णम् ।

१६४५ शातिपाठ

Opening : शातिजिनशशिनिर्म्मलवक्त्र सीलगुणव्रतसयमपात्रम् ।
अष्टमहस्रसुलक्षगगात्र नौमि जिनोत्तममबुजनेत्रम् ।

Closing : क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्म्मिको भूमिपाल·,
काले काले च सम्यक् वर्षतु मघवान व्याधयो यातु नाशम् ।
दुर्भिक्ष चौरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्र धर्मचक्र प्रभवतु सतत सर्व्व शौख्यप्रदायि ।।

Colophon इति श्री शातिजिनस्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५६ ।

१६४६. शांतिपाठ

Opening : देखे, १६४५ ।

Closing : मत्रहीन क्रियाहीन श्रद्धाहीन तथैव च ।
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर; ।।

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

१६४७. शातिपाठ

Opening : देखे, क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागा यथाक्रमम् ।
मयाभ्यर्चिता भक्ता सर्वे यातु यथा स्थितिम् ।

Colophon : इति श्री शाति सम्पूर्णम् ।

१६४८ शातिपाठ

Opening : देखे, क्र० १६४५ ।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जन नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
स्वस्व स्थान गच्छतु स्वाहा ।

Colophon : इति शाति पाठ ।

१६४९. शातिचक्र-पूजा

Opening : अर्हद्वीजमनाहत च हृदये ··· यद्वाछितम् ।।

Closing : निशेषश्रुतबोधवृत्तमतिभि प्राज्ञैरुदारैरपि
स्तोत्रैर्य्यस्य गुणार्णवस्य हरिभि·· ।
··· श्री शातिनाथ सदा ।।

Colophon : इति श्री शातिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ३७६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९६ ।

१६५०. शातिधारा

Opening : श्री खडोद्रवकर्दमेसु रूचिरै कर्पूरचूर्ण मितै:
समिश्रैरूतिगधिर्ल नदनदिकमारकूपादिभि. ।
... देवा जिनस्थापये ॥१॥

Closing : सर्व्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्व्वविषभयं छिद-२ भिद-२ सर्व्वक्रूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भय छिद-२ भिद-२ सर्व-वेदनी छिद२ भिद-२ सर्वमोहनी ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५१ शातिधारा

Opening : सिद्धावन श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।
आसार ससार यथोपपराम नमामिनाभेय जिन निकामम् ॥१॥

Closing : नेत्रे दद्वरूजाविनाशनकर ... स्नानस्य गधोदिकम् ॥

Colophon : इति शातिधारा ।

१६५२ शातिधारा

Opening : ॐ ह्री श्री क्ली रो हं व भ ह स त प व व म म ह ह स स त त प प ... ।

Closing : देखे, क्र० १६५१ ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । इति सिंहासन प्रतिष्ठा सपूर्ण ।
शुभमस्तु ।

१९५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीद्र-हिमवन्मुखकदराया. वाग्नीनप्तसुनरितिचारू विनिर्गतायाम् ।

स्नातानेनकविधधर्मतरंगिकाया योगीश्वरानघरत्नधरान् समर्च्चे ।

Closing ; असमसुखसार तीक्ष्णदंष्ट्राकराल स्वकरकरजटिल दीर्घजिह्वा-करालम् ।

सुघटविकृतचक्र शाविदासप्रसस्य भजतु नमतु जैन भैरव क्षेत्रपालम् ।।१।।

Colophon . अनुपलब्ध है ।

१९५४. सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत— ······ वसुरिद्धिहं ।।

Colophon : इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् ।

१९५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening : वदेह विश्वसेनेश — ··· ··· ज्ञानरूप निरजनम् ।।१।।

Closing . मानव विकृति येषा ··· ···· तत्व तत्वार्थवेदिन. ।।१४।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नम. प्रगदित-परमार्गंगुप्रमिद्धांतनारे,
जिनपतिनगमेडिग्मन् भारता गदधान ।
जगति समयमारकोसंत. नन्मुनिन्द्रै.
स वसतु मम चित्ते मन्छुतज्ञानरूप ।

Closing · अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढे सुणे जे भाव घनी ।
ब्रह्म जिनदास भाखि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिघणी ।।

Colophon : इति सरस्वति जयमाला सपूर्णम् ।

१६५७. शास्त्र-पूजा

Opening : पय. पयोधेन्त्रिदशापगाया पय' पय' पेयतयोपयोग्यम् ।
समंतभद्रा श्रुतदेवतायै: भक्त्या परार्थं. परया ददामि ।।१।।

Closing : जिनवाणी के ज्ञान तैं सूझे लोक अलोक ।
द्यानत जग जैवत को सदा देत है धोक ।।११।।

Colophon : इति शास्त्र पूजा ।

१६५८ शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण '' ' '' अह परिपूजये ।।१।।

Closing । मलयकीर्ति कृतामपि सम्तुति पठति य. सतत मतिमान्नर: ।
विजयकीत्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६८ ।

१६५६. शास्त्र-पूजा

Opening । देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : दुरिततिमिरहंस मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,
मदन भुजगमन्त्र चितमातंगसिंहम् ।
विसनघनसमीर विश्वतत्त्वैकदीपम्,
विषयरसकरीजाल ज्ञानमाराधीयत्वम् ।।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १६५८ ।

Closing : देखे, क्र० १६५७ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १६५८ ।

Closing : स्तुत्वेति ········ समुद्‌चरेत् ।।३।

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखे, क्र० १६५८ ।

Closing : देखे, क्र० १६५८ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३. शास्त्र जयमाला

Opening : सपयसुहकारण ··· ·· सगमकरण ।।१।।

Closing : इय जिनवरवाणी ... .. णवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१९६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्ध सिद्धार्थद सुद्ध सिद्धात्मान स्वदर्गगम् ।
ध्रौव्योत्पादगुणं दुक्त यदे त जणहेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्ध कविनायकः ।
तेनेद रचितः पाठः शत्रुञ्जयाख्यानिधानकः ॥

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते [illegible] सवत् सं १० ? वर्षे अश्विनी शुक्ल द्वितीयां पटनानामनगरे श्रीमूलसघे अवावती गच्छ भट्टारकाधिराज श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय ताविद तेजपालेनेय पूजा लिखिता । सत्रुजय पूजाथा कमलानि प्रथम वलये ।१॥ द्वितीय वलये ॥८॥ तृतीये ॥१२॥ चतुर्थे ॥१३॥ पचमे ॥३२ एव ६९॥ कल्याणमस्तु । इति सपूणम् ।

१९६५ सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोरयुत सबिंदुसपर ब्रह्मासुरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदल तत्सधितत्वान्वितम् ।
अतः पत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रींकार सवेष्टितम् ,
देव ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरीभकठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसार चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्त पद्मनदीन्द्रवद्यम् ।
निखिलगुणनिकेत सिद्धचक्र विशुद्धम्,
स्मरति नमति यो वा स्तोति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० २००
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६० ।

१९६६. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १९६५ ।

Closing : आवृष्ट सुरसपद विदधति ' ' साराधनादेवता ॥

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

१९६७. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१९६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

१९६९ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखे, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।

१९७०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।
Closing : जो पूजै गावै थुत चढावै मन लगावै प्रीति सौं ।
खुस्याल चन्द कहैं कहा लौं जस जिनो का रीतमों ।
जे नाम अक्षर जपैं हरषैं धन्य ते नरनारि हैं ।
प्रभु पतित तारन दुख निवारन भगत को निरतार हैं ।
Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१९७१. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १९६५ ।
Closing : देखें, क्र० १९६५ ।
Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिज्ञा सम्पूर्णम् ।

१९७२. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९७० ।
Closing : देखें, क्र० १९७० ।
Colophon : इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१९७३. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।
Closing : सिद्ध वरै ससार, सिद्धन की पूजा करो ।
आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ॥
Colophon : इति सिद्धपूजा सपूर्णम् ।

१९७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सुदृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

१९७५. सिद्धपूजा

Opening : देखे, क्र० १९६५ ।

Closing कृत्याकृत्तिमचारुचैत्यनिलयान् दुष्कर्मणा शानये ॥

Colophon : नही है ।

१९७६ सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखे क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

१९७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

१९७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।
परम निरजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी ······· जाने सो दीवाना आतम को यह ॥

Colophon : सपूर्णं ।

१९७९. सिद्धपूजा

Opening : इत्य चक्रमुपास्य दिव्य ध्यान फल न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्ट सुरसंपदा विदधति मुक्तिश्रियोवश्यताम्········ पायात्पचनम कृपाक्षरमयी साराधनादेवता ॥१॥

Colophon : नही है ।

१९८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौवीस जिह जिह थानक सिव गये ।
सिद्ध भूमि निस दीस मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावै ध्यावै गावै भक्ति करै ।
ताके जस कहिए सपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै ॥१०॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१९८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।
सिद्ध चक्र पूजा रचो शुद्ध त्रियोग सभार ॥

Closign । जिन गुण करण आरभ हास्य कोधाम है।
वायस का नहिं सिधु तारण को काम है ।।

Colophon इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम् ।
सवत् १९६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ।।

१६८२. सिद्धचक्र-पूजा

Opening · अरिहत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे।
भेद छेद करि आत्मा अरिहतरूपी थाय रे ।।

Closing । योग असख्य ते जिण कह्या नव पद मोक्ष ते जाणो रे।
एह तणै अविलवनै आतम ध्यान प्रमाणो रे । २१ वी० ।।

Colophon · अनुपलब्ध ।

१६८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening · वदौ श्री भगवानकू भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।

Closing : सवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान ।
भादौ कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयो सुजान ।।

Colophon । इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening श्री आदीश्वर वदौ महान, कैलास सिखर तैं मोक्ष जान ।
चपापुर तै श्री वासपूज, तिन मुकति लही अति हरषि हूज ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १६८३ ।

Colophon · इति सिद्धक्षेत्र पूजा ।

१६८५. शिखर-विलास-पूजा

Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ······ करिकै वहुत उछाह ॥

Closing : · ··· ध्यावै सो सुख पावै रामचद्र निति सिरनावै ॥

Colophon : इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखते सीकर-मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई सवत् १६४२ । का लिखते वेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो।

विशेष—इसके Closing के पहले का वहुत से पत्र गायव है।

१६८६. सील-वत्तीसी

Opening : सीलवतीसीवर्णवउ ·· ···· ·· सदा सुमरो रिसहेश्वर ।१॥

Closing : हरिहर इद नरिंद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी।
सजम धरम सुगण अकू जपहि जसु ते हरि ॥

Colophon : इति सीलवतीसी समाप्तम् ।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशाना प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्यासनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्षे यथागमम् ॥

Closing : नेत्रे द्व द्वरुजाविनाशनकर गात्र पवित्रीकरम्
वात पित्तकफादिदोपरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।
पाप कर्म कुरोगनाशनपर राहुक्षय कुर्वते,
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगल स्नानस्य गंधोदकम् ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ संवत् १६५५ । श्री ६द पुस्तक लिखावा भगवानदीन पडित ।

देखें, जै. सि. भ ग्र., क्र. ६६४ ।

१९८८. शीतलनाथ पूजा

Opening : सीतल जुगपद नमू धर्मदसधा इम भाष्यौ,
उत्तमषिमा सु आदि अत ब्रह्मचर्य सन्ध्यायौ ।
सुनि प्रतिबोध हूयो भवि मोक्ष मारग कौं लागै,
आह्वानन विधि करु चलण जुग करि अनुरागै ॥१॥

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,
जनमैं श्री जिननाथ निवोगे सब हमी ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है ।

१९८९. स्नानपूजा-विधि

Opening : प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अग,
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै

Closing : देवचन्द्र जिन पूजता करता भवपार ।
जिन प्रतिमा जिन सारषी कही सूत्र मझार ॥

Colophon : इति स्नानपूजा विधि सपूर्णम् ।

१९९०. सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्र पद प्राप्य पर प्रमोद धन्यात्मतामात्मनिमन्यमान ।
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोह षोडशकारणानि ॥

Closing : भक्ति प्रदा सुरेन्द्रसस्तुतमिद तीर्थंकराणा पदम्,
लब्धुं वाछति योनि (पि) वा चतुर ससारभीताशयै ॥
श्रीमद्दर्शनशुद्धिभूरिविनय ज्ञान तदा तत्फलम् ।
भक्त्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य वाराधयेत् ॥

Colophon : नही है ।

१९९१. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : इय सोलाकारण ... ... सिद्धवर गणहियइ हरा ।
Colophon : इति सोलाकारण पूजा जयमाल सपूर्णम् ।

१९९२. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : इय वहु भविय ... ... संकम्पवि ... ... ।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९३. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : देखें, क्र० १९९१
Colophon : इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१९९४. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।
Closing : देखें, क्र० १९९१ ।
Colophon : इति षोडसकारण अग पूजा समाप्ता।। ।

१९९५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।

Closing : एई सोले-भावना सहित धरै व्रत जोइ ।
देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ॥

Colophon : इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

१९९६. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ॥

Closing : एते षोडशभावना ― मोक्ष च सौख्यास्पदम् ॥

Colophon : इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा सस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१९९७. सोलहकारणपूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ।

Closing : देखे, क्र० १९९१ ।

Colophon : इति षोडशकारण पूजा ।

१९९८. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ।

Closing : भविभवियणिवारण सोलहकारण पयडमिगुण-गण-सायरः ।
पणविवि तित्थकर ― ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९९ सोलहकारण-पूजा

Openign : सरव परव मैं वड़ा अढाई परव है;
नदीश्वर स्वर जाहि लिए वहु दरव है ।
हमे सकति सो नाहि इहाँ करि थापना,
पूजै जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलंकारण पूजा ।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?
आवे मेरी कूरिया हसुन ।
लै घोज मेरी हम वहहमको न विसरो ये कहमा ।
फर हे सीता वीसेर हम ॥१॥

Closing : साझ सुवेरा वेर न जाने न जाने घूप अव वरखा जी ॥

Colophon : नही है ।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening : सोलंकारन भाय तीर्थंकर जे भये,
हर्ष इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ वहु चावसौ,
हमहूँ षोडस भावन भावैं भाव सौ ॥

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु सं० १९६५ आरा मे वावू हरिदास ने लिखा वावू अनतकुमार के पढने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जवूद्वीप मझार भरत क्षेत्तर कह्यौ,
आरज षड सुजान वद्र देसैं लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ ।
पच कोडि अर अरध मुक्ति पहुचे तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय ।
पढ़ै गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon . इति सोनागिरि पूजा सपूर्णम् ।

२००३. स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमन् श्रीजिनराजजन्मसमये इन्द्रादिहर्षायमान् ।
हस्तारूढविराजमानत्रिपुरीपुष्पाजलि दापयन् ।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिताः देवागनावृत्यवान,
नानागीतविनोदमगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचद्र विनोदी ।
जिनवरपदपूज्य भावनेंद्रसुपूज्य सकलमलविमुक्त ते लभते विमुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नम श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशिने ॥१॥

Closing : उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण · – · · भणिया ॥३॥

Colophon : इति स्वाध्याय पाठः ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप ।
स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Closing : श्यामल यक्ष समर्च अर्च पूजै जो प्राणी ।
तनमन कर आह्लाद प्रगति रुचि हृदि हुरपानि ॥
तेह जग धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावै ।
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावै ॥

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्मलै कलशकांचनपूरितशीतलैः ।
पवनपावनश्रीश्रुतपूजनै. जिनजुहं जिनसूत्रमहं भजे ॥१॥

Closing : इति जिनमतसूत्रे ... ... मोक्षमार्गस्य भानुः ॥

Colophon इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७. तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पच परमगुरु ध्याइ ।
तिनके गुन वरनन करौं, मन वच सीस नवाइ ॥

Closing : अचल मेरु पश्चिम सुपकार कुमुद देश वसै निरधार ।
जिन मंदिर तहाँ पूजो जाइ, रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-सवधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाढो होय कै प्रथम पढै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ॥

Closing : तिहु जग भीतर श्री जिन मंदिर बने अकित्तिम महासुखदाय ।

नर सुर खग कर वदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।।
धन धान्यादिक सपति तिनकै पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।
चक्रिपद सुरपद खग इंद्र होय कै करम नास शिवपुर सुखथाय ।।

Colophon : इति श्री तीनलोक-सवधी पूजा सपूर्णम् ।

२००९. तीसचौवीसी पूजा

२००९

Opening : सर्वौपडाह्वानम् मयुक्तान् ठः ठ स्थापन-निष्टितार्थान् " ।।

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ...... शिवकान्ति ।।

Colophon : इनि चौवीसी पूजा समाप्तम् ।

२०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु ''' सव्वसाहूण ।।

Closing : जम्बूधातकपुष्करेषु ··· नित्यमाप्नुते ।।

Colophon : इति मधुकरविनियोगात् सत्रणविभावशर्म्मणाविहिता सुहितकरो-भव्याना नद्यादचद्र ताराकनि इति पडित श्री भावशर्मकृत मधु-करकारित त्रिशतचतुर्विशतिकार्चन समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवाम्भोधिनिमग्नाना जन्तुनां तारणे क्षम ।
मस्थापयामि दशधा धर्म्मशर्म्मैककारणम् ।।

Closing : श्रीनामीजिनीदो परमानदो परमसुखकरकारम् ।
भवसागरपार दुरघनिवार परम ''' सुखकारम् ।।

Colophon इति ।

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरैं सुख सीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करि दंक नये शिव पंकज मोलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौ प्रभु भक्त समेत हिये हरिषाई ।
हे करुना धन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजैं धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर लहै मुक्त नवनीत ।।

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौवीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु सुरगुरवदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरन कमल को पूजैं जो प्रानी गुनमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार ।
सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौवीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ १५, भृगुवासरे संवत् १९५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौवीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।
वन्दौ मन वच काय सो मेटौ भव भय भीर ।।१।।

Closing : चौवीसो जिनराज की महिमा कही बताई ।
पढ़ै सुनै नरनारी सब सुर शिव पहुँचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौवीसी वास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासोत्तमे मास अग्रहने मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या चन्द्रवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ सर्मने लेखि पट्टनपुरमध्ये आलमगज निवसतु । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५. वर्तमानजिननाम

Opening : नत्वा सिद्धसमूह च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।
भरतैरावतास्थाना निनै: साक विदेहजै ।।

Closing भूतानागतवतर्मानिजिन ... - सद्भव्यसप्रार्थनात् ।।३०।।

Clolophon : इति श्री अतीतवर्त्तमानागतपचभरतैरावतत्रिशच्चतुर्विशतिका लौकिकाव्यवस्थाया वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागात्चिर नन्दतु । इति त्रिशस्चतुर्विशतिका पूजा समाप्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीसतीर्थकर-पूजा

Opening : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर ।
स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धसम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्री मदिरादियुग देवमजित वीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्य सता सौख्य स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रद. ।।

Colophon : इति श्री बीस विद्यमान पूजा सपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस पूजा

Opening देखें, क्र० २०१६ ।

Closing : ए वीस जिणेसर नमिय सुरासुर,
विहरमाण मय सथुणिया ।
जे भणई भणावइ अह मणम धर ,
ते पावइ शिव परमपय ॥

Colophon : इति वीस वहुरमाण की पूजा जयमाल समाप्तम् ।

२०१८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा विधान

Opening : नमो श्री जिनवीसको दि इमान सुखथान ।
दीप अढाई क्षेत्र मे श्री विदेह सुभ थान ॥१॥

Closing : सम्बतसर विक्रम विगत वसु सुमयदृगनि कर ।
ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुदि । पूरन भयो सुछन्द ॥

Colophon : इति श्री सीमन्धरादि वीस तीर्थंकर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।
लिखा गिरिवरचन्द म उगद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार
शुक्रको शुभ वेला पूर्ण करी । सो जयवन्त प्रवर्त्तो ।

२०१९. विद्यमान बीस तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्रीमज्जम्बूधातुकीपुष्करार्द्धद्वीपेषूर्व्वापरे विदेहा स्यु ।
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेंद्रा प्रत्येकं सास्तेषु नित्य यजामि ॥१॥

Closing : एते विंशति तीर्थपा अघहरा, कर्म्मारिविध्वंसका,
संसारार्णव तारणैकचतुरा इंद्रादिदेवीस्थिता ।
अतातितगुणाकरा सुखकरा मोहांधकारापहा,
मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षतु वो भाक्तिकान् ॥१२॥

Colophon : इति विंशतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२० व्रत-विधान

Opening : चौदाशि ग्यारस ११ आठें ८ तीज ३ चौथ ४ एव उपवास ४५
भावनापचीसी व्रत दसें १० पून्यों १५ एव उपवास २५ भावना
बत्तीसी व्रत ।

Closing : आश्विनन्या पूर्वमुपवास एक पूर्णे सप्तविंशति,
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवाश्वन्या क्रियते ॥

Colophon इति व्रत विधानम् ।